जगदम्बा-महालक्ष्मी विशेषांक

सितम्बर ९५

मूल्य - १८/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

दुर्गा रहस्य

सिद्धिदायक गणपति

कुछ ही दिनों में कुबेरवत् बनिये

मानसिक तनावों से मुक्ति-ध्यान

जाग उठा श्मशान

दीपावली पर 108 सम्पूर्ण सिद्धिदायक प्रयोग

अजय कुमार उत्तम

जगदम्बा-महालक्ष्मी विशेषांक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
दीपावली पर 108 सम्पूर्ण सिद्धिदायक प्रयोग

वर्ष 15 अंक 9
सितम्बर 1995 पृष्ठ 80

अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार
जोधपुर

मूल्य
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 180/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034,
फोन : 011-7182248
फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)
फोन : 0291-32209
फेक्स : 0291-32010

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C- 13 , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

विषय सूची

साधना

दीपावली पर १०८ सम्पूर्ण. . . : ०८
दुर्गा रहस्य : २२
सिद्धिदायक गणपति साधना : ३०
सौन्दर्योत्तमा चन्द्र सिद्धि प्रयोग : ३६
प्रेम माधुर्य . . .राधा प्रयोग : ४६
कुछ ही दिनों में कुबेरवत् बनिये: ६२
आकस्मिक धन वर्षा . . . : ७२

स्तम्भ

साधक साक्षी हैं : ३४
ज्योतिष प्रश्नोत्तर : ५५
राशिफल : ५६
पाठकों के पत्र : ७१
राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट : ७६
अपनों से अपनी बात : ८०

संस्मरण

जाग उठा श्मशान : ७६

दीक्षा

नवरात्रि में दी जाने वाली दीक्षा : ४२

सद्गुरुदेव

गुरुदेव . . . कुछ अनछुए प्रसंग : ०३
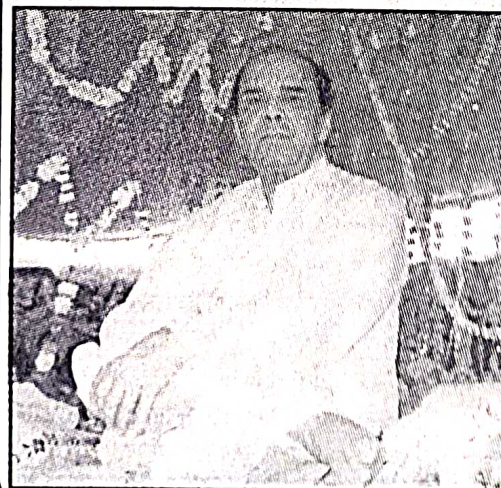
विशेष

साधना-सफलता : १४
ईशितात्वम् : २६
इस मास में विशेष : ५०
संसार के समस्त मानसिक तनावों से मुक्ति – ''ध्यान'' : ५८
नवरात्रि साधना शिविर : ६६

हलचल

लक्ष्मी प्रगट हुई : २७

स्तोत्र

चाक्षुष्मती स्तोत्र : ४१

विवेचना

आत्म चिन्तन और तत्त्व रहस्य : ५१

प्रार्थना

शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै,
कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै;
धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्य समृद्धिदायै।।

हे मातः! आप शरण में आये हुए भक्तों की रक्षा करने वाली हैं, शान्तिस्वरूपा हैं, अतः मैं आपको नमन करता हूं, सभी उदात्त गुणों की आप ही एकमात्र आश्रय हैं, अतः कान्तिमयी हैं, अपने उपासकों के सभी पापों को नाश करने वाली होने से आप सौम्यरूपा हैं, और सभी को धन-धान्य देकर समृद्ध बनाने वाली हैं, इसीलिए आप जगद्धात्री हैं। मैं भावपूर्ण हृदय से आपके चरणों में पुनः-पुनः नमन करता हूं।

संदेश

एक बार गुरु नानक देव जी भ्रमण करते हुए अपने शिष्यों बाला-मरदाना के साथ एक नगर में पहुंचे, तो मरदाना का प्रस्ताव स्वीकार करके नगर से एक कोस बाहर एक बाग में आसन लगा लिया। बाग का स्वामी एक क्षत्रिय था, गुरु जी के आगमन को जानकर वह दर्शन करने आया, प्रणाम करके बैठ गया, कुछ समय तक बैठ कर वह चला गया, इसी प्रकार प्रतिदिन वह दर्शन करने आता, कुछ काल तक बैठता, फिर चला जाता।

नित्य का नियम देखकर उसके **पड़ोसी ने पूछा– ''आप प्रतिदिन कहां जाते हैं?''**

क्षत्रिय ने जवाब दिया –''एक महात्मा जी आये हुए हैं, मैं नित्य उनके दर्शन करने ही जाता हूं।'' पड़ोसी ने भी साथ चलने की इच्छा प्रकट की और अगले दिन पड़ोसी भी क्षत्रिय के साथ गुरु जी के दर्शनों के लिए निकल पड़ा।

रास्ते में एक वेश्या का घर था, पड़ोसी तो वेश्या के घर चला गया और क्षत्रिय गुरु जी के पास चला गया। क्षत्रिय का निश्चय था, कि गुरुजी के दर्शन करने के अलावा कोई जिज्ञासा मन में नहीं रखनी। इस प्रकार रोज का क्रम चल पड़ा। पड़ोसी घर से दर्शन के लिए निकलता और वेश्या के घर रुक जाता, क्षत्रिय सीधा सत्संग में चला जाता। बहुत दिन व्यतीत होने के बाद पड़ोसी के मन में सत्संग का फल जानने की इच्छा जाग्रत हुई। **क्षत्रिय से कहा, कि– ''आज जो पहले लौटे, वह दूसरे की प्रतीक्षा करे, फिर हम कुछ बात करेंगे।''** आज पड़ोसी जब वेश्या के घर पहुंचा, तो वह घर में नहीं थी, निराश होकर वह निश्चित स्थान पर लौट आया, खाली बैठकर वह जमीन खोदने लगा, तो उसे एक घड़ा मिला, जिसमें कुछ सोने की मोहरें थीं, खुशी-खुशी वह क्षत्रिय का इन्तजार करने लगा। इधर जब वह क्षत्रिय दर्शन करके वापिस लौट रहा था, तो उसके पांव में एक कांटा चुभ गया, पूरा पांव खून से लथपथ हो गया, कपड़ा फाड़ कर उसने पांव पर बांध लिया और लंगड़ाता हुआ पड़ोसी के पास पहुंचा, पड़ोसी के पूछने पर उसने कांटा चुभने की बात कही। **पड़ोसी ने ठहाका लगाते हुए व्यंग किया– ''मैंने रोज कुकर्म किये और सोने की मोहरों की प्राप्ति हुई, तुम रोज सत्संग में जाते हो और पैर जख्मी करवा बैठे, इसका क्या कारण है?''**

अगले दिन उत्तर जानने के लिए दोनों गुरुजी के पास गए और पूरी बात बता दी, सुन कर गुरु जी मुस्करा कर मौन हो गए, पुनः **प्रार्थना करने पर गुरु जी ने पड़ोसी से कहा–''पूर्वजन्म में तुमने एक मोहर दान की थी, जिसके फल से तुम्हें मोहरों से भरा घड़ा मिलना था, पर तुम्हारे कुकर्मों के कारण सारी मोहरें कोयला बन गईं; और ये मेरा भक्त, जो मेरे पास आता था, इसके भाग्य में शूली लिखी थी, जो सत्संग के प्रभाव से शूली से शूल हो गया।''**

महापुरुषों के दर्शन या सत्संग से कभी भी हानि नहीं होती, लाभ ही होता है, किन्तु इस गुप्त रहस्य को न समझ पाने के कारण अविश्वास-सा भी होने लगता है, अतः स्वस्थ चित्त से चिन्तन करने का प्रयास करना चाहिए।

नियम

गुरुदेव... कुछ अनछुए प्रसंग

पूज्य गुरुदेव ऐसी दिगन्त व्यापी चेतना हैं, जिनके चिन्तन मात्र से ही हृदय तन्त्र स्वतः झंकृत होने लगता है, साधनाओं के सूक्ष्मतम सूत्र शनैः–शनैः सुलझने लग जाते हैं,आभ्यन्तरिक चक्रों के द्वार स्वतः उद्घटित होकर सहस्त्रार गमन की यात्रा प्रारम्भ हो जाती है।

समुद्र से भी गहरा और हिमालय से भी विराट व्यक्तित्व है **"पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** का। आज इस व्यक्तित्व को गृहस्थ में देखकर यह विश्वास ही नहीं होता, कि उनके अन्दर इतने विशाल ज्ञान का भण्डार छिपा होगा। वे अपना एक-एक क्षण पूरी सार्थकता के साथ जी रहे हैं, यह मेरा सौभाग्य है, कि मैं उनके विशेष क्षणों का साक्षीभूत रहा हूं। उनके साथ रहने पर ही मुझे इस बात का एहसास हुआ, कि उनके पास रहना ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, और उनकी सेवा में जो आनन्द आता है, वह तो अनिवर्चनीय है।

वे भारतीय ऋषियों की उदात्त परम्परा की एक शाश्वत अचिन्त्य कड़ी हैं, जिनके आलोक में वर्तमान एवं भावी पीढ़ी अपना पथ देख सकेगी। इस अगाध विस्तृत समुद्र को थोड़े से शब्दों में बांधना कैसे सम्भव है, और न मुझमें इतनी पात्रता ही है, कि मैं उनके विराट व्यक्तित्व की छाया को भी स्पर्श कर सकूं, किन्तु जो कुछ मैंने देखा, उनकी विराटता को, अद्वितीय जीवन दर्शन को और विशिष्ट एवं दुर्लभ साधना क्रम को, उसे मैं प्रयास पूर्वक साधकों और शिष्यों के सामने स्पष्ट कर देना चाहता हूं, जिससे वे भी अपने जीवन में संघर्षों, बाधाओं की परवाह किये बिना मुस्कराहट के साथ हर स्थिति का सामना करते हुए, अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को सार्थकता के साथ जी सकें और गृहस्थ में रह कर भी अपने साधनात्मक जीवन को व्यवस्थित एवं संयोजित करते हुए अपने गन्तव्य तक पहुंच सकें।

पूज्य गुरुदेव का जीवन तो हर पल संघर्षों, बाधाओं, आलोचनाओं, दुःखों एवं समस्याओं की तीव्र ज्वाला में जल कर ही कुंदन हुआ है। पूज्य गुरुदेव तपोबल के प्रेरणा पुञ्ज हैं। वर्तमान जीवन में वे गृहस्थ में रहते हुए भी विदेह हैं।

अल्पायु में ही वे वेदों, उपनिषदों आदि का भली प्रकार से अध्ययन कर चुके थे, इनका रुझान प्रारम्भ से ही अध्यात्म की ओर प्रवृत्त रहा है, मन में कुछ कर लेने की चाह, अभिलाषा इनके मन में बचपन से घर कर गई। वैवाहिक सूत्र में बंधने पर भी वह बन्धन उनके पैरों को जकड़ न सका और एक दिन अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे अध्यात्म-पथ पर बिना किसी की परवाह किए, सारे बंधनों को तोड़ कर निकल पड़े, और इनके कठोर परिश्रम और दृढ़ निश्चय ने इन्हें सामान्य से एक असामान्य व्यक्तित्व बना दिया। बहुत ही गंभीर चिन्तन व गम्भीर रहस्य छिपा है इस असाधारण व्यक्तित्व के पीछे।

इतने कम पृष्ठों में ऐसे अद्वितीय युग पुरुष के चरित्र का मूल्यांकन करना किसी भी दृष्टि से सम्भव नहीं है, मैंने जो कुछ उनके साथ रहकर देखा है, वे मेरे लिए अद्भुत, अनिवर्चनीय घटनाएं ही कही जा सकती हैं, उन घटनाओं के कुछ अंशों को मैंने इन पन्नों पर उतारने का प्रयास किया है।

वे साधना-तपस्या के प्रति पूर्णतः समर्पित व्यक्तित्व हैं, तो जीवन के प्रति उन्मुक्त, सरल और सहृदय भी। वेद, कर्मकाण्ड के प्रति इनका ज्ञान अगाध और विस्तृत है, तो मंत्र-तंत्र के बारे में पूर्णतः जानकारी भी। ये पहले ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनमें सम्पूर्ण साधनाएं समाहित हैं, ऊंचे-से ऊंचा विद्वान भी उनकी चरण-रज प्राप्त कर उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करता है।

उनसे बात करते हुए मुझे ऐसा लगता है, जैसे मैं प्रचण्ड गर्मी से निकल कर किसी वृक्ष की शीतल छाया में आ गया हूं, उनकी बातों से मन को शांति का अनुभव होता है, जैसे पुरवाई सारे शरीर को पुलकित कर रही हो, वे अपने-आप में पूर्ण व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने घनघोर अंधकार में सूर्य बनकर पूरे विश्व को आलोकित किया है। **ऋषि-मुनियों, वशिष्ठ, विश्वामित्र, शंकाराचार्य, शिष्यानन्द, अवधूतानन्द आदि** बड़े-बड़े व्यक्तियों ने जिस चेतना को समाज में जाग्रत करने का प्रयास किया, वह युग अपने-आप में दिव्य युग था, नाना पद्धतियां एवं विविध साधनाएं ऊंचाई की ओर अग्रसर थीं, परन्तु आगे चलकर यह क्रम टूट गया, ऐसे समय में जब भारतीय उस ज्ञान-विज्ञान से छिटक गये, और आध्यात्मिक ज्ञान के साहित्य को विदेशियों ने जला कर खाक कर दिया, तभी पूज्य गुरुदेव का आगमन उस खोई परम्परा को पुनः जीवित कर देने के लिए हुआ. . . और एक बार फिर इस धरती पर

साधना का, मंत्रों का घोष चारों ओर गुंजरित होने लगा है।

इस खोई हुई निधि को पुनः प्राप्त करने के लिए इन्हें जिन-जिन परिस्थितियों का, अड़चनों का सामना करना पड़ा, और आज भी करना पड़ रहा है, उस स्थिति का शायद ही किसी ने अनुभव किया होगा, पग-पग पर लांछन, तिरस्कार, अपमान और व्यंग्य बाणों के कड़वे घूंट पीने पड़े, समाज के षड्यंत्रों का गरल अपने गले में उतारना पड़ा, इतना होने पर भी वे अडिग खड़े हैं।

उन्हें हिमालय भी नहीं झुका सका और वे अध्यात्म-पथ पर अपना एक-एक पग आगे भरते हुए हिमालय की उपत्यकाओं में खून जमा देने वाली ठण्ड और बरसात की परवाह किये बिना आगे बढ़ते जा रहे थे, उन्हें न तो भूख-प्यास की चिन्ता रहती न ही पैरों के लहूलुहान होने का दुःख।

❋ वह दिन मुझे भली-भांति याद है, जब वे चार-पांच दिन से भूखे थे, जोरों की भूख लग रही थी, अन्न का एक दाना भी नहीं खाया था, छठे दिन जब भूख असहनीय हो गई, तो वे पास के गांव से भिक्षा मांगने गए, और भिक्षा में आटा प्राप्त कर, गंगा के तट पर एक मोटी-सी रोटी बनाकर अंगारों पर सेकने लगे. . . पर भूख से प्राण निकले जा रहे थे, इसलिए अधसिकी रोटी को खाने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाया. . . उन्होंने अपने मन को धिक्कारा. . . अन्तर्मन ने कहा, यह तो इन्द्रियों की गुलामी है. . . मन फिर भी नहीं माना. . . उन्हें क्रोध आ गया और दूसरे क्षण उन्होंने उस रोटी को गंगा में फेंक दिया. . . और बिना कुछ खाये ही अपनी साधना में रत हो गए . . . यह है मन पर नियंत्रण।

❋ देखने में पूज्य गुरुदेव शिव के समान ही औघड़ रूप में दिखाई देते थे, शरीर के सभी वस्त्रों का उन्होंने त्याग कर दिया था, शरीर पर सिर्फ एक मृगचर्म लपेटे रहते और हिमालय के दुर्गम स्थानों पर चढ़ते समय हाथों में एक दण्ड रहता. . . एक बार वे यमुनोत्री के किनारे खड़े थे, तब अपने एक शिष्य से बोले— **''मेरा दण्ड ला''** उसने कहा—**''आपका दण्ड''**. . . इतना सुनते ही उन्होंने एक क्षण उसकी ओर देखा और दूसरे ही क्षण यह कहते हुए, कि— **''यह भी तो आसक्ति है, कि यह मेरा है, ऐसी आसक्ति किस काम की,''** और कहते-कहते वह दण्ड यमुनोत्री की लहरों में फेंक दिया, ऐसा ही निर्मुक्त, निस्पृह है उनका व्यक्तित्व।

❋ कुल्लू-मनाली का वह सौन्दर्यशाली स्थल. . . वर्षा का वह दिन, जब व्यास नदी अपनी उत्ताल तरंगों से मानो आस-पास के क्षेत्र को निगल लेना चाहती हो. . . लोगों का भयवश भागना. . . नदी का विकराल रूप उनकी आंखों में दहशत पैदा किए हुए था. . . ऐसा लग रहा था, मानो एक-दो दिन में यह नदी प्रलय की स्थिति उत्पन्न कर देगी. . . तभी अचानक एक व्यक्ति लहरों की चपेट में आ गया. . . ''बचाओ-बचाओ'' कहकर वह चिल्लाया, पर किस में हिम्मत थी, कि वह नदी में कूद कर अपने हाथों से मृत्यु का वरण करे, उसे बचाना तो दूर, कूदने वाले का खुद भी बचना असम्भव था. . . इतने में तेज रफ्तार से दौड़ते हुए गुरुदेव वहां आये और अपनी जान की परवाह किये बिना ही उन्होंने नदी में छलांग लगा दी. . . आस-पास के लोग सन्न से खड़े इस दृश्य को देखकर चीख पड़े. . . मेरी आंखों में खौफनाक भय समाया हुआ था, ऐसे तेजस्वी व्यक्ति को मृत्यु इस तरह से खींच लेगी, मैंने इसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी . . . पर तभी अचानक गुरुदेव उस व्यक्ति को कंधे पर लादे नदी की विपरीत धारा में किनारे की ओर आ गये. . . मेरे लिए यह बात अप्रत्याशित थी, कि लहरों के उस ताण्डव नृत्य से कोई बच जाय. . . घोर आश्चर्य हुआ यह देखकर।
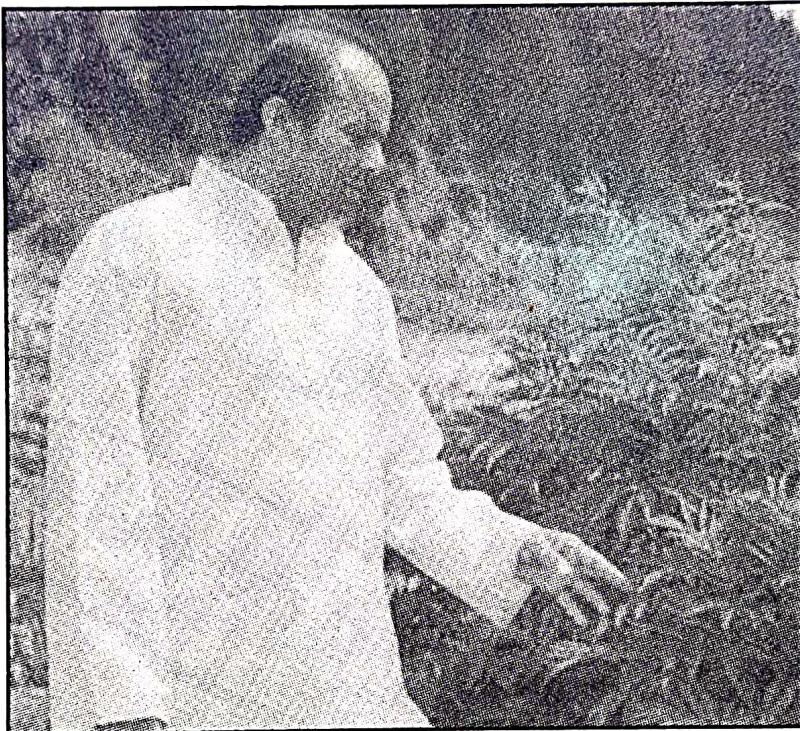
फिर उस व्यक्ति को लिटाते हुए कृत्रिम श्वास देकर गुरुदेव ने उसकी जीवन रक्षा की, सभी के हृदय गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता से भर गये, उसे होश में आया देखकर गुरुदेव वहां से उठे और भीगे वस्त्रों में ही आगे बढ़ गये, न तो किसी को धन्यवाद देने का अवसर दिया और न किसी प्रकार की कोई इच्छा ही रखी।

❋ उस दिन मैं मनाली के जंगलों में उनके साथ विचरण कर रहा था, जंगल भयानक पशुओं से भरा हुआ था और जंगली भैंसे यहां अत्यधिक मात्रा में थे। तीन-साढ़े तीन वर्ष का भैंसा इतना खूंखार होता है, कि शेर को भी अपने सींगों से उछाल देता है।

यौवन के उन्माद में वह साक्षात् यमराज का रूप दिखाई देता है। ऐसे ही हम दोनों बातचीत में मगन पगडण्डी पर चले जा रहे थे, कि अचानक हमारे सामने १५-२० फीट की दूरी पर ही एक अड़ियल भैंसा लाल-लाल आंखों से हमें घूर रहा था। उसकी विशालता और बलिष्ठता देखकर हाथी भी दुम दबाकर भाग खड़ा होता. . . आस-पास कोई पेड़ न होने के कारण जान बचाने का कोई चारा नहीं था, ऐसा लगा मानो मृत्यु हमारे सामने साक्षात् खड़ी हो. . . अचानक वह भैंसा जोरों से हमारी ओर झपटा. . . गुरुदेव ने अचानक ही एक सेकेण्ड के सौवें हिस्से में तुरन्त निर्णय लिया और मुझे धक्का देकर स्वयं भी उसके मार्ग से हट गए. . . भैंसा अपनी रौ में हमारे पास से होता हुआ निकल गया, परन्तु १५-२० फीट के बाद वह वापिस लौटा, तब तक गुरुदेव दृढ़ निश्चय करके उसके सामने खड़े रहे. . . और मुझे स्मरण है, जैसे ही वह गुरुदेव की ओर झपटा, उनका एक जोरदार मुक्का उसकी पीठ पर पड़ा. . . वह मुक्का क्या था, वज्रपात था. . . वह जंगली भैसा उस प्रहार को सहन न कर सका और वहीं ढेर हो गया. . . मैं आश्चर्यचकित हो गुरुदेव की ओर देखने लगा, अगर वे न होते तो मैं मृत्यु को प्राप्त हो गया होता।

❊ साधना का २१ वां दिन था. . . पूज्य गुरुदेव बिना कुछ खाये-पीये लगातार इस अवधि में गंगा के तीव्र प्रवाह के बीच खड़े होकर **''ब्रह्माण्ड आत्मसात् साधना''** सम्पन्न कर रहे थे. . . तट पर सैकड़ों शिष्यों की भीड़ बड़ी ही उत्सुकता से उनके विजय घोष की प्रतीक्षा कर रही थी. . . आस-पास के साधु-संन्यासी भी भय मिश्रित आश्चर्य के साथ इस दृश्य को देख रहे थे. . . मंत्र का जप सम्पन्न हुआ और गुरुदेव ने अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाते हुए अपने गुरुदेव को अर्घ्य प्रदान किया. . . इशारा पाते ही ५-१० शिष्य तुरन्त पानी में उतरे और उस दृढ़ निश्चयी योगी को बाहर निकालने का उपक्रम करने लगे. . . उफ! किस प्रकार से उनके पांव पानी में पड़े रहने के कारण फूल गए थे, सारी नसें उभर आयी थीं. . . जगह-जगह से मछलियों ने मांस उधेड़ लिया था और एक-एक इन्च के गड्ढे साफ नजर आ रहे थे. . . शिष्यों ने तुरन्त ही गर्म तेल लेकर उनकी मालिश कर दी, पर ऐसी स्थिति में भी उस महापुरुष के चेहरे पर शिकन और पीड़ा की एक भी रेखा नहीं आई. . . ऐसे योगीराज को शत्-शत् प्रणाम!

परम पूज्य गुरुदेव जी हमेशा कठिन-से-कठिन साधनाओं का चयन कर विपरीत स्थितियों में भी उनको सम्पन्न करके ही रहते हैं, उस समय उनके ऊपर ऐसा जुनून सवार हो जाता है, कि न तो उन्हें अपनी देह की चिंता रहती है और न ही भूख-प्यास की। आज पूरा विश्व उनका आभारी है, कि उन्होंने लुप्त प्रायः साधनाओं को फिर से पुनर्जीवित किया है।

❊ मुझे अच्छी तरह स्मरण है, कि **''काकभुसुण्डी आश्रम''** से आगे हम सभी रुके हुए थे. . . पांच दिन से लगातार भयंकर तूफान आ रहा था. . . चूंकि उन्हें अपनी साधना सम्पन्न करनी थी, हमारे बहुत मना करने पर भी वे गुफा के बाहर उस तूफान में ही साधना में लिप्त हो गए, न तो उन्होंने अतिरिक्त वस्त्र साथ लिया और न ही कोई खाद्य सामग्री स्वीकार की. . . दस दिन की उस कठोर साधना के चिन्ह उनकी देह पर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे, शीत के कारण उनका शरीर अकड़ गया था और बिना भोजन किये काफी कमजोरी आ गई थी. . . पर फिर भी हम हैरान हैं, जिन दिव्यास्त्रों की साधना में आज तक हमें सफलता नहीं मिली थी, उसे उन्होंने ऐसी विपरीत स्थितियों में भी सफलतता से प्राप्त कर लिया।

❊ तांत्रिक सम्मेलन में महाविद्याओं पर चर्चा चल रही थी. . . **''तारा साधना''** में आने वाली कठिनाइयों पर समस्त योगी अपने विचार दे रहे थे, सभी के विचारानुसार प्रचलित विधि अत्यधिक दुर्गम और दुःसाध्य थी. . . तभी पूज्य गुरुदेव बीच में उठे, सभी योगियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने ''तारा साधना'' को सम्पन्न करने की एक नवीन एवं सरल विधि स्पष्ट की और उसे प्रत्यक्ष प्रमाणित भी किया। सभी तांत्रिकों, योगियों में हर्ष की ध्वनि गूंज उठी, और सभी ने एक स्वर में स्वीकार किया, कि वास्तव में ही ''योगीराज परमहंस डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' इस पृथ्वीं की श्रेष्ठतम विभूति हैं और इस क्षेत्र में उनसे श्रेष्ठ अन्य कोई भी नहीं''. . . वास्तव में ही वे प्राचीन ऋषियों की कड़ी के एक अद्भुत मंत्र दृष्टा एवं मंत्र सृष्टा हैं, जो हजारों-हजारों वर्ष बाद ही इस पृथ्वी पर आते हैं।

बूंद-बूंद कर सागर की तरह बना है यह व्यक्तित्व. . . जहां पर भी वे गए, जिस किसी भी साधु-संन्यासी, योगी-यति को देखा, उन सबसे इन्होंने बिना हिचक ज्ञान प्राप्त किया, इन्होंने कभी उनकी सेवा करने में कमी नहीं छोड़ी और न ही उन्होंने कभी ज्ञान देने में कृपणता दिखाई. . . **अवधूतानन्द, पगला बाबा, भैरवी मां, त्रिजटा अघोरी** न जाने कितने योगियों से इन्होंने विद्या प्राप्त की. . . पर इतना प्रतिभाशाली व्यक्तित्व है इनका, कि कुछ ही वर्षों में उन सबको पीछे छोड़ कर वे आगे बढ़ गए. . . ज्ञान, तंत्र, साधना के क्षेत्र में उनसे भी ऊंचे उठ गए और बाद में उनका मार्गदर्शन भी किया। कठोर तप व निश्चय के बल पर ही वे ब्रह्माण्ड के श्रेष्ठतम व्यक्तित्व कहलाते हैं।

गुरुदेव से सम्बन्धित ये संस्मरण विभिन्न सूत्रों, संन्यासियों, योगियों एवं व्यक्तियों से प्राप्त हुए हैं, जिन्हें लेखबद्ध कर इन पृष्ठों पर दिया गया है।

● वी. पी. श्रीवास्तव ''गुरु सेवक''

दीपावली पर

१०८
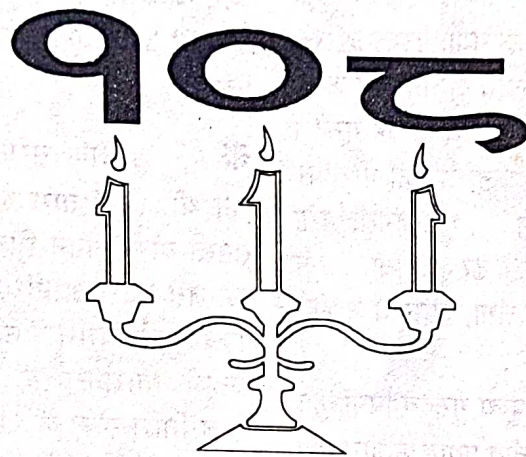
गोपनीय, दुर्लभ, अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं सम्पूर्ण सिद्धि प्रदायक प्रयोग, जिसे प्रत्येक विद्वान, पंडित या गृहस्थ सम्पन्न कर पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है, और फिर ऐसा पर्व तो वर्ष में केवल एक बार ही आता है

होली हो या दीपावली ये मात्र उत्सव के दिवस ही नहीं, अपितु साधनात्मक पर्व हैं, जिनके माध्यम से घर-आंगन में सुख की आभा झिलमिलाने लगती है. . . और तब जीवन का प्रत्येक दिन उत्सवमय हो जाता है, सुखमय हो जाता है।

कई बार ये लघु प्रयोग इतने लाभदायक सिद्ध होते हैं, कि साधक आश्चर्य में रह जाते हैं। जब साधक बड़ी-बड़ी साधनाओं से थक जाता है, तब ये दीप शिखा की तरह साधक के जीवन को आलोकित कर उसे आह्लाद और उमंग से भरपूर कर देते हैं।

साधना तो वह दीपक है, जो साधक के जीवन में व्याप्त अंधकार को दूर कर, उसके जीवन को श्रेष्ठता प्रदान करता है, प्रकाशवान कर देता है उसके हृदय को. . . और जब ऐसा हो जाता है, तो उसके जीवन के समस्त अभाव, दुःख, दैन्य और मलिनता समाप्त हो जाती है. . . और वह सभी दृष्टियों से पूर्ण हो जाता है।

दीपावली उत्सव प्रकाश का पर्व है, और यह प्रकाश स्थायी रह सके, इसके लिए साधना के दीपकों को जलाना भी पड़ता है, जिनके प्रकाश में पूरे वर्ष भर लक्ष्मी आह्लाद पूर्वक रह सके और साथ ही जीवन में सुख-सम्पन्नता सभी कुछ स्थायी रूप से प्राप्त हो सके।

इसलिए लम्बे-चौड़े विधान की अपेक्षा इस बार पुनः साधकों की रुचि, क्षमता और उनकी आवश्यकताओं के आधार पर इन छोटे-छोटे अनुकूलता प्रदान करने वाले, अचूक प्रभाव देने वाले प्रयोगों को दिया जा रहा है, जो कि लम्बी-लम्बी जटिल साधनाओं की अपेक्षा ज्यादा सरल एवं लघु हैं।

१. अरुज

यह एक विशेष प्रकार की गुटिका है, जो रोग को जड़ से समाप्त कर देती है।

१. यदि बाल झड़ रहे हों या असमय ही सफेद हो गये हों।
२. यदि चेहरे पर मुंहासे, दाने या गहरे धब्बे पड़ गये हों।
३. यदि पेट खराब हो गया हो या पेट में दर्द हो।
४. यदि किसी का बुखार नहीं उतर रहा हो।
५. यदि शरीर कमजोर पड़ गया हो।

– तो इसके लिए साधक को चाहिए कि वह सूर्योदय के समय स्नानादि से निवृत्त हो कर, इस गुटिका को किसी ताम्र या रजत पात्र में चावल की ढेरी पर स्थापित कर ले और **१०८ बार निम्न मंत्र का उच्चारण** करे। मंत्र-जप के बाद सूर्य को नमस्कार करे तथा गुटिका को नदी में उसी दिन प्रवाहित कर दे।

मंत्र : ॐ घृणीं सूर्याय नमः

२. अंकटी

१. इस गुटिका को यदि पूजन कर अमावस्या के दिन अपने पूजागृह में स्थापित किया जाय, तो कैसा भी द्वन्द्व हो, चाहे शारीरिक हो या मानसिक, समाप्त होता ही है।
२. पति-पत्नी में कलह, लड़ाई-झगड़ा होने से उत्पन्न तनाव को खत्म करने के लिए इस गुटिका का पूजन लाभदायक है।
३. यदि किसी से झगड़ा होने की आशंका हो, तो ऐसी स्थिति में इस गुटिका को गले में या बाजू में धारण कर लेने से सामने वाला प्रतिरोधी परास्त हो जाता है।
४. यदि किसी वजह से मानसिक तनाव हो रहा हो, तो ऐसी स्थिति में इस गुटिका को हाथ में लेकर **गुरु नाम का २१ बार स्मरण** करने से वह तनाव दूर हो जाता है।
५. यदि अचानक कोई समस्या आ घेरे, तो इस गुटिका के सामने **५१ बार निम्न मंत्र का जप** करने से तनाव से मुक्ति मिलती है।

मंत्र : ॐ ह्रीं ऐं ह्रौं फट्

३. पन्नग

यह एक प्रकार का उपरत्न है, जिसका प्राप्त होना ही दुर्लभ है। इसे चांदी की अंगूठी में जड़वाकर बायें हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करें।

१. इससे व्यक्ति के ग्रह-दोष समाप्त होने लगते हैं।
२. शत्रु हावी नहीं होते।
३. जीवन की प्रशासकीय बाधाओं का निवारण करने हेतु यह विशेष लाभदायक सिद्ध होती है।
४. इसे धारण कर वह व्यक्ति पूरे वर्षभर सुरक्षित रहता है, उसे किसी प्रकार का संकट व्याप्त नहीं होता, किन्तु अंगूठी को धारण करने से पूर्व दीपावली की रात्रि को पूजागृह में इसे स्थापित कर, धूप-दीप दिखाकर निम्न मंत्र का **१०८ बार उच्चारण** कर लेना आवश्यक है–

मंत्र : ॐ क्लीं क्लीं ऐं ऐं फट्

५. गृहणियों के जीवन में आने वाली छोटी-छोटी बाधाओं का स्वतः समाधान प्राप्त होने लगता है।
६. भूमि विवाद में फंसे व्यक्ति को, इसको धारण करने के पश्चात् विवाद समाप्ति के अवसर प्राप्त होते हैं।

४. आयुर्दा

१. इसे धारण करने के पश्चात् व्यक्तित्व में स्वतः ही निखार आने लगता है, जिसे देखकर कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष।
२. प्रेम सम्बन्ध में प्रगाढ़ता आती है।
३. इसके धारण करने के पश्चात् आप अपना कार्य सामने वाले व्यक्ति को सम्मोहित कर सम्पन्न करवा सकते हैं।
४. पति या पत्नी को अपने अनुकूल बनाने के लिए लाभदायक है।
५. प्रेमी या प्रेमिका को वश में करने के लिए उत्तम उपाय है।

इस यंत्र को धारण करने से पूर्व **११ दिन तक २१ बार निम्न मंत्र का उच्चारण** करना आवश्यक है, तभी यह लाभदायक सिद्ध होगा।

मंत्र : ॐ ऐं क्लीं श्रीं फट्

५. कचट

१. इस वनफल को तीन दिन तक हाथ पर बांध देने से छोटे बच्चों की बीमारियां दूर हो जाती हैं।
२. इसे घर की चौखट पर गाड़ देने से कैसा भी तांत्रिक प्रयोग किया गया हो, उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है।
३. इससे मूठ का प्रभाव नहीं पड़ता।
४. व्यक्ति के मन से कैसा भी भय हो, आशंका हो, समाप्त हो जाती है।
५. पूरे परिवार की सुरक्षा वर्षभर बनी रहती है।

६. नखक्षत

१. नजर-दोष निवारण हेतु।
२. सर्वांग पीड़ा निवारक।
३. भूत-प्रेत आदि को दूर करने के लिए।
४. उच्चाटन शांति के लिए।
५. स्वप्न-दोष समाप्ति हेतु।

– यदि नखक्षत को (बाजू में) एक महीने तक धारण कर लिया जाय, तो उपरोक्त सभी बाधाओं से छुटकारा

मिल जाता है, पर इस मंत्र की ५ **माला ''लाल हकीक माला'' से २१ दिन तक जप** करना जरूरी है।

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं ॐ

७. अहेर

दीपावली की रात्रि को इस फल पर निम्न मंत्र का **१५१ बार उच्चारण** करने से यह फल मंत्रसिद्ध हो जाता है, और इसका प्रभाव अचूक होता ही है।

मंत्र : ॐ श्रीं सर्वसिद्ध्यै श्रीं ॐ

१. यदि किसी साधना में सफलता नहीं मिल रही हो, तो इस फल के स्थापन से उसमें सफलता मिलती है।
२. इसे तिजोरी में रखने पर वह कभी खाली नहीं रहती।
३. इसके प्रभाव से भविष्य में घटने वाली दुर्घटनाओं का पूर्वानुमान होने लगता है।
४. मन में द्वंद्व चल रहा हो या किसी बात का निर्णय न ले पा रहे हों, तो इस फल के आगे मन-ही-मन में उस प्रश्न को कह देने से रात्रि में निश्चित ही स्वप्न में उसका उत्तर प्राप्त हो जाता है।
५. किसी अप्सरा की साधना करनी हो, इसकी स्थापना से सफलता मिलती है।

८. दुधेली

१. इस गुटिका को काले धागे में बांधकर कमर में बांध लेने से शरीर के जिस अंग में पीड़ा हो रही हो, आहिस्ता-आहिस्ता उसमें राहत मिलने लगती है।
२. इसे धारण करना गर्भ निरोध का भी सुरक्षित उपाय है।
३. इससे अति रजोस्राव में लाभ मिलता है।
४. यदि बार-बार गर्भपात की स्थिति बन रही हो, तो यह गुटिका निम्न मंत्र से सिद्ध कर धारण कर लेने से यह विशेष लाभप्रद होती है।

मंत्र : ॐ क्लीं श्रीं क्लीं कृष्णाय फट्

इस गुटिका को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उसे ढक लें, और फिर उपरोक्त मंत्र का **११ बार कर माला से जप** करें, ऐसा १६ दिन तक करें, फिर उसे धारण करें।

९. ईर्षणा

यह गुटिका जम्मू-कश्मीर में भी पाई जाती है, जो कि अचूक फल देने में समर्थ है।

१. यह कण्ठ गांठ नाशक है — कैसी भी गांठ हो, समाप्त हो जाती है।
२. दांतों की सफाई न होने पर, कैलशियम की कमी आदि अन्य कारणों से, कभी दांतों में भयंकर पीड़ा होने लगती है, और इस कारण व्यक्ति न तो चैन से सो पाता है और न ही कुछ खाने-पीने के योग्य रहता है, तब इस गुटिका के सामने ११ दिन तक निम्न मंत्र की **''अंकुरा माला''** से **एक माला जप** करें—

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं फट्

३. इस गुटिका के सामने शनिवार की रात में ११ से १२ बजे के बीच निम्न मंत्र का जप करने से पेट के दर्द से रहित मिलती है; जिनके बारे में संशय हो कि यह दर्द किसी अशरीरी आत्मा के कारण है। निम्न मंत्र को **''काली हकीक माला''** से **१० माला जप** करें।

मंत्र : ॐ ऐं औं ईं फट्

४. यदि कोई बच्चा लगातार रोता जा रहा हो और कारण समझ में नहीं आ रहा हो, तो इस गुटिका के साथ पांच दाने काली मिर्च और थोड़े से **काली सरसों के दाने** लेकर बच्चे के सिर पर **सात बार घुमायें** और कोयले या कण्डे की आग में डाल दें। बच्चे को राहत मिलेगी।
५. यदि हाथ-पैरों में दर्द हो रहा हो तो, इस जड़ी को बांह पर बांध लेने से उसमें राहत मिलती है।

१०. राजलक्ष

१. मंत्रसिद्ध इस यंत्र के स्थापन से व्यक्ति के जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं रहता।
२. लक्ष्मी की कोई भी साधना सम्पन्न करनी हो, इस यंत्र के स्थापन से वह साधना सिद्ध होती ही है।
३. दरिद्रता का विनाश हो जाता है।
४. व्यापार में वृद्धि होने लगती है।
५. कर्ज़ा उतर जाता है और व्यक्ति अपना खोया हुआ सम्मान प्राप्त कर लेता है।
६. श्री, सम्पन्नता और वैभव की प्राप्ति होती है।
७. इस यंत्र पर दीपावली की रात्रि को पूजन सम्पन्न करने से बेरोजगारी दूर हो जाती है।

११. शौकव

१. इस चक्र का दीपावली के दिन पूजन कर घर में स्थापन करने पर खोया हुआ व्यक्ति घर लौट आता है।
२. घर में धन-धान्य की कमी नहीं रहती।
३. कुमार्ग पर चल रहे बालक या बालिका को यह सुबुद्धि प्रदान

करता है।

४. उन्नति के मार्ग में आ रही अड़चनों-बाधाओं से छुटकारा मिल जाता है।

५. किसी के भी विचारों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

१२. वाकुली

१. इस जड़ का स्थापन घर में धन रखने के स्थान पर ही करें, दुकान या फैक्टरी में नहीं।

२. निम्न मंत्र बोलते हुए **सात बार** इस जड़ से पानी लेकर रोगी व्यक्ति पर छिड़क देने से, उसके मन से भय, भ्रम, चिंता, उद्वेग या दुष्कल्पना समाप्त हो जाती है।

मंत्र : ॐ ऐं क्लीं सर्वभय व्याधिहरायै नमः

३. प्रेम बाधा के निवारण हेतु।

४. इस जड़ी को हाथ में बांध कर बाहर निकलने पर किसी प्रकार की भूत-प्रेत बाधा हमला नहीं करती।

५. इस जड़ी के ऊपर दीपावली की रात्रि को प्रयोग करने पर **"भूत साधना"** सिद्ध होती है।

१३. अम्भा यंत्र

१. यदि धन का कोई स्थाई स्रोत न हो।

२. स्थायी स्रोत होने पर भी यदि धन रुकता न हो।

३. दुकान या फैक्टरी बंद पड़ी हो।

— तो निम्न मंत्र का **पांच बार** दीपावली की रात्रि को उच्चारण कर, उसका कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप आदि से पूजन कर **५ बार सरसों के दाने** चढ़ाने से अनावश्यक विघ्न-बाधाओं से मुक्ति मिल जाती है।

मंत्र : ॐ विघ्नपरास्यै अम्भायै स्वाहा

४. यह यंत्र जमा पूंजी में, निरन्तर वृद्धि करने में सहायक है।

१४. मोहिनी यंत्र

१. **"स्फटिक माला"** से **"मोहिनी यंत्र"** पर **एक माला मंत्र-जप** करने से पति-पत्नी में पूर्ण तादात्म्य स्थापित हो जाता है।

२. सुयोग्य और मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए।

३. किसी को भी अपनी ओर आकर्षित करने के लिए।

४. किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने के लिए।

५. किसी भी कारण से यदि व्यक्ति प्रवासी हो गया हो या दूर-दराज रहता हो, घर-परिवार के प्रति उदासीनता हो, तो इस यंत्र पर संकल्प लेकर **५ माला मंत्र-जप** करने से उसकी मानसिकता, उसके विचारों में परिवर्तन होने लगता है।

६. किसी को भी वशीभूत कर उसके धन से लाभ उठाना हो, तो यह प्रयोग लाभदायक है।

७. इस प्रयोग द्वारा व्यक्ति का गर्व समाप्त हो जाता है, और वह साधक की ओर खिंचा चला आता है।

मंत्र : ॐ ह्रीं ऐं फट्

१५. नलिनीरुहा

१. इस नाल को दीपावली के दिन घर में स्थापित करने से नवनिधि की प्राप्ति होती है।

२. इसके माध्यम से अतुलनीय ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

३. धनागम के अनेकों स्रोत उत्पन्न हो जाते हैं।

४. इस पर **५ कमल के फूल** या **कमल के बीज** चढ़ाकर **"कमलगट्टे की माला"** से निम्न मंत्र का **एक माला मंत्र-जप** किया जाय, तो 'श्री' का स्थायी वास होता है।

मंत्र : ॐ श्रीं स्थिरायै फट्

५. इस प्रयोग को सम्पन्न करने से आकस्मिक धन की प्राप्ति होने लगती है।

१६. ओगल फल

१. यदि प्रयत्न करने पर भी लक्ष्मी साधनाओं में सफलता न मिल रही हो, तो इस फल के माध्यम से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

२. यदि किसी ने ऋण लिया हो और वह लौटा न रहा हो, तो इस फल पर उस व्यक्ति का नाम लेकर निम्न मंत्र का **२१ बार** ७ दिन तक उच्चारण करने से वह ७ दिन के अन्दर-अन्दर उस धन को लौटा देता है।

मंत्र : ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै आगच्छ श्रीं नमः

३. इस फल को, प्रयोग सम्पन्न कर दुकान में या घर में किसी गोपनीय स्थान पर गाड़ देने से निर्धनता, दरिद्रता घर से चली जाती है।

४. शेयर खरीदने व बेचने के लिए यह विशेष उपयोगी सिद्ध होता है।

५. इसके माध्यम से **"ऋण मोचन"** एवं **"भूगर्भ साधना"** में सफलता मिलती है।

१७. हीरवा रत्न

१. इस रत्न को त्रिधातु की अंगूठी में, जड़वा कर दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में धारण करने पर निर्माण कार्यों के साथ-साथ निम्नलिखित कार्यों के लिए भी यह प्रभावकारी सिद्ध होता है—
२. मुकदमे में जीतने के लिए।
३. किसी भी प्रकार की राज्य बाधा को दूर करने के लिए।
४. भूमि के क्रय-विक्रय में लाभ हेतु।
५. समस्त प्रकार के सुख-भोगों की प्राप्ति के लिए।

१८. संकुरा गुटिका

इस गुटिका के सम्मुख **''सर्वांगीणी माला''** द्वारा २१ माला मंत्र-जप करने से ये लाभ मिलते हैं —

१. धन को सुरक्षित रखने के लिए अर्थात् चोरी आदि से बचाने हेतु इसका स्थापन घर में दीपावली की रात्रि को करना चाहिए।
२. वाहन, भवन निर्माण हेतु।
३. पुत्र-सुख प्राप्ति हेतु।
४. पुत्र या पुत्री की उन्नति में कोई बाधा या अड़चन पैदा न हो, इसके लिए इस गुटिका को उसके गले में पहिना दें।
५. सौभाग्य प्राप्ति हेतु।
६. घर की सुख-शांति हेतु।

मंत्र : ॐ ऐं ॐ

१९. फरीला

१. इस पर निम्न मंत्र का **''सौन्दर्य माला''** से **१ माला मंत्र-जप** करने पर **''सौन्दर्य लक्ष्मी साधना''** स्वतः साधक को सिद्ध हो जाती है।

मंत्र : ॐ सौं सौन्दर्य सिद्धये नमः

२. चेहरे पर चमक न हो, दाग-धब्बों से चेहरा खराब हो गया हो, तो फरीला के सामने **५ माला** उपरोक्त मंत्र का जप लाभदायक सिद्ध होता है।
३. शीघ्र विवाह के लिए भी फरीला फलदायक है।
४. यदि रंग काला हो, और किसी भी क्रीम, पाउडर आदि प्रसाधनों से रंग साफ न हो रहा हो, तो इस फरीला के माध्यम से उसका सौन्दर्य खिलने लग जाता है।
५. स्त्री और पुरुष दोनों ही इसके माध्यम से सौन्दर्यवान वन सकते हैं।
६. विश्वासपूर्वक दीपावली को विधि-विधान से पूजन सम्पन्न करने पर साधक की सौन्दर्य से सम्बन्धित मनोकामना पूर्ण होती है, क्योंकि सौन्दर्य प्राप्ति का यह तीव्र फलदायक प्रयोग है।

२०. हड़ेरा

१. अति दुर्लभ हड़ेरा के घर में स्थापन से व्यक्ति को स्वप्न में लॉटरी, आकस्मिक धन प्राप्ति एवं इस प्रकार के अनेकों रहस्य, जिनके माध्यम से धन की प्राप्ति हो, स्पष्ट होने लगते हैं।
२. पितृ दोष, पूर्वजन्मकृत दोषों के निवारणार्थ इससे श्रेष्ठ कोई सामग्री नहीं है।
३. निरन्तर कोई रोगी बना रहता हो, तो **७ वार हड़ेरा उसके सिर पर धुमा कर,** रोग से मुक्ति की प्रार्थना कर दीपावली की रात्रि को ही उस सामग्री को **दक्षिण दिशा** में कहीं दूर फेंक देने से वह ठीक हो जाता है।
४. पशु-धन प्राप्ति के लिए उपयोगी।
५. पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करनी हो, तो संकल्प लेकर तीन माला **''यक्षिणी माला''** द्वारा हड़ेरा के सामने मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र : ॐ हीं हीं प्रज्ञानत्वै फट्

२१. शौविधा चक्र

१. व्यक्ति में अशक्तता, वृद्धता समाप्ति के लए यह चक्र विशेष उपयोगी है।
२. घर में इस चक्र के स्थापन से इसकी रश्मियां घर के पूरे वातावरण को उल्लासमय, आनन्दमय बनाये रखती हैं।
३. दीपावली के दिन चक्र-पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् फिर घर में श्री, वैभव, सम्पन्नता, सुख-सौभाग्य उस साधक को प्राप्त होता ही है।

साधना-सामग्री न्यौछावर :

अरुज - ६०/-, अंकटी - ७५/-, पन्नग - १२०/-, आयुर्दा - ८०/-, कचट - १००/-, नखक्षत - ४०/-, लाल हकीक माला - १५०/-, अहेर - ११०/-, दुधेली - ६०/-, ईर्षणा - ७५/-, अंकुरा माला - १२५/-, काली हकीक माला - १५०/-, राजलक्ष - ८०/-, शौकव - ६५/-, वाकुली - १२०/-, अम्भा यंत्र - १५०/-, मोहिनी यंत्र - १७५/-, स्फटिक माला-३००/-, नलिनीरुहा - ६०/-, कमलगट्टे की माला-१५०/-, ओगल फल - ७५/-, हीरवा रत्न - १२०/-, संकरा गुटिका - ७५/-, सर्वांगीणी माला - १५०/-, फरीला - ८०/-, सौन्दर्य माला-१५०/-, हड़ेरा - ६०/-, शौविधा चक्र - १२०/-

साधना-सफलता

अब कोई स्त्री बांझ नहीं रह सकती

जिस तरह रेगिस्तान में एक बूंद की तलाश व्यक्ति को रहती है, उसी तरह किसी स्त्री को भी अपने सूने जीवन को खुशियों से भरने के लिए एक नन्हें शिशु की ललक मन में रहती ही है। आज यदि विवाह के दो-तीन साल बाद भी कोई स्त्री मां नहीं बनती, तो उसे हीन दृष्टि से देखा जाने लगता है, और यदि वह मां बनने योग्य न हो, तो समाज उसे घिनौनी दृष्टि से देख, घुटघुट कर जीने पर मजबूर कर देता है। संतान का न होना अर्थात् बांझपन सामाजिक दृष्टि से स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप माना गया है।

स्त्रियों में बांझपन गर्भाशय में विकार उत्पन्न होने के कारण ही होता है, क्योंकि स्त्री के जननांगों की विकृति ही उसके गर्भ में अवरोध उत्पन्न कर, उसे कमजोर बनाकर बांझ बना देती है। गर्भाशय दोष या अन्य रोगों के कारण शारीरिक बल क्षीण हो जाना आदि ऐसे ही कारण हैं, जो किसी स्त्री को गर्भ धारण नहीं करने देते, इसके लिए निराश होने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है हमारे ऋषियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान से लाभ उठाने की।

ऐसी स्त्रियों को चाहिए, कि वे प्रातःकाल **ब्रह्म मुहूर्त** में उठकर, स्नान आदि दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर, **पूर्व दिशा** की ओर मुंह करके निम्न मंत्र का खड़े होकर ही **''जयन्ती माला''** से **११ माला जप कर ११ बार अक्षत सामने रखे जल-पात्र में डालें।**

मंत्र

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय पुत्रान् देहि नमः।

फिर इसी मंत्र से **सूर्य को अर्घ्य दें तथा ७ बार प्रदक्षिणा करें, ऐसा सात रविवार तक करें।** उस दिन केश धुले होने चाहिए और मन में अपने इष्ट या गुरु का चिन्तन-मनन कर उनसे प्रार्थना करते हुए ही इस प्रयोग को सम्पन्न करें।

बांझ शब्द से कलंकित स्त्रियों के लिए यह प्रयोग शीघ्र सफलतादायक सिद्ध होगा, और वे शीघ्र ही गर्भ धारण कर इस अद्‌भुत प्रयोग की सफलता अनुभव कर सकेंगी।

आपका चश्मा हमेशा के लिए उतर सकता है

''वैलमिक व्यायाम'' के द्वारा आप-अपनी आंखों का चश्मा हमेशा के लिए उतार सकते हैं, और सुन्दर एवं स्वस्थ दिख सकते हैं।

आमतौर पर चश्मा पहिनने वाले मनुष्यों के मन में यह हीन भावना घर कर जाती है, कि बिना चश्मा पहिने हम कोई कार्य नहीं कर सकते और एक प्रकार से वे उसके गुलाम हो जाते हैं।

पश्चिमी वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों द्वारा यह मानसिक दबाव मनुष्य पर डाल दिया गया है, कि चश्मे से आंखों को ठीक किया जा सकता है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है, आंखें अपना नैसर्गिक गुण भी खो बैठती हैं, मांस-पेशियां अपना काम ठीक प्रकार से नहीं कर पातीं और आंखें ज्यादा कमजोर और असुन्दर प्रतीत होने लगती हैं, फलस्वरूप नेत्र रोग उत्पन्न होने की भी सम्भावना रहती है।

१. ऐसे व्यक्तियों को चाहिए, कि वे अपनी पाचन शक्ति ठीक रखें, यथासम्भव कम भोजन करें, सलाद, उबली हुई सब्जियों को ज्यादा लें, वसायुक्त भोजन न करें, इससे आंखों के आस-पास के संस्थान सक्रिय होने लगते हैं।

२. तीन-चार किलोमीटर दूर तक नित्य पैदल चलने की आदत डालें।

३. इसके बाद इस ''वैलमिक व्यायाम'' को इस प्रकार करें—

सबसे पहले अपने दोनों पैरों में एक फुट का फासला रखें, बाजू लटका दें। पहले दायीं ओर घूमते हुए झुकें, फिर बायीं ओर, और यह क्रम लगभग १०-२० बार करें, और पांच मिनट के लिए दोनों आंखों को गोल-गोल घुमाना भी चाहिए, इसका सीधा प्रभाव आंखों व दृष्टि पर पड़ता है, तब धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आ जाती है, कि चश्मा लगाने की जरूरत नहीं रह जाती।

मानसिक तनावों से मुक्ति पाइये

आये दिन मानसिक तनाव से पीड़ित व्यक्ति आत्महत्या का शिकार हो जाते हैं, शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो इस रोग से ग्रसित न हो, यह रोग तो मानव जाति के उद्भव के समय से आज तक अन्याय रूप में उसके साथ चला आ रहा है, जो उसे मृत्यु का ग्रास बना देता है।

मनुष्य के जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जो उसके मन को प्रभावित करते हैं, जिसमें कुछ सुखद क्षणों की अपेक्षा दुखद घटनाएं उसके मन पर बुरा असर डाल कर निराशा की खाई में उसे इस तरह डुबो देती हैं, कि वह मौत के मुंह में जाने को विवश हो जाता है।
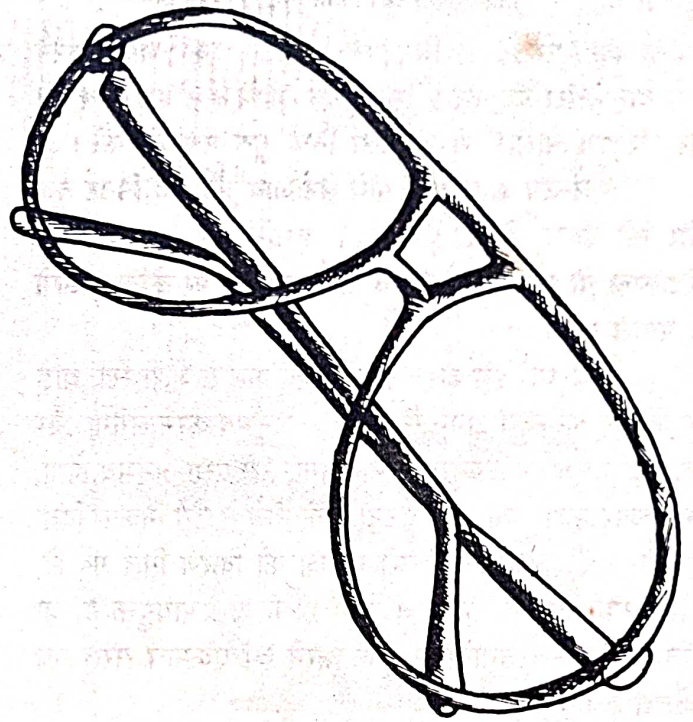
यदि आप प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित, आनन्दित बने रहना चाहते हैं, और चाहते हैं कि आपका मनोबल बना रहे, आप किसी भी प्रकार के तनाव से मुक्त रहें, तो आपके लिए सर्वथा नवीन उपाय, जो आपके जीवन को परिवर्तित कर देने के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं, जो ईश्वर की विशेष अनुकम्पा ही कही जा
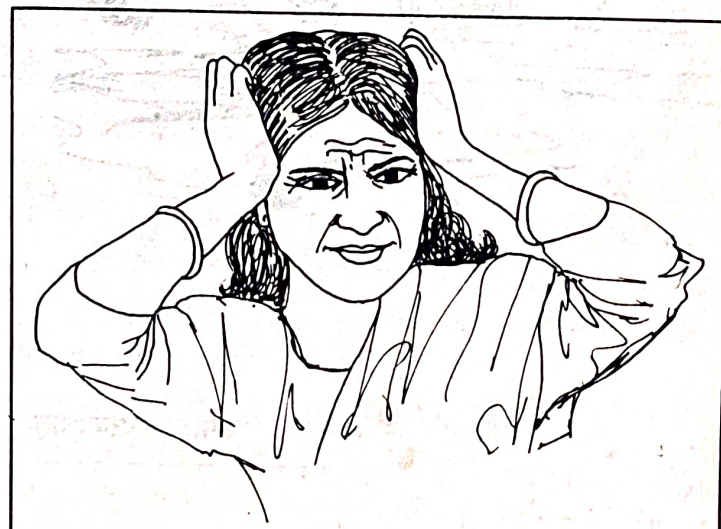
सकती है आपके लिए।

मानसिक रूप से पीड़ित व्यक्ति को चाहिए, कि वह **ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नान आदि कर ''पद्मासन'' में बैठ जाय और ''शक्ति चक्र'' पर १०-१५ मिनट तक ''त्राटक'' करे, त्राटक करने के पश्चात् आंख बंद कर ५ मिनट तक अपने इष्ट का ध्यान करे और ''रुद्राक्ष माला'' से ४ माला नित्य गुरु मंत्र-जप करे।**

मंत्र-जप के पश्चात् सीधे लेट जाय और १० मिनट तक शरीर को ढीला छोड़ते हुए अपने अशांत मन को मानसिक परिकल्पना के आधार पर ही किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित करने का प्रयास करे।

धीरे-धीरे इस अभ्यास को नित्य क्रम से जारी रखे, थोड़े दिन के बाद वह स्वयं अपने में परिवर्तन अनुभव करने लगेगा और अत्यधिक हल्कापन महसूस करने लगेगा, उसे ऐसा अनुभव होगा, मानो हजार-हजार मन भारी चट्टानों के नीचे से उसे निकाल दिया गया हो, गहन अंधकार में उसे प्रकाश की किरण मिल गई हो, क्योंकि यह मंत्र-जप अपने-आप में ही दिव्य प्रभावयुक्त है, जो व्यक्ति को समस्त तनावों से मुक्त करने का एकमात्र सरल एवं सर्वोत्तम उपाय है।

इस बार निश्चय ही पुत्र प्राप्ति हो सकती है
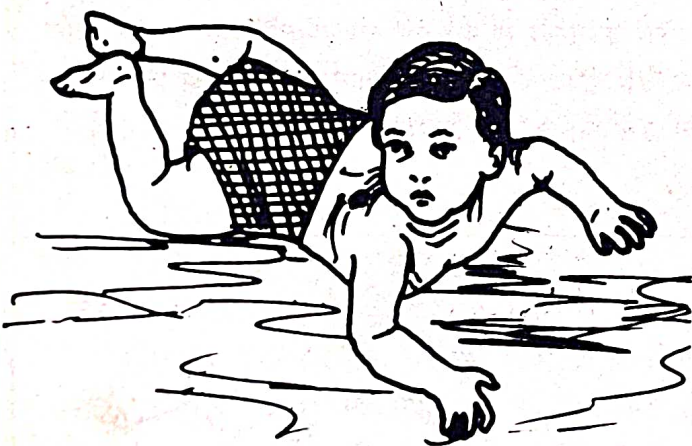
''चरक संहिता'' के अनुसार **''कर्मात्मकायस्ववशात् प्रसूते''** अर्थात् पूर्वजन्मों के कर्मानुसार ही संतान की प्राप्ति होती है, चाहे वह पुत्र हो या पुत्री।

आज भी ऐसे ६० प्रतिशत लोग हैं, जो पुत्र के जन्म को वरदान मानकर खुशियां मनाते हैं, जश्न मनाते हैं, और पुत्री के जन्म को अभिशाप मानकर शोक मनाने लगते हैं, और इसका जिम्मेदार ठहराते हैं उस स्त्री को, जो उसकी जन्मदायिनी होती है।

किन्तु इसमें उसका क्या दोष? परन्तु फिर भी उसे ही दोषी ठहराया जाता है हर बार; वह अकेली इन सामाजिक प्रताड़नाओं को झेलती हुई, उसे भाग्य-दोष मानकर अनेकों कष्टों एवं अन्याय को चुपचाप सहती रहती है और उफ तक नहीं करती; ऐसा व्यवहार बहुत ही अमानवीय और अन्यायपूर्ण होता है।

जिस स्त्री के केवल लड़कियां-ही-लड़कियां पैदा हो रही हों या जिसे पुत्र की ही कामना हो, ऐसी स्त्रियों के लिए यह उपाय सर्वश्रेष्ठ है— इस तरह की स्त्रियों को चाहिए, कि पुत्र-प्राप्ति के लिए **पीपल के किसी वृक्ष पर तीन सप्ताह तक लोटे में जल लेकर, उसमें कुंकुम, अक्षत और पुष्प डालकर चढ़ायें जल चढ़ाने के बाद उसकी ७ बार प्रतिदिन परिक्रमा कर तथा एक मिनट वहां खड़े होकर प्रार्थना करें, हे ब्रह्मदेव! मुझे गृहस्थ जीवन की समृद्धि के लिए ''पुत्र-रत्न'' की प्राप्ति हो, इसके बाद घर वापिस आ जायें। उसकी किसी डाल में मौली से ''पुत्रदा गुटिका'' पहले दिन ही बांध दें, इस मौली को २१ दिन के बाद खोलें।** गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

सौन्दर्य प्राप्ति के आधुनिकतम प्रयोग

प्राचीन ग्रन्थों, मूर्तियों आदि में सौन्दर्य का चित्रण विस्तृत रूप से देखने को मिलता है। संसार में कोई भी स्त्री-पुरुष ऐसा नहीं, जो अपने सौन्दर्य के प्रति सजग न हो। भले ही रहने के लिए जगह न हो, खाने के लिए रोटी न हो, परन्तु सौन्दर्य में कमी नहीं होनी चाहिए। निम्न से निम्न वर्ग भी अपने-आप को सौन्दर्यमय बनाये रखने के लिए क्या कुछ नहीं करता, भले ही इसके

लिए उसे कुछ भी करना पड़े।

सौन्दर्य तो एक जादू है, वह आकर्षण है, जिसे देखकर एक सनसनाहट-सी पूरे शरीर में दौड़ जाती है, बिना सौन्दर्य के तो जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

अब कोई भी अनुपम सौन्दर्य का स्वामी बन सकता है, अपने अन्दर सम्मोहन, आकर्षण पैदा कर सकता है, एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है, जिसे देखकर सामने वाले का दिल धड़कना बंद कर दे और नाड़ी का स्पन्दन रुक जाय।

जब आप हर उपाय करके थक जायें, और वास्तविक सौन्दर्य के स्थान पर बनावटी सौन्दर्य की ही प्राप्ति हो रही हो, और अपने सौन्दर्य को बचाए रखने के लिए विभिन्न औषधि, कृत्रिम संसाधनों का ही सहारा हर बार लेना पड़ रहा हो, तो आपको चाहिए कि थोड़ा-सा प्रयत्न कर अपने सौन्दर्य को बचा सकें, उसमें और अधिक निखार ला सकें।

सूर्योदय से कुछ समय पहले ही **पूर्व दिशा** की ओर मुंह करके बैठ जायें, बैठने के बाद ५ मिनट तक **''शीतलीकरण क्रिया''** करें, अर्थात् जीभ को थोड़ा-सा मुंह से बाहर निकालकर, उसको गोलाकार बनाकर उससे धीरे-धीरे अन्दर की ओर हवा खीचें और बाहर निकालें, इसके बाद १० मिनट तक बिलकुल शांत मन से बैठ जायें।

इस प्रक्रिया से कुछ दिनों बाद ही आपका चेहरा दमकने लगेगा, एक उमंग और आह्लाद की रूपरेखा चेहरे पर प्रकट होने लगेगी, यह प्रयोग सौन्दर्य-वृद्धि का अनुपम उपाय है।

अधिकतर बीमारियों से छुटकारा पाइये

कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जो रोगग्रस्त न हो, कोई-न-कोई रोग, व्याधि, पीड़ा उसे व्याप्त होती ही रहती है। हमारे शरीर में **वात, पित्त** और **कफ** ये तीन प्रकार के तत्त्व होते हैं, जिनका बराबर संतुलन बने रहने ही पर हमारे शरीर के आन्तरिक अंग व्यस्थित एवं सुचारु रूप से कार्य करते रहते हैं, और जरा सा भी असंतुलन होने पर वे अव्यवस्थित हो विभिन्न रोगों के जन्म का कारण बन जाते हैं, अतः हमारा शरीर इन तत्त्वों पर ही निर्भर करता है, किन्तु बाहरी वातावरण के प्रभाव के कारण या अन्य किसी कारणवश इन तत्त्वों में आपसी संतुलन अव्यवस्थित हो जाने के कारण उसका दुःखद परिणाम हमें स्वयं भुगतना पड़ता है।

अनेकों बीमारियां शरीर में घर कर लेती हैं, और धीरे-धीरे यही बड़ी कष्टप्रद एवं असाध्य बीमारियों का रूप धारण कर लेती हैं, जिनसे मुक्ति पाना असम्भव सा हो जाता है।

— और फिर लगाने पड़ते हैं दिन-रात डॉक्टरों के चक्कर, कभी ऐलोपैथी का सहारा लेना पड़ता है, तो कभी होम्योपैथी का, तो कभी आयुर्वेद का। व्यक्ति यदि स्वस्थ एवं तंदुरुस्त हो, तो उसे खान-पान, मौज-मस्ती, रहन-सहन सब कुछ अच्छा लगता है, और यदि बीमार, अस्वस्थ हो, तो उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, फिर चाहे उसके पास करोड़ों रुपये क्यों न हों, वे भी उसे बेकार लगने लगते हैं, क्योंकि उसका वह आनन्द नहीं उठा पाता।

अब आपको दुःखी होने की जरूरत नहीं, क्योंकि हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों ने अपनी साधना और तप के बल पर ब्रह्माण्ड से प्राप्त रोग निवारक रश्मियों के माध्यम से रोग को जड़ से समाप्त करने की विशेष मंत्र शक्ति प्रदान की है, जिससे कि आने वाली पीढ़ी उससे लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को रोग मुक्त कर सके। अतः व्याधियों को समूल नष्ट करने के लिए व्यक्ति को अब कहीं भटकने की जरूरत नहीं है।

रोग से पीड़ित व्यक्ति को चाहिए, कि वह **नाभि में सरसों की कुछ बूंदें निम्न मंत्र का ''काली हकीक माला'' से ५ माला मंत्र-जप करने के बाद डाल ले।**

मंत्र

ॐ ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसे रोगहराय ॐ

ऐसा १०-१५ दिन तक करे, वह स्वयं अपने-आप को रोगमुक्त अनुभव करने लगेगा।

यह मंत्र अपने-आप में अचूक फलदायी है, जिसके प्रभाव से व्यक्ति के अन्दर के रोगाणु विखंडित होने लगते हैं, फलस्वरूप रोगी धीरे-धीरे पूर्ण स्वस्थ होने लगता है।

सफलता प्राप्त करता है।

"कनकधारा स्तोत्र" को हम पिछले अंकों में कई बार प्रकाशित कर चुके हैं, किन्तु फिर भी पाठकों के लाभार्थ के लिए हम इसे अगले अंक में भी प्रकाशित करेंगे।

निर्धनता को एक हजार मील दूर भगाइये

जीवन में श्रेष्ठता और सम्पन्नता धन के माध्यम से ही सम्भव है, जिसके पास धन नहीं है, वह निर्धन है, दरिद्री है। ऐसा व्यक्ति चाहते हुए भी अपने जीवन में प्रगति नहीं कर पाता, उसकी गति, उसका प्रवाह, उसकी शक्ति सब कुछ धीरे-धीरे शिथिल पड़ता जाता है, और धन के अभाव में वह अपने-आप को सभी दृष्टियों से कमजोर और अशक्त ही पाता है।

किन्तु यदि घर-परिवार में थोड़ा आध्यात्मिक वातावरण हो, ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था हो, तो **"कनकधारा स्तोत्र"** का नियमित पाठ करने से घर में आई हुई दरिद्रता हमेशा-हमेशा के लिए हजारों मील दूर भाग जाती है और निश्चय ही आने वाले समय में वह आर्थिक उन्नति और

शत्रुओं पर वज्र की तरह टूट पड़िये

शत्रुओं के रहते सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना असम्भव कार्य है। व्यक्ति दिन-रात इस चिंता में खोया रहता है, कि कैसे शत्रुओं से मुकाबला किया जाय। कई बार शत्रु यदि प्रबल हो, तो उससे मुकाबला करना या बदला लेना एक कठिन कार्य हो जाता है।

१. यदि आपके विरुद्ध कोई षड्यंत्र रचा जा रहा हो।
२. यदि आपको शत्रुओं के प्रहार की आशंका हो।
३. यदि शत्रु आप पर हावी होने या क्षति पहुंचाने का

प्रयास कर रहा हो।

४. यदि किसी शत्रु ने आपके सुखी जीवन में दुःख का जहर घोल दिया हो, तो ऐसे में उससे भयभीत होने की अपेक्षा उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए।

व्यक्ति को चाहिए, कि वह नित्य प्रातः या सायं एक समय निर्धारित कर निम्नलिखित ''**रक्षा कवच**'' का एक बार पाठ अवश्य कर ले।

रक्षा कवच

वज्रिणी पूर्वतो रक्षेत् आग्नेय्यां परमेश्वरी।
दण्डिनी दक्षिणे रक्षेत् नैऋत्यां खड्गिनी तथा।।
पश्चिमे पाशहन्ता च ध्वजस्था वायुदिङ्मुखे।
गदाधरी तथादिच्यां ऐशान्यां च महेश्वरी।।
ऊर्ध्वदेशे पद्मिनी मां अधस्तात् वैष्णवी तथा।
एवं दश दिशो रक्षेत् सर्वदा भुवनेश्वरी।।

पति या पत्नी को यों अपने मनोनुकूल बना सकते हैं

व्यवहारिक अवस्था में, दाम्पत्य जीवन के किसी भी क्षण में पति-पत्नी के बीच तनाव का होना स्वाभाविक है, क्योंकि वर्तमान समय इतना समस्याग्रस्त है, कि दोनों के बीच
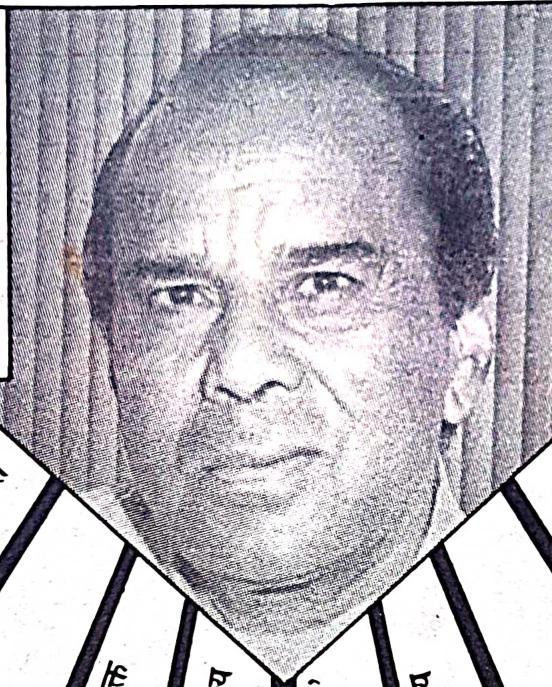
पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा

अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, अंगूठी में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक "सूर्यकान्त उपल" निःशुल्क

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त "गुरु यंत्र" आशीर्वाद स्वरूप

सदस्य वनने के दो माह के भीतर ही भीतर "चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा" सर्वथा मुफ्त

समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी "पारद शिवलिंग" उपहार स्वरूप

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य "पूज्यपाद गुरुदेव" का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप

"सिद्धाश्रम कैसेट," ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा, सर्वथा मुफ्त

प्रथम साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी "शिविर सिद्धि पैकेट" (धोती, माला, पंचपात्र तथा सिद्धासन निःशुल्क)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता

सुखद जीवन का एहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209 फेक्सः0291-32010
गुरुधाम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोनः011-7182248, फेक्सः011-7196700

टकराव की स्थिति उत्पन्न हो ही जाती है, ऐसी स्थिति में आप मनोमालिन्य को दूर करने के लिए निम्न कारगर उपाय काम में ला सकते हैं—

१. प्रतिदिन स्नान करने के बाद 'निखिलेश्वरानन्द स्तवन' पुस्तक को लेकर, आंख बंद करके उसका एक पृष्ठ खोल लें और उसे चुपचाप पढ़ लें, इस प्रक्रिया से कुछ दिनों के बाद आपका वह जीवनसाथी आपके मनोनुकूल होता दिखाई देगा।
२. किसी एक छोटे बच्चे को, जो देखने में बड़ा मासूम हो, प्रतिदिन उसकी इच्छित वस्तु कुछ दिनों तक उसे लाकर दें।
३. प्रतिदिन एक गेंदे का फूल, जो पूर्ण विकसित हो, उस पर थोड़ा-सा कुंकुम लगाकर किसी देवमूर्ति के सामने या तुलसी के पौधे पर चढ़ाने से पति-पत्नी के बीच द्वंद्व की स्थिति समाप्त हो जाती है।
४. एक **''सौभाग्यदा रत्न''** सोते समय अपने सिरहाने रखें, प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम उसका दर्शन करने से कुछ समय के बाद पति या पत्नी स्वतः मनोनुकूल होने लगते हैं।

भाग्योदय इस प्रकार से भी हो सकता है

भाग्योदय का तात्पर्य है, कम-से-कम परिश्रम से ज्यादा-से-ज्यादा धन-लाभ, ऐश्वर्य-प्राप्ति, सुख-वैभव, सम्पन्नता प्राप्त होना। जिनका भाग्य प्रबल होता है, वे कम समय में ही बहुत कुछ प्राप्त कर, जीवन में पूर्ण उन्नति, यश और सम्मान उपार्जित कर लेते हैं, और जिनका भाग्य साथ नहीं देता वे अत्यधिक परिश्रम करने पर भी वह सब कुछ प्राप्त नहीं कर पाते, जो उनके जीवन की आवश्यकताएं हैं, और उनका पूरा जीवन परेशानी पूर्ण, समस्याओं से ग्रस्त और चिन्तित बना रहता है।

रात्रि को सोने से पूर्व अपने पूजा स्थान में एक पात्र रख दें, वह लोटे के आकार में हो, चाहे वह मिट्टी का हो या किसी भी धातु का हो, उसमें ''अन्नपूर्णा गुटिका'' डाल दें, प्रतिदिन कुछ दाने चावल के उसमें छोड़ें और यह चिन्तन करें, कि भगवती अन्नपूर्णा इस माध्यम से मेरे घर को समृद्धि युक्त बना दें, कुछ दिनों के बाद चावल से जब वह पात्र भर जाय, तब उन दानों को पक्षियों को डाल दें, इस तरह कुछ दिनों के बाद आपके जीवन में निश्चित रूप से भाग्योदय सम्भव होगा, और आप वह सभी कुछ प्राप्त कर सकेंगे, जिसकी आपको जीवन में आकांक्षा है, अभिलाषा है।
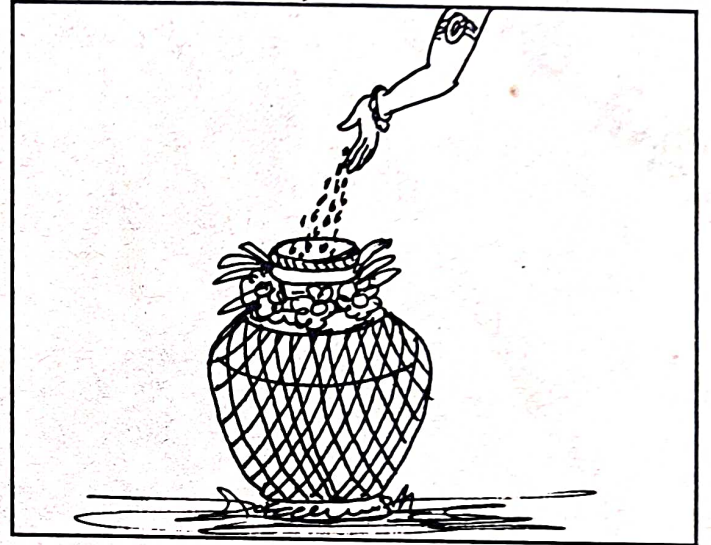
साधना-सामग्री न्यौछावर : जयन्ती माला - २१०/-, रुद्राक्ष माला - ३००/-, शक्ति चक्र - ५/-, पुत्रदा गुटिका - १००/-, काली हकीक माला - १५०/-, सौभाग्यदा रत्न - ७५/-, अन्नपूर्णा गुटिका - ६०/-

शत्रुओं पर वज्र की तरह टूट कर पड़ो

दुर्गा रहस्य से

जीवन में शत्रु का होना आवश्यक है, उसका मुकाबला करना जीवंतता है, पौरुषता है और अदम्यता है, इससे पलायन करना कापौरुषता है।

. . .कृष्ण के अनन्त शत्रु थे, किन्तु उन्होंने निर्भयता से और सहजता से उन्हें परास्त किया. . . कितना भी सबल शत्रु हो यह प्रयोग अवश्य ही शत्रु को हमेशा-हमेशा के लिए परास्त कर साधक को विजयोपहार से अलंकृत कर देने वाला है।

और उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए परास्त कर दो

जीवन में कब-किस मोड़ पर शत्रु मिल जाय, कुछ कहा नहीं जा सकता, यह कोई जरूरी नहीं, कि जो आज मित्र है, वह कल भी मित्र ही हो, क्योंकि जो आज तुम्हारा गहरा मित्र है, वही कल स्वार्थ के वशीभूत हो तुम्हारा घोर शत्रु बन सकता है, यह सब तो समय का कुचक्र ही कहा जा सकता है, जहां एक पल में सुख है, तो दूसरे ही पल दुःख भी है।

जीवन पग-पग परिवर्तनशील है, न जाने कब, कौन-सी विकट परिस्थिति से गुजरना पड़ जाय। शत्रु तो हर मोड़ पर तैनात सैनिकों की तरह खड़े रहते हैं हमला करने के लिए, उस अचानक प्रहार से व्यक्ति संकट में फंस जाता है और उस प्रहार को झेल नहीं पाता, और ऐसी स्थिति में व्यक्ति निर्णय नहीं कर पाता कि अब वह क्या करे. . . क्या नहीं करे।

मनुष्य के शत्रु एक नहीं हजारों होते हैं, जब तक वह एक को परास्त करता है, तब तक दूसरा उस पर वार कर देता है और इस सामाजिक-संग्राम में युद्ध करते-करते उसकी शक्ति क्षीण होने लगती है, क्योंकि व्यक्ति इस जीवन रूपी संग्राम को अपनी शक्ति के बल पर नहीं जीत सकता, इसके लिए उसके पास दैविक बल होना आवश्यक है, मंत्रसिद्धि होनी आवश्यक है।

महाभारत काल में श्रीकृष्ण ने "गीता" में यही कहा है, कि— **"हे अर्जुन! तुम युद्ध को शस्त्रों के माध्यम से नहीं जीत सकते, जब तक कि तुम्हारे पीछे दैविक बल नहीं होगा, जब तक कि तुम्हें मंत्रसिद्धि नहीं होगी, इसलिए तुमने जो द्रोणाचार्य से मंत्रसिद्धि प्राप्त की है, उस मंत्रसिद्धि को स्मरण करते हुए गांडीव उठाओ, तभी तुम महाभारत युद्ध को जीत सकोगे, केवल धनुष और तीर चलाने से ये दुर्योधन, दुःशासन जैसे पापी समाप्त नहीं हो सकते, उसके लिए द्रोणाचार्य ने तुम्हें तीर चलाना ही नहीं सिखाया, अपितु मंत्रशक्ति भी दी है।"**

आये दिन के क्लेश, पति-पत्नी के आपसी झगड़े, रिश्तेदारों, भाई-बंधुओं में आपसी मतभेद ईर्ष्या, वैमनस्य, प्रतिस्पर्धा और द्वेष के कारण ही होते हैं, व्यक्ति का जीना

दुस्कर हो जाता है, भाई-भाई का दुश्मन हो जाता है, इन आपसी मतभेदों के कारण ही शत्रु व्यक्ति की उन्नति के रास्ते में बाधा उत्पन्न करने लगते हैं, जिनसे संघर्ष करता-करता व्यक्ति थक जाता है, इनसे मुक्त नहीं हो पाता, फलस्वरूप वह शारीरिक रूप से तो दुर्बल हो ही जाता है, साथ ही उसकी मानसिक शक्ति भी क्षीण हो जाती है, और तब उसे एक ही मार्ग सूझता है, तरह-तरह के पण्डे-साधुओं के पास जाकर टोने-टोटके करवाना, तंत्र प्रयोगों का सहारा लेना, और इसमें वह हजारों रुपये भी बर्बाद कर डालता है, किन्तु उसे कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता, दर-दर की ठोकरें खाने के बाद वह हताश-निराश होकर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाता है और अपने भाग्य को कोसने लगता है।

ऐसी स्थिति में ''साधना'' ही एकमात्र ऐसा प्रबलतम शस्त्र है, जिसके माध्यम से जीवन के समस्त शत्रुओं को परास्त कर जीवन के महासंग्राम में विजय प्राप्त की जा सकती है, और वह भी पूर्णता के साथ।

साधना, शक्ति का स्रोत है, जिससे व्यक्ति शारीरिक रूप से तो स्वस्थ और बलवान होता ही है, अपितु मानसिक रूप से भी वह पूर्ण स्वस्थ और बलवान हो जाता है, क्योंकि उसे साधना का बल, ओज और तेजस्विता जो प्राप्त हो जाती है, जो उसे जीवन के हर क्षेत्र में विजयी बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

यदि व्यक्ति के पास साधना का तेज, मंत्र-बल हो, तो वह पराजित हो ही नहीं सकता, और यदि उसे उस अद्‌भुत एवं गोपनीय **''दुर्गा रहस्य''** का भली प्रकार ज्ञान हो, तो कोई दूसरी शक्ति ऐसी है ही नहीं, जो उसे परास्त कर सके।

''दुर्गा रहस्य'' से अपने जीवन में आने वाले हर शत्रु को, हर बाधा को, हर अड़चन को हमेशा-हमेशा के लिए दूर किया जा सकता है, फिर किसी टोने-टोटके की या तांत्रिक प्रयोग की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती, फिर उसे हर प्रकार के डर, भय से छुटकारा मिल जाता है, क्योंकि इस दुर्गा रहस्य को जानने के बाद उसे ऐसा महसूस होने लगता है, मानो कोई शक्ति हर क्षण उसके साथ हो और उसकी सहायता कर रही हो, वह अपने-आप को सुरक्षित और निर्भय अनुभव करने लगता है; और उस शक्ति के माध्यम से ही उसमें दृढ़ता और विश्वास का जागरण होता है, जिसके फलस्वरूप उसमें शत्रुओं को परास्त करने की क्षमता स्वतः ही आने लगती है, लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है, जब उसे इस रहस्य का पूर्ण ज्ञान हो और इसके प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास हो।
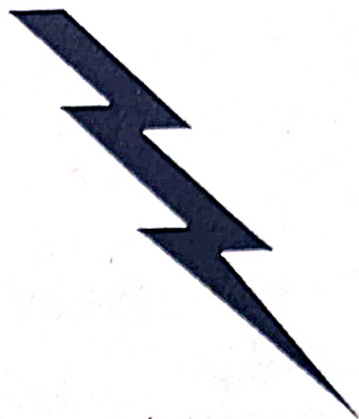
**शक्ति की आराधना
प्रागैतिहासिक काल
अर्थात्
ऋग्वेद के समय से
उपादेय रही है,
आज भी अविच्छिन्न
इसकी उपयोगिता सिद्ध है।
शक्ति के बिना
व्यक्ति शव माना जाता है।
इस साधना से
साधक शक्ति पुत्र बने,
शक्ति का अजस्त्र प्रवाह
उसके रोम-रोम में समाये,
अद्वितीय व्यक्तित्व का
वह स्वामी बने,
तभी वह शत्रुओं पर
वज्र की तरह प्रहार
करने में सक्षम हो
सकता है।**

विधि :

१. दिव्य एवं तीव्र मंत्रों से अनुप्राणित **"महादुर्गा यंत्र"** और **"शक्ति खड्ग",** जो शत्रु को शीघ्र ही पीड़ित करके साधक को मुक्ति दिलाने वाला है, इस सामग्री की आवश्यकता साधना को पूर्ण करने के लिए होती है, इसीलिए साधकों को चाहिए, कि वे इस सामग्री को पहले से ही मंगवा कर रख लें।

२. **१ अक्टूबर १९९५ रविवार के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त** में उठकर इस प्रयोग को सम्पन्न करें।

३. **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुंह करके बैठें।

४. **पीले आसन** का प्रयोग करें।

५. **पीले वस्त्र** धारण करें।

६. साधक प्रातः स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्वस्थ मन से पूजा कक्ष में आसन पर बैठ जायें तथा पूजन-सामग्री को अपने पास रख लें।

७. इस प्रयोग को करते समय वार-बार आसन से न उठें, क्योंकि शक्ति की उपासना में विघ्न आने की सम्भावना रहती है।

८. आसन पर खड़े होकर "महादुर्गा यंत्र" को अपने वायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उसे ढक दें, फिर आंख बंद कर लें तथा भगवती दुर्गा का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र का १० **मिनट तक जप करें।**

"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

९. जप के बाद उस यंत्र को खोलकर दोनों हाथों में रख लें और उस यंत्र में निहित शक्ति मेरे अन्दर समाहित हो रही है, ऐसा भाव मन में लाकर **दो मिनट तक यंत्र पर त्राटक करें।**

१०. इसके बाद बैठ जायें और यंत्र को अपने सामने किसी चौकी पर स्थापित कर दें, तथा कुंकुम, अक्षत व गुलाब की पंखुड़ियों से उसका पूजन करें।

११. पूरे साधना काल में घी का दीपक जलते रहना चाहिए।

१२. शुद्ध देशी घी का हलवा बनाकर मां दुर्गा को भोग लगायें।

१३. "खड्ग" को दाहिने हाथ में लेकर, आंख बंद करके यह चिन्तन करें, कि यह खड्ग, जो भगवती दुर्गा की संहारक शक्ति है, मेरे समस्त शत्रुओं का संहार करे।

१४. इसके बाद इस खड्ग को यंत्र के सामने स्थापित कर दें।

१५. फिर दोनों हाथ जोड़कर भगवती दुर्गा का ध्यान करें—

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

अर्थात् "हे भगवती दुर्गे! आप मंगल स्वरूपा हैं, समस्त भक्तों का कल्याण करने वाली हैं, मैं आपकी शरण में हूं, आप मेरी रक्षा करें।"

१६. इसके बाद अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, इसके लिए अपने नाम व गोत्र का उच्चारण करें तथा मेरे शत्रुओं का शीघ्र संहार हो, ऐसा कहकर जल को भूमि पर छोड़ दें।

१७. अब निम्न स्तोत्र का **५ बार पाठ करें,** जो समस्त शत्रुओं का संहार करके साधक की इच्छित मनोकामना को पूर्ण करता है—

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे,
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे;
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमस्ते जगच्चिन्त्यमान स्वरूपे,
नमस्ते महायोगि विज्ञान रूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे;
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य,
भयाभीतभीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेकागतिर्देवि निस्तार कर्त्री;
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये,
जले संकटे राजगेहे प्रवाते।
त्वमेकागतिर्देवि! निस्तार हेतु;
र्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

१८. इस प्रयोग से पूर्व **गुरु-पूजन** एवं **५ माला गुरु मंत्र-जप** अनिवार्य है, क्योंकि समस्त साधनाओं का एकमात्र सूत्रधार गुरु ही हैं, जो प्रत्येक साधना में सफलता देते हैं।

१९. यदि किसी कारणवश साधक दुर्गाष्टमी के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न नहीं कर पायें, तो किसी भी महीने की **पूर्णमासी** के दिन इस प्रयोग को किया जा सकता है।

२०. प्रयोग-समाप्ति के बाद खड्ग को **दक्षिण दिशा** की ओर किसी एकांत स्थान में दबा दें तथा यंत्र को नदी या कुएं में विसर्जित कर दें।

यह दुर्गा रहस्य निश्चित ही साधक के सौभाग्य को जाग्रत करने वाला और शत्रु विनाश के लिए पूर्णतया लाभदायक माना जाता है। यह अद्वितीय एवं नवीन प्रयोग है, जो बाण की तरह अचूक है और लक्ष्य सिद्धि के लिए प्रसिद्ध माना गया है।

साधना-सामग्री न्यौछावर :

महादुर्गा यंत्र - २४०/-, शक्ति खड्ग - १००/-

जब बोरीवली (बम्बई में) अचानक

लक्ष्मी प्रगट हुई

गणेश वटाणी का नाम अब बम्बई वालों के लिए बहुत प्रचलित हो गया है, उन्होंने बम्बई में आध्यात्मिक चेतना लाने के लिए जो कार्य किया है, जो शिविर लगाये हैं, वे अपने-आप में अद्वितीय हैं और इसकी जितनी तारीफ की जाय, जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है। ८ तारीख को गुरुदेव "श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली जी" बम्बई पधारे और "हरेकृष्ण" मंदिर में ठहरे। वहां मिलने वालों की संख्या काफी थी, और सभी लोग उनसे मिलकर संतुष्टि अनुभव कर रहे थे, दिन भर गुरुदेव मिलते रहे। रात को एक बजे तक भी गुरुदेव सोये नहीं और शिष्यों की समस्याओं का समाधान करते रहे, वे सभी अपने-आप में प्रसन्न थे, सभी अपने-आप में उत्साहित थे।

६ अगस्त को ऐसा लग रहा था, जैसे बोरीवली में एक उत्साह का वातावरण हो, एक उमंग का वातावरण हो, एक जोश हो। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे बोरीवली में महालक्ष्मी साक्षात् प्रकट हो गई हों, क्योंकि आज साधना दिवस था और **''धरमसीह भाटिया'' हॉल में ''भगवती लक्ष्मी साधना शिविर'' का प्रारम्भ था।** अधिक से अधिक लोग इस शिविर में भाग लेने के लिए उतावले थे, और प्रत्येक चाहता था कि मैं शिविर में भाग लूं और सफलता प्राप्त करूं। **सबसे ज्यादा व्यस्त गणेश वटाणी दिखाई दे रहे थे, फिर भी उनके चेहरे पर किसी प्रकार की कोई शिकन नहीं थी, किसी प्रकार का तनाव नहीं था, वे प्रत्येक को संतुष्ट कर रहे थे, प्रत्येक को गुरुदेव से मिला रहे थे और प्रत्येक की समस्या का समाधान कर रहे थे।**

जैसी कि परम्परा है, ठीक दस बजे शिविर का प्रारम्भ हो गया, मंच पर पूज्य गुरुदेव श्री कैलाशचंद्र जी बैठे हुए थे और सामने साधक पीली धोती और पीले दुपट्टे में अत्यन्त ही सुन्दर और ऋषितुल्य प्रतीत हो रहे थे। गणेश वटाणी ने संक्षिप्त भाषण दिया और बताया कि किस प्रकार से समस्याओं से जूझते हुए भी उन्होंने बम्बई में एक आध्यात्मिक लहर को बढ़ाया है और यह लहर बम्बई से भी बढ़कर गुजरात तक फैल गई है— दूर-दूर यहां तक कि हैदराबाद, मैसूर, महाराष्ट्र और गुजरात के अहमदाबाद तक से साधक आये हैं, और इस शिविर में अपने-आप को शामिल कर सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे है।

उसके बाद गुरुदेव ने संक्षिप्त प्रवचन दिया और बताया कि जीवन में गणपति और महालक्ष्मी का क्या स्थान है? क्यों इसके बिना जीवन अपने-आप में अधूरा है? इसके बिना जीवन अपने-आप में अपूर्ण है, जब जीवन में पूर्णता प्राप्त होती है, तभी व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की उपलब्धि होती है। यह शिविर अपने आप में आध्यात्मिक दृष्टि से भी पूर्ण चैतन्य था और भौतिक दृष्टि से भी समस्याओं के समाधान के लिए अनुकूल था।

दोपहर तक तो इतने अधिक साधक इकट्ठे हो गये थे, कि हॉल में बैठने तक को जगह नहीं थी, लोगों ने गणेश वटाणी से कहा, कि हम खड़े-खड़े ही साधना सम्पन्न कर लेंगे, मगर हम साधना शिविर में भाग अवश्य लेंगे। यह इस बात का सूचक था कि उनके मन में एक उत्साह था, एक विश्वास था और शिविर में भाग लेने के लिए उनके मन में अत्यन्त आतुरता थी।
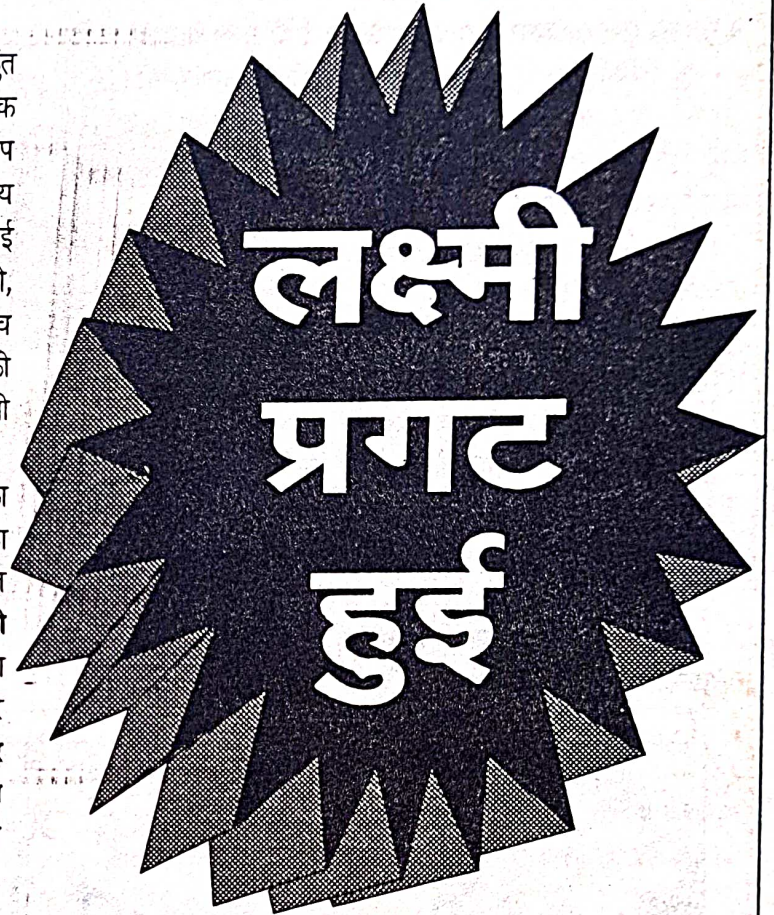
पूर्ण वैदिक मंत्रों और शास्त्रीय नियमों के अनुसार प्रयोग सम्पन्न हुआ और उसके बाद में साधना सम्पन्न हुई फिर साधकों की इच्छानुसार **'शिव शक्ति मनोकामना प्रयोग'** सम्पन्न हुआ। यह प्रयोग भी अपने आप में विलक्षण था, क्योंकि शिव और शक्ति दोनों मिलकर के जीवन में पूर्णता प्रदान करते हैं। इस प्रयोग से लोगों ने अनुभव किया कि वास्तव में इस प्रकार का प्रयोग पहली बार सम्पन्न हुआ है, वास्तव में जीवन में पहली बार अनुकूलता अनुभव हुई है। जिसने भी साधना शिविर में भाग लिया उन सभी लोगों ने इस प्रयोग को भी सम्पन्न किया। इसके अलावा अधिकांश लोगों ने अपनी अपनी इच्छा के अनुसार दीक्षा प्राप्त की; जो उनके जीवन की न्यूनताएं थीं, जीवन की जो इच्छाएं थीं, जो पूरी नहीं हो रही थीं— जो भौतिक इच्छाएं थीं, जो आध्यात्मिक इच्छाएं थीं उन सब की पूर्ति के लिए उन्होंने दीक्षा प्राप्त कर एहसास किया कि वास्तव में दीक्षा का स्पर्श पाकर ऐसा ही लगता है कि जैसे समस्या का समाधान बिलकुल सामने है, और हम अपनी मंजिल के निकट पहुंच गये हैं।

शाम को पांच बजे शिविर का समापन हुआ, आरती में सभी मस्त थे, नृत्यमय थे, तल्लीन थे और सभी अपने आप में एक अपूर्व रंग में डूबे हुए थे।

इस बार एक और घटना हुई, दूसरे दिन आठ तारीख को अधिकांश लोगों ने कहा कि आज श्रावण का महीना है, और आज अगर रुद्राभिषेक पूर्ण विधि-विधान के साथ हो जाये तो अपने आप में श्रेष्ठता रहेगी। गणेश वटाणी ने उनकी इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए, अपने ही प्रांगण में जो कि बोरीवली में है, उन्होंने शिवलिंग को स्थापित किया, **'श्री पी०सी० नागभेरे', जो कि पुलिस अफसर हैं और 'श्री जितेन्द्र कुमार सागर' जो कि सेन्ट्रल लेबर सर्विसेज में रीजनल लेबर कमीश्नर हैं, यजमान के रूप में बैठे। उनकी इच्छा थी कि हम पूर्ण विधि-विधान से भगवान शिव का रुद्राभिषेक सम्पन्न करें।** उनके प्रांगण में ही साधकों ने बैठकर पूर्ण रुद्राभिषेक सम्पन्न किया। पूर्ण विधि-विधान के साथ षोडशोपचार पूजन एवं रुद्राभिषेक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, ऐसा लगा कि साक्षात भगवान शिव प्रत्यक्ष प्रकट हो गये हों।

श्रावण का महीना रिमझिम फुहार हो, शास्त्रीय विधि-विधान के साथ निर्मित पारद शिवलिंग हो, "रुद्राष्टक" का पाठ हो और साधक अपनी पूर्ण तल्लीनता के साथ बैठे हुए हों, इससे बड़ा सौभाग्य और हो भी क्या सकता है। दिन भर यह कार्यक्रम चलता रहा, लोग अपने आप में अत्यन्त ही प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे।

इसको पूर्णता और सफ़लता देने के लिए श्री वासुदेव पांडे, श्री रविन्द्र कुमार और विशेष कर श्री रामचैतन्य शास्त्री जी — जो केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली से गये हुए थे, उन्होंने पूरा प्रयत्न किया; सबसे ज्यादा सहयोग गणेश वटाणी का रहा, जिन्होंने इस कार्यक्रम को पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करवाया।

इस भव्य शिविर में यह घोषणा भी हुई कि अगला शिविर १७ सितम्बर १९९५ को हिन्दूजा हॉल, दौलत नगर, रोड नं. ६ बोरीवली ईस्ट बम्बई-६६ में सम्पन्न होगा जो कि "षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना शिविर" जिसको दूसरे शब्दों में "लक्ष्मी जगदम्बा साधना शिविर" कहा जाता है, सम्पन्न होगा। उस दिन रविवार भी है। जैसी कि परम्परा है प्रातः दस बजे से सांय शाम को पांच बजे तक एक दिवसीय साधना शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

इसमें कोई दो राय नहीं कि बम्बई में एक अद्भुत और अद्वितीय वातावरण निर्मित हो रहा है, ऐसा लग रहा है कि अधिकांश लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं, लोगों में चेतना पैदा हो रही है, एक महत्वत्ता प्राप्त हो रही है और अनुभव हो रहा है कि जीवन का लक्ष्य, जीवन का उद्देश्य, जीवन का धर्म, जीवन की पूर्णता यही है कि हम इस प्रकार के एक दिवसीय साधना शिविर में भाग लें; विशेष दीक्षाएं प्राप्त कर सभी दृष्टियों से जीवन में अनुकूलता प्राप्त करें, जो कुछ मैंने बम्बई शिविर में देखा है, वह तो अपने आप में अद्वितीय था, यह तो एक अंश मात्र झलक है, जो कुछ हुआ, जिस ढंग से हुआ, जिस ढंग से साधना शिविर सम्पन्न हुआ, उसको तो शब्दों में बांधा ही नहीं जा सकता।

श्री गणेश वटाणी का अपना टेलीफोन नम्बर ८०५-७११० है, उनसे सम्पर्क करें। विशेषकर श्री वटाणी ने जितना अधिक परिश्रम किया है और बम्बई में जो चेतना पैदा की है, उसके लिए तो उनको जितना धन्यवाद दिया जाय, वह अपने आप में कम है। अन्त में गणेश वटाणी ने सभी आगन्तुक साधकों के प्रति धन्यवाद अर्पित किया, और यह विश्वास प्रकट किया कि भविष्य में और अच्छे से अच्छे शिविर लगाने का प्रयत्न करूंगा और आप सभी लोगों को ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त हो सके ऐसा ही प्रयत्न करूंगा।

ईशितात्वम्

- आपके द्वारा प्रत्येक महीने में विशिष्ट साधनात्मक दिवसों पर होने वाले साधना क्रम में मैंने **७ जुलाई ६५ को कराई गई 'षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना'** में भाग लिया। पूर्ण विधान के साथ षोडशी पूजन तथा मंत्र-जप करके बहुत प्रसन्नता हुई। भविष्य में भी आप इस प्रकार की अलग-अलग साधनाएं कराते रहें।

सौरभ भारद्वी, बिहार

- पूज्य गुरुदेव, जुलाई माह की पत्रिका के पृष्ठ ४६ पर प्रकाशित साधना क्रम के तहत **मैंने श्रावण मास के चौथे सोमवार को कराये गये 'ज्योतिर्लिंग शिव पूजन' में भाग लिया।** मैं काशी का रहने वाला हूं और अवश्य ही सोमवार को विश्वनाथ जी का दर्शन करता हूं। वहां न होने की मन में कसक थी, फिर भी पूजन कर रहा था। लगभग आधे घण्टे के बाद ही मेरी आंखें बन्द होने लगीं, मैं खुद को सम्भाल नहीं पाया, तभी मुझे लगा, जैसे मैं विश्वनाथ मंदिर में हूं और उनका विधिवत अभिषेक कर रहा हूं। शिव जी के जाज्वल्यमान छवि का क्षणिक दर्शन हुआ। अपने इष्ट का दर्शन कर मैं धन्य हो गया।

सुरेश द्विवेदी, वाराणसी

- **३१ जुलाई ६५ को आर्थिक समृद्धि हेतु 'गुरुधाम' में आकर 'धातु शिवलिंग पूजन' किया।** तीन वर्षों से मेरे व्यापार में आती गिरावट पन्द्रह दिन में ही रुक गई और अब धीरे-धीरे लाभ प्राप्त करने की स्थिति बनने लगी है। मुझे आश्चर्य होता है कि मात्र साठ मिनट की साधना व पूजा द्वारा इतना लाभ प्राप्त हो रहा है।

जे. आर. भाण्डा, बम्बई

- पूज्य गुरुजी, प्रणाम,

  गुरुधाम में सम्पन्न होने वाली साधना में मैंने **'पारदेश्वर शिवलिंग पूजन'** में भाग लिया। मैं आप से मिलने आया था, लेकिन दिल्ली में आप थे नहीं, दुःख हुआ। फिर भी सोचा, जब आ गया हूं, तो पूजन कर लूं। घर आने पर बार-बार पूजन-क्रम का दृश्य दिखता। दो दिन बाद ही नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ और एक प्राइवेट यार्न फैक्टरी में मुझे नौकरी मिल गई। पांच सालों से भटकते हुए व्यक्ति को आपके यहां सम्पन्न की गई साधना द्वारा ही नौकरी मिली, मैं इस बात को अच्छी तरह समझ गया हूं। मेरी मनोकामना पूर्ण हुई। अब मैं जल्दी ही आकर आप से दीक्षा लूंगा।

सुबोध भास्कर, हावड़ा

- मैं **२७ जुलाई** को शाम छः बजे **'गुरुधाम'** साधना के लिए माला लेने आया। वहां देखा तो लगभग पच्चीस-तीस लोग गुरु चादर ओढ़े किसी साधना को करने जा रहे थे। उत्सुकतावश पूछा, तो पता चला कि **गुरु पुष्य योग होने के कारण 'रोग मुक्ति साधना'** हो रही है। मैंने भी साधना में भाग लिया और अपनी बेटी, जो कि तेरह साल की है, उसे एक माह पहले ही स्कूल से लौटते समय चोट लगी और दाहिना हाथ बेकार सा हो गया, उसके नाम से संकल्प लेकर साधना की। आज बीस दिन हो रहे हैं, उसके हाथ में धीरे-धीरे गति आ गई है, और मुझे पूरा भरोसा है कि वह मात्र एक हफ्ते बाद ही पहले कि तरह सामान्य हो जायेगी।

मोहन ढींगरा, दिल्ली

- मेरी जमीन, जो कि रोहतक रोड पर है, मेन रोड पर होने के कारण काफी अच्छा पैसा मिल रहा था, लेकिन मेरे निकट सम्बन्धियों के कारण विवादग्रस्त हो गई थी। कई सालों से उसे लेकर लड़ाई-झगड़ा हो रहा था। 'गुरुधाम' में सावन के **पहले सोमवार को कराये गये 'अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग'** में मैंने भाग लिया। इसके तीसरे दिन ही मुकदमे का फैसला मेरे पक्ष में हो गया और जमीन की बिक्री भी अगले दस दिनों के अन्दर हो गई।

उमेश सिंह, रोहतक

- प्रत्येक सप्ताह होने वाली साधनाओं में मैंने माह जुलाई के प्रत्येक प्रयोग में भाग लिया और अनेकों लाभ प्राप्त किये। सबसे बड़ी बात यह है कि जब मैंने अन्य साधकों से, जिन्होंने अलग-अलग साधनाओं में भाग लिया था, पूछा, तो उन लोगों ने भी पूर्ण अनुकूलता मिलने की बात कही। निश्चित रूप से यह 'गुरुधाम' के पवित्र वातावरण का प्रभाव है कि जिस साधना में, सवा लाख मंत्र-जप करने पर सफलता मिलती है, वह मात्र आधा-एक घण्टा पूजन करने पर प्राप्त हो गई। आप इस क्रम को हम लोगों के हितार्थ इसी प्रकार आगे बढ़ायें।

यज्ञदत्त जोशी, रोहिणी, दिल्ली

- जुलाई माह में प्रकाशित **निःशुल्क योजना के अन्तर्गत मैंने साधना में भाग लिया और विधिवत रुद्राभिषेक किया।** संस्था की इस योजना का लाभ प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य लेना चाहिए। इस सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद।

निष्ठा अग्रवाल, देहरादून

- पत्रिका के दो नवीन सदस्य बनाने पर साधना में निःशुल्क भाग लेकर साधना की सामग्री निःशुल्क प्राप्त की तथा सबसे बड़ी बात है कि अत्यन्त दिव्यता युक्त **'नवनिधि प्रदायक कुबेर यंत्र'** जो गुरुदेव के आशीर्वाद से युक्त है, उसे भी प्राप्त किया। अत्यन्त ही लाभप्रद योजना है। इसके द्वारा मैं तो लाभान्वित हुआ ही, साथ ही मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि अपने दो स्वजनों को भी मैंने इस दिव्यतम ज्ञान-पुञ्ज से जोड़ा। मेरे वे दोनों मित्र भी मेरे प्रति बड़े कृतज्ञ हैं तथा पत्रिका सदस्यता प्राप्त कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

विजय प्रकाश, विदिशा (म.प्र.)

जीवन के संकट मिटते ही हैं सिद्धिदायक गणपति साधना से

भगवान गणपति
मंगलमय माने जाते हैं,
प्रत्येक शुभ कार्य में इनका नाम
स्मरण करना भारतीय जीवन की
अक्षुण्ण पद्धति है, जो सनातन है,
सत्यम् है, शिवम् है, सुन्दरम् है. . .
आपका जीवन मंगलमय हो, निर्विघ्न हो और
सुखमय हो इस कामना के साथ यह साधना केवल
आपके लिए ही है।

बलहीन व्यक्ति हमेशा दुःखों, विपदाओं से घिरा रहता है। अपनी सामर्थ्यानुसार प्रयत्न करने पर भी वह अपने-आप को उन संकटों में घिरा ही पाता है, एक के वाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी . . . इस प्रकार कोई न कोई बाधा उसके जीवन में दुःखों का कारण बनती ही है . . . और ये बाधायें, अड़चनें ही शत्रु बनकर उसके सुखी जीवन में दुःख का जहर घोल देती हैं. . . किन्तु वही बलहीन व्यक्ति शक्तिवान बन
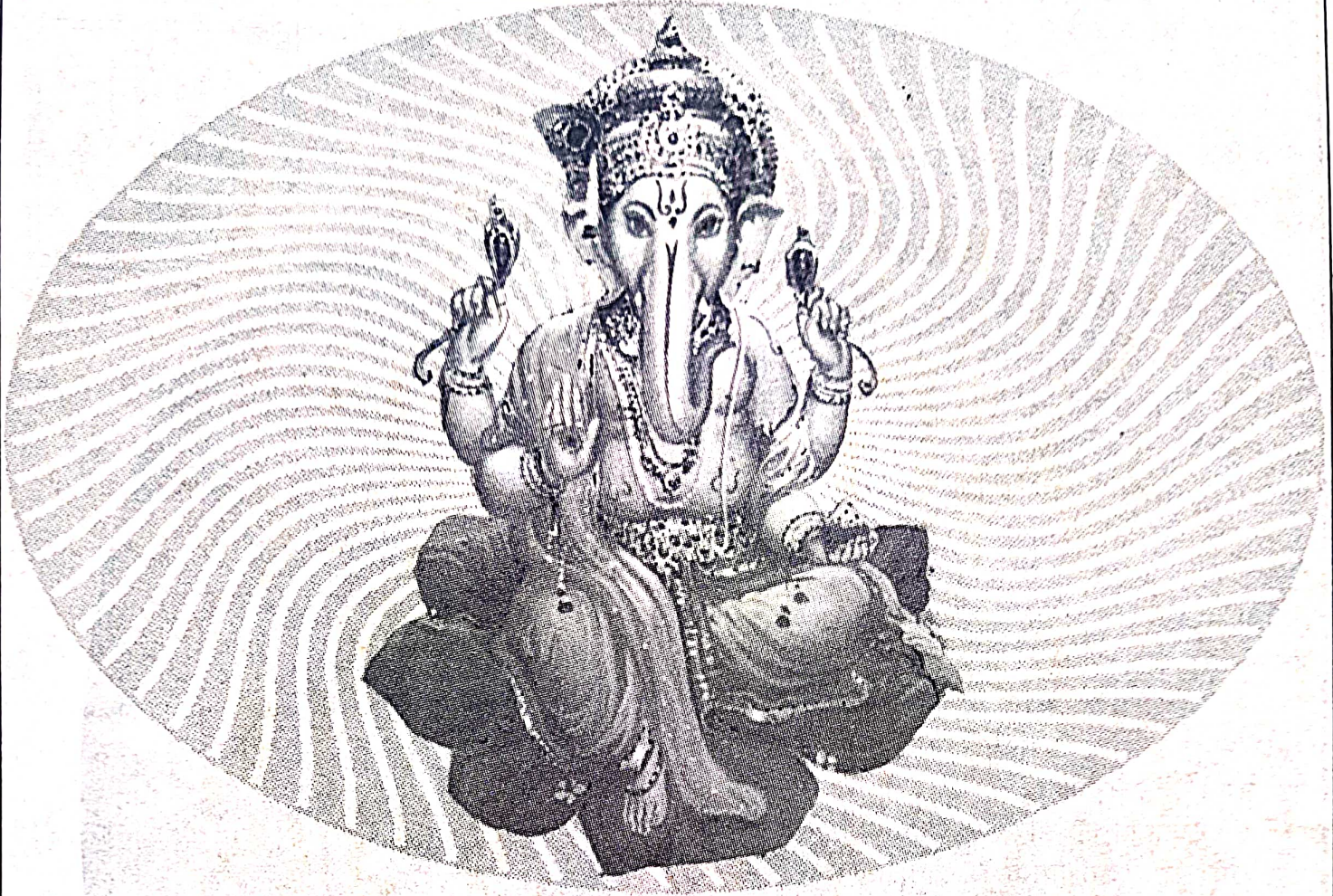
सकता है, और समस्त संकटों से छुटकारा पा सकता है, यदि वह **''सिद्धिदायक गणपति साधना''** को सम्पन्न कर ले तो।

भगवान गणपति परम तत्त्व हैं। गणपति का अर्थ है— गणों के अधिपति। श्री ''गणपत्यथर्वशीर्ष'' में लिखा है—

भगवान गणपति ''ओंकार'' के प्रतीक हैं, ये उनकी महत्ता का मुख्य कारण है, फलस्वरूप समस्त मंगल कार्यों तथा देवता प्रतिष्ठापनाओं से पूर्व श्री गणपति-पूजन का विधान है। जिस प्रकार प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ''ओंकार'' का उच्चारण किया जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक पूजन तथा शुभ कार्य का प्रारम्भ भी गणपति-पूजन से ही किया जाता है। समस्त वैदिक धर्मों एवं सम्प्रदायों ने इस प्राचीन व शास्त्रीय परम्परा को सहर्ष स्वीकार कर इसका अनुसरण किया है।

अन्य साधनाओं की अपेक्षा गणपति साधना अत्यन्त ही सरल और सुगम मानी जाती है, और तीक्ष्ण प्रभावकारी भी। यदि किसी व्यक्ति का कोई कार्य बार-बार प्रयत्न करने पर भी न हो पा रहा हो या किसी साधक को अन्य किसी साधना में बार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिल रही हो, तो ऐसे में ''सिद्धिदायक गणपति साधना'' करने पर मार्ग में आये अवरोधों को हटाकर सफलता व श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है, इससे यह सिद्ध होता है, कि यह साधना जितनी भौतिक उन्नति में लाभदायक है, उतनी ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सर्वोपरि है।

भगवान गणपति स्वस्तिक रूप में तथा प्रणव रूप में अग्रपूज्य देव हैं। भिन्न-भिन्न कालों में तथा अवसरों पर जगत् के कल्याण हेतु भिन्न-भिन्न नामों से इनकी पूजा, उपासना, जप आदि का विधान शास्त्रों में निहित है, अतः मंगल हेतु ही इनका लीला प्राकट्य होता है।

अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले, मेधा शक्ति का परिष्कार करने वाले, ज्योतिर्मय, अच्युत तथा प्रकृति और पुरुष से परे मंगलमूर्ति भगवान गणपति सृष्टि के आदि में आविर्भूत हुए।

सिद्धिदायक भगवान गणपति की लीलाओं तथा रूपों का वर्णन विभिन्न पुराणों आदि में उपलब्ध होता है। भगवान गणपति सर्व समर्थ देव हैं। वास्तव में वे अज, अनादि एवं अनन्त हैं, और अपने विभिन्न लीला प्राकट्य स्वरूप, जो कि परम वन्दनीय, परम अनुपम, परम मनोरम

है, उसमें प्रत्येक साधक के समक्ष उपस्थित होते ही हैं, उसके विघ्नों को हरने के लिए।

इनकी लीला और कार्य दोनों ही अद्‌भुत और अलौकिक हैं। श्रद्धा पूर्वक उनका नाम-स्मरण, साधना-आराधना, जप-अनुष्ठान आदि करने पर वे मंगलमूर्ति रूप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में साधक के लिए सहायक होते ही हैं।

''लिंग पुराण'' में भगवान गणपति के लीला प्राकट्य की कथा इस प्रकार है— एक बार सभी देवताओं ने परस्पर विचार किया, कि सभी असुर सृष्टि स्थित्यन्तकारी वृषभ ध्वज एवं चतुर्मुख की उपासना कर उससे मनोवांछित फल प्राप्त करने में सक्षम हैं, यही कारण है कि हम युद्ध में उनसे बार-बार पराजित हो जाते हैं, तो क्यों न विजय-प्राप्ति हेतु दैत्यों के कार्यों में विघ्न उपस्थित करने के लिए एवं सर्वसिद्धि प्राप्ति के लिए आशुतोष शिव से प्रार्थना की जाय।

यह सोचकर सभी देवता उनकी स्तुति करने लगे, उनकी स्तुति से प्रसन्न हो भगवान आशुतोष ने उन्हें अभीष्ट वर मांगने के लिए कहा।

देवताओं की ओर से बृहस्पति ने निवेदन किया— ''हे प्रभो! आप करुणामयी हैं, अतः देव शत्रु दैत्यों की उपासना से प्रसन्न हो आप उन्हें इच्छित वर प्रदान कर देते हैं, और उस फल को प्राप्त कर वे हमें अत्यन्त कष्ट पहुंचाते हैं, हम पर अत्याचार करते हैं, फलस्वरूप दैत्यों के कारण हमें अनेकों कष्ट उठाने पड़ते हैं, उन देव शत्रुओं के कर्म में विघ्न उपस्थित हुआ करे, हमारी यही कामना है।''

तथास्तु! कहकर पार्वतीवल्लभ शिव ने सुर समुदाय को संतुष्ट किया और कुछ समय पश्चात् ही स्कन्दागज का प्राकट्य हुआ, उस तेजस्वी बालक का मुख हाथी का था और उसके एक हाथ में त्रिशूल तथा दूसरे में पाश था।

पुत्र को प्रेम पूर्वक अपनी गोद में उठाकर भगवान शिव ने कहा— ''हे पुत्र गणेश! तुम्हारा अवतार दैत्यों का नाश करने तथा देवता, ब्राह्मण एवं ब्रह्मवादियों का उपकार करने के लिए हुआ है, जो स्त्री-पुरुष ठीक समय पर सदा तुम्हारी पूजा करते हों, उनको तुम अपनी क्षमता प्रदान करो। हे गणेश्वर! तुम पूजित होकर अपने भक्तों की भी सभी प्रकार से इस लोक तथा परलोक में भी रक्षा करना। हे विघ्नविनाशक! तुम विघ्न गणों के स्वामी होने के कारण तीनों लोकों में सर्वत्र ही पूज्य एवं वंदनीय होओगे, इसमें सन्देह नहीं तथा जो भगवान विष्णु और ब्रह्मा जी की यज्ञों द्वारा पूजा करते हैं, उनसे भी पहले तुम पूजित होओगे।
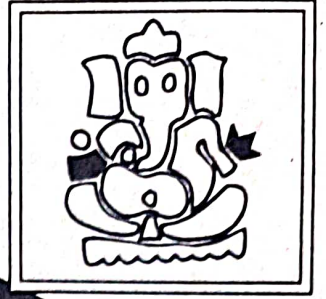
सिद्धिदायक गणपति सौम्य रूप में साधकों के हितैषी हैं, जो अत्यन्त ही करुणामय स्वरूप में साधक को अहर्निश सुरक्षित करते हुए, जीवन के उस सुखद क्षण की ओर अग्रसरित कर पूर्णता प्रदान करते हैं।

जो मनुष्य तुम्हारी पूजा-आराधना, जप आदि करेंगे, वे निश्चय ही इन्द्रादि देवताओं द्वारा भी पूजित होंगे, तथा जो फल आदि मनेच्छा की कामना हेतु ब्रह्मा, विष्णु एवं इन्द्र आदि देवताओं की आराधना करेंगे, किन्तु उससे पहले तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे, तो उन्हें अनेक विघ्न-बाधाओं
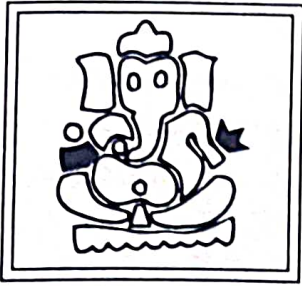
आदि का सामना करना पड़ेगा।"

सर्वलोक महेश्वर का यह आशीर्वाद प्राप्त कर, गणपति ने विघ्न गणों को उत्पन्न कर भगवान शिव के चरणों में अत्यन्त श्रद्धा से प्रणाम किया और तभी से श्री गणपति की अग्रपूजा तथा साधना आदि का विधान है।

साधना विधिः

१. इस साधना की सफलता के लिए शीघ्र सफलतादायक **"महागणपति यंत्र", "विघ्नविघातक दो मंगल गुटिकाएं"** एवं **"सौभाग्यदायिनी मूंगा माला"**, जो कि विशेष मंत्रों से अनुप्राणित एवं चेतना युक्त हों, साधक मंगा लें।

२. यह साधना १२/१०/६५ **गुरुवार, गणेश चतुर्थी को प्रातः ५ बजे से ८.३५ बजे के मध्य** सम्पन्न करनी चाहिए और यदि किसी कारणवश इस विशेष मुहूर्त पर इस साधना को सम्पन्न न कर सकें, तो किसी भी **मंगलवार** या **रविवार** के दिन इस साधना को किया जा सकता है।

३. साधक को **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुख करके बैठना चाहिए।

४. **पीले वस्त्र धारण करें** तथा ऊपर से गुरु चादर ओढ़कर यह साधना सम्पन्न करें।

५. पूरे साधना काल में घी का अखण्ड दीपक जलता रहे। साधना कक्ष अगरबत्ती एवं धूप की सुगन्ध से आपूरित होना चाहिए।

६. अपने सामने किसी चौकी पर **लाल वस्त्र** बिछाकर किसी प्लेट पर कुंकुम या केसर से **"स्वस्तिक"** का चिन्ह बनाकर "गणपति यंत्र" को स्थापित कर दें।

७. इसके बाद एक नारियल, जिसमें पानी हो, दोनों हाथों में लें, उसमें कलावा बांधकर, कुंकुम का तिलक करें तथा एक पुष्पमाला नारियल को पहिनाकर, मन ही मन यह प्रार्थना करें, कि मेरे जितने भी पाप-दोष हैं, वे समाप्त हों और मुझे इस साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त हो, फिर इस नारियल को पूजा स्थान में रख दें।

८. सर्वप्रथम साधक सिद्धिदायक गणपति के स्वरूप का **ध्यान करें**–

गजानन भूत गणाधि सेवितं,
कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं;
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

९. **फिर आह्वान करें**:
साधक अपने दोनों हाथों को आवाहन की मुद्रा में ऊपर उठाकर भगवान गणपति का आवाहन करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

आगच्छ भगवन् देव सर्वसौभाग्य दायक।
यावत् पूजां करिष्यामि तावदत्र स्थिरो भव।।

१०. **फिर स्नान करायें**
यंत्र को किसी दूसरे पात्र में निम्न मंत्र से स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र से उसे पोंछ दें–

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव! ततः शान्तिं कुरुष्व मे।।

११. इसके बाद यंत्र पर कुंकुम से पांच तिलक करें, "गुटिकाओं" पर भी तिलक करें, फिर अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से उनका पूजन करें। ये दोनों गुटिकाएं "ऋद्धि" और "सिद्धि" की प्रतीक हैं।

१२. बेसन का ही भोग लगायें।

१३. फिर दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न मंत्र बोलते हुए **पुष्पाञ्जलि समर्पित करें**–

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलि मया दत्ता गृहाण परमेश्वर।।

१४. इसके बाद निम्न मंत्र का "सौभाग्यदायिनी मूंगा माला" से **२१ माला जप** करें–

मंत्र

ॐ श्रीं गं गणपतये श्रीं गं सिद्ध्ये नमः

१५. मंत्र-जप सम्पन्न करने के बाद **गणपति की आरती** करें।

१६. फिर प्रसाद वितरण करें।

१७. इसके बाद एक सप्ताह के भीतर-भीतर यंत्र व अन्य सामग्री को किसी तालाब या नदी में विसर्जित कर दें।

यह साधना अपने-आप में अद्वितीय है, जो मनोयोग से सम्पन्न करने पर शीघ्र और अवश्य फलदायी होती है।

साधना-सामग्री न्यौछावर :
महागणपति यंत्र - २४०/-, दो मंगल गुटिकाएं - १२०/-
सौभाग्यदायिनी मूंगा माला - १२०/-

प्रिय बन्धुओं . . .

"साधक साक्षी हैं" स्तम्भ आपका-अपना ही स्तम्भ है, इसमें हम उन पत्रों को सम्मिलित करते हैं, जिनमें साधना-जीवन में घटी उन अनुभूतियों का समावेश हो, जिसे व्यक्ति सहज एक संयोग नहीं मानता, वह उसे दैव कृपा या अपने इष्ट की कृपा मानता है, इस स्तम्भ के अन्तर्गत हमें अनेकों पत्र प्राप्त होते हैं, जिन्हें हम समय-समय पर आपके समक्ष रखते हैं, जिससे आप भी इन साधनाओं, दीक्षाओं को प्राप्त कर अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बना सकें। यूं तो आप कुछ भी नहीं करेंगे, तब भी समय का चक्र आपको श्मशान की यात्रा तक धीरे-धीरे पहुंचा देगा, इसके लिए आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है . . . पर जीवन में किसी समय, किसी मोड़ पर यदि गुरु मिलें, जिनके पास ज्ञान हो, तो जीवन क्रम में से इतना समय अवश्य निकाल लेना, कि वह ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बना सको। कृपया आप लोग अपनी अनुभूतियों को लिख कर भेजने के साथ-साथ अपना फोटो भी भेजा करें, जिससे कि आपकी अनुभूतियों के साथ-साथ आपका फोटो भी प्रकाशित किया जा सके।

– उपसम्पादक
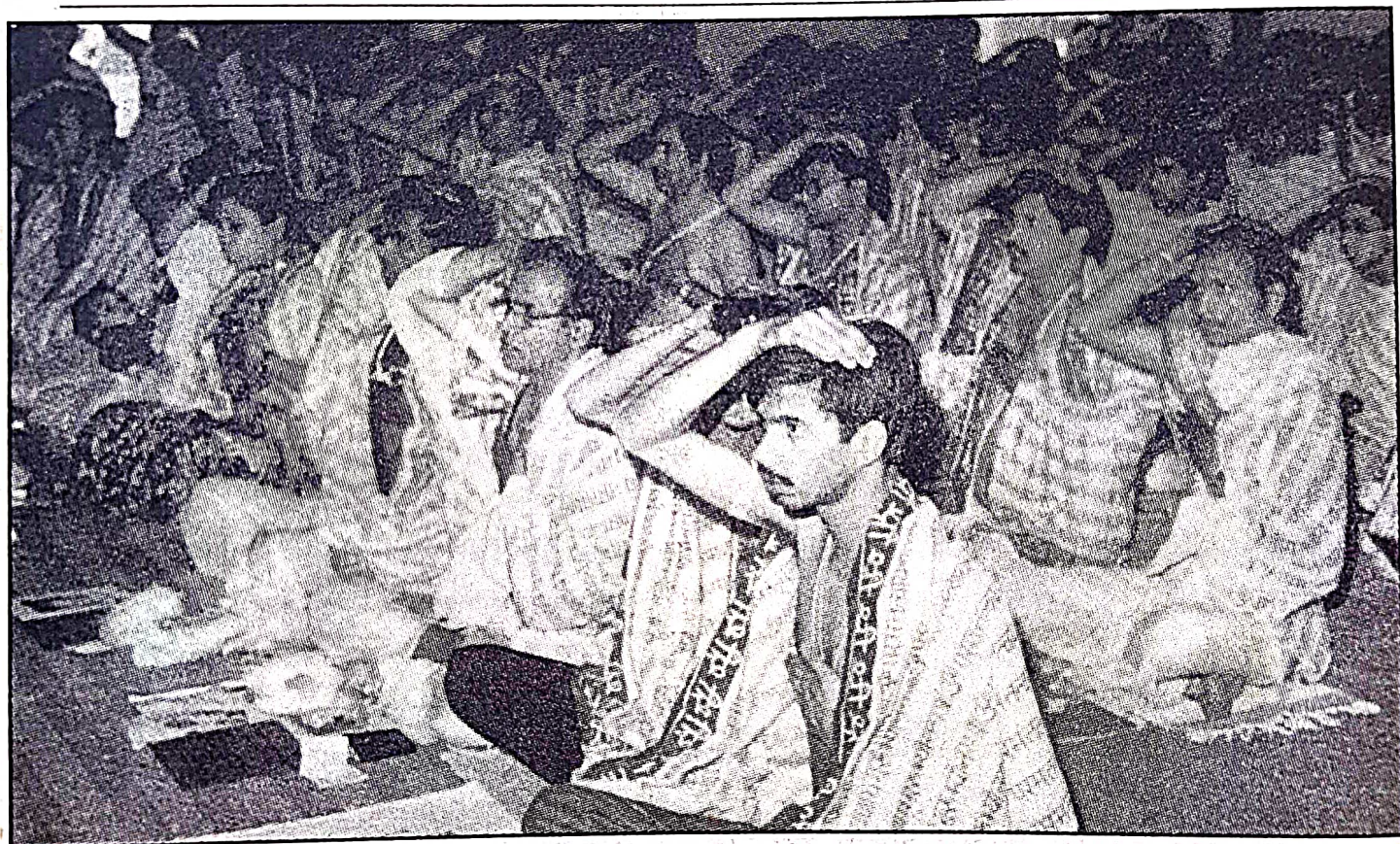
दीक्षा अर्थात् गुरु कृपा

श्री चरण-कमलों में साष्टांग नमन स्वीकार करें,

गुरुदेव मुझे ऐसा लगता है, कि आप प्रतिक्षण मेरे साथ हैं। मैं जब भी किसी कार्य के बारे में सोचता हूं, तब आपका स्मरण स्वतः होता है, और फिर आत्मा उस कार्य की सिद्धि-असिद्धि या और किसी भी प्रकार का प्रश्न हो, उसका हां या नहीं में 'अन्तर' से मुझे मार्ग दर्शन प्राप्त होता रहता है . . . और मुझे तब आश्चर्य होता है, जब वह कार्य या प्रश्न उसी प्रकार से संपादित होता है, जैसा आपकी हृदय-चेतना के माध्यम से संकेत मिलता है। हालांकि मैं उस स्थिति को तब समझ पाता हूं, जब वह कार्य सम्पन्न होता है और उस वक्त सिर स्वतः गुरु-चरणों में नमन करके धन्य-धन्य हो उठता है। गुरुदेव मुझे ऐसा लगने लगा है, कि जब से मैंने आपसे **ज्ञान दीक्षा, जीवन मार्ग दीक्षा, षोडशी दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** प्राप्त की है, तब से आप सूक्ष्म रूप में मेरे अन्तर् में बैठे हुए हैं।

हे प्रभु! मैं एक बार फिर से प्रार्थना करता हूं, कि मेरा रोम-रोम आपके चरणों में लीन हो जाय, बस इतनी सी कृपा अवश्य कर दीजियेगा।

ऋषभदेव जोशी,
कामराज नगर, महाराष्ट्र

जब बांह गहि गुरुदेव मिले

मैं आपकी पत्रिका की वार्षिक सदस्या हूं, मुझे पत्रिका के साथ **'महालक्ष्मी यंत्र'** उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ, जिसे मैंने पूजा स्थान में स्थापित कर दिया; पहले मैं कई विभिन्न डरावनी छायाओं को देख-देख कर डरती-डरती रहती थी, मैं ज्यों ही रात्रि को विश्राम करने के लिए लेटती, त्यों ही बुरे स्वप्न आकर मुझे घेर लेते, कभी ऐसा लगता, कि मेरी जेठानी या अन्य कोई स्त्री मुझे मारने की कोशिश कर रही हो, कभी ऐसा लगता, कि कोई तंत्र प्रयोग कर रहा है, कभी एकदम भयभीत कर देने वाले चित्र मेरी आंखों के सामने घूमने लगते।

हे गुरुदेव! आपकी आज्ञा से मैंने 'ज्वामालिनी प्रयोग' किया। प्रयोग के चार दिन बाद मैंने स्वप्न में देखा, कि बहुत सी काली छबियां मुझे घेर कर खड़ी थीं और मुझे बहुत भयानक ढंग से डरा रही थीं, स्वप्न में ही मैंने आपको पुकारा **''गुरुदेव मुझे बचा लो''** और **''ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः''** मंत्र का जप करने लगी, थोड़ी देर बाद धीरे-धीरे वे छबियां गुम हो गईं।

अब घर में व मन में जो अशांतता थी, वह धीरे-धीरे कम होती जा रही है, बुरे स्वप्न भी बंद हो गये हैं तथा मुझमें और मेरे पति के बीच अक्सर जो लड़ाई-झगड़े होते थे, वे बहुत कम हो गए हैं।

अब मुझे विश्वास है, कि हम पर चढ़ा हुआ कर्जा भी धीरे-धीरे उतर जायेगा।

सौ० अर्चना देशपाण्डे
रायगढ़, महाराष्ट्र

जब मां भगवती तारा ने दिव्य अंगूठी प्रदान की

मैं पहले आध्यात्मिकता में विश्वास करता था, परन्तु कुछ ऐसा देखा, कि धार्मिक स्थलों पर आध्यात्मिकता के नाम पर ढोंग, पाखण्ड, व्यभिचार का बोलबाला है, अतः मेरा विश्वास उठ गया। मैं पिछले दस वर्षों से कोई पूजा-पाठ या देवताओं की उपासना में बिलकुल विश्वास नहीं करता था।

अगस्त १९९४ में मैं अपने एक मित्र के आग्रह पर गुरुदेव से मिला, उसके बाद मेरे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आना शुरू हो गया। उदाहरण के लिए मैं शराब पीने का आदी था, इससे मेरी पत्नी परेशान रहती थी, घर में भी आर्थिक तंगी के कारण अशांति रहती थी। मैंने अपने गले में गुरुदेव का दिया हुआ **''महालक्ष्मी यंत्र''** पहिना, बस उसी दिन से मेरी शराब छूट गई। अब मेरी आर्थिक स्थिति भी सुधर रही है।

मैंने प्रथम वार कराला शिविर में भाग लिया, दूसरे दिन गुरुदेव शिविर में प्रवचन दे रहे थे, मुझे ऐसा लगा, कि मैं शिविर में न होकर किसी दिव्य लोक में हूं। उसी समय शून्य से गुरु चित्र के समक्ष एक अंगूठी आकर गिरी, उस पर हम पति-पत्नी की नजर पड़ी। मैंने अपने आस-पास के सभी गुरु-भाइयों से अंगूठी के वारे में पूछा, तो सभी ने अनभिज्ञता जाहिर की। मैंने यह वात गुरुदेव को बताई, तो गुरुदेव ने कहा कि समय आने पर तुझे सब कुछ बताऊंगा। उसी दिन ढाई बजे मेरी पत्नी को **''महालक्ष्मी जी''** ने दर्शन दिये और कहा, कि **''जो साधना की है, वह अधूरी है, उसे दुबारा करो।''** उसके बाद शिविर से घर आये एवं साधना प्रारम्भ की।

रात को एक बजे मेरी पत्नी नहा कर सोने के लिए लेटी थी एवं नींद नहीं आई थी, कि **अचानक किसी देवी ने हल्के गुलाबी परिधान में दर्शन दिये और कहा, कि– ''साधना के नियमों का उलंघन मत करो,''** तब हमने हाथ जोड़कर पूछा– **''कृपया बतलायें कि आप कौन हैं?''** देवी बोली– **''मैं तारा हूं एवं शिविर में मैंने तुम्हें दिव्य अंगूठी प्रदान की है, उसे धारण करो, मेरी साधना तुम नियम पूर्वक करो, उसमें कोई त्रुटि नहीं होनी चाहिए, शीघ्र साधना सम्पन्न करो, मैं तुम्हारे घर आना चाहती हूं, क्योंकि आपके गुरुदेव ने कराला शिविर में स्थापन संस्कार करा दिया है। अपनी अनुभूतियां किसी को मत बतलाना।''** ऐसा अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा।

उनका स्वरूप अत्यंत तेजस्वी एवं दिव्य सौन्दर्ययुक्त था। ऐसे नव जीवन की प्राप्ति एवं श्रेष्ठ अनुभूतियां परम पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से मुझ जैसे अविश्वासी, तुच्छ, व्यवसायी एवं अज्ञानी को हुईं, इसमें मेरे प्रभु साक्षात् सगुण ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पुञ्जीभूत स्वरूप **''स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी''** की ही कृपा है। मैं उन्हें ठीक से प्रणाम करना भी नहीं जानता, वे बिना कुछ कहे या मांगे भी बहुत कुछ दे देते हैं, फिर भी यह संसार उनकी कटु आलोचना करते नहीं थकता। मैंने कई आलोचकों को देखा-सुना, परन्तु आज मेरी वेदना को मेरे गुरुदेव यह कहकर मिटा देते हैं, कि तेरा लक्ष्य साधना कर जनकल्याण करना है, आलोचना से दुःखी होना नहीं।

भूतनाथ कालिन्दी
जय विहार, नई दिल्ली

आजमाया है और हजारों लोगों ने आजमाया है!

रूप, यौवन, सौन्दर्य एवं सम्मोहकता के लिए

सौन्दर्योत्तमा

चन्द्र सिद्धि प्रयोग

सौन्दर्य जीवन की महत्त्वपूर्ण चाहना है, इसके अभाव में हर व्यक्ति अपने-आप को अधूरा महसूस करता है–

''सौन्दर्यं समुपास्यते''

अर्थात् ''सभी प्राणि सौन्दर्य प्रिय हैं, क्योंकि यह प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक गुण है,'' अतः यह ''चन्द्र सिद्धि प्रयोग'' शुभ्र ज्योत्स्नित किरणों की भांति व्यक्ति या साधक के सौन्दर्य को चार चांद लगाने वाला अचूक प्रयोग है।

चन्द्रमा को सौन्दर्य का प्रतीक माना गया है, किसी भी सुन्दरता को मापने के लिए चन्द्रमा से उपयुक्त और कोई उपमान है ही नहीं। 'सौन्दर्य' काव्य का एक अभिन्न अंग है, इसे काव्य का एक मौलिक उपकरण कहा गया है। हमारे जितने भी कवि हुए हैं, उन्होंने अद्वितीय सौन्दर्य को चन्द्रमा के समान ही तेजस्विता एवं शीतलता प्रदान करने वाला बताया है, और सम्पूर्ण काव्य तो रचा ही सौन्दर्य पर है, किसी कवि ने ''प्राकृतिक सौन्दर्य'' की बात कही है, तो किसी ने ''नारी सौन्दर्य'' को आंकने का प्रयास किया है।

सौन्दर्य, कला और साहित्य
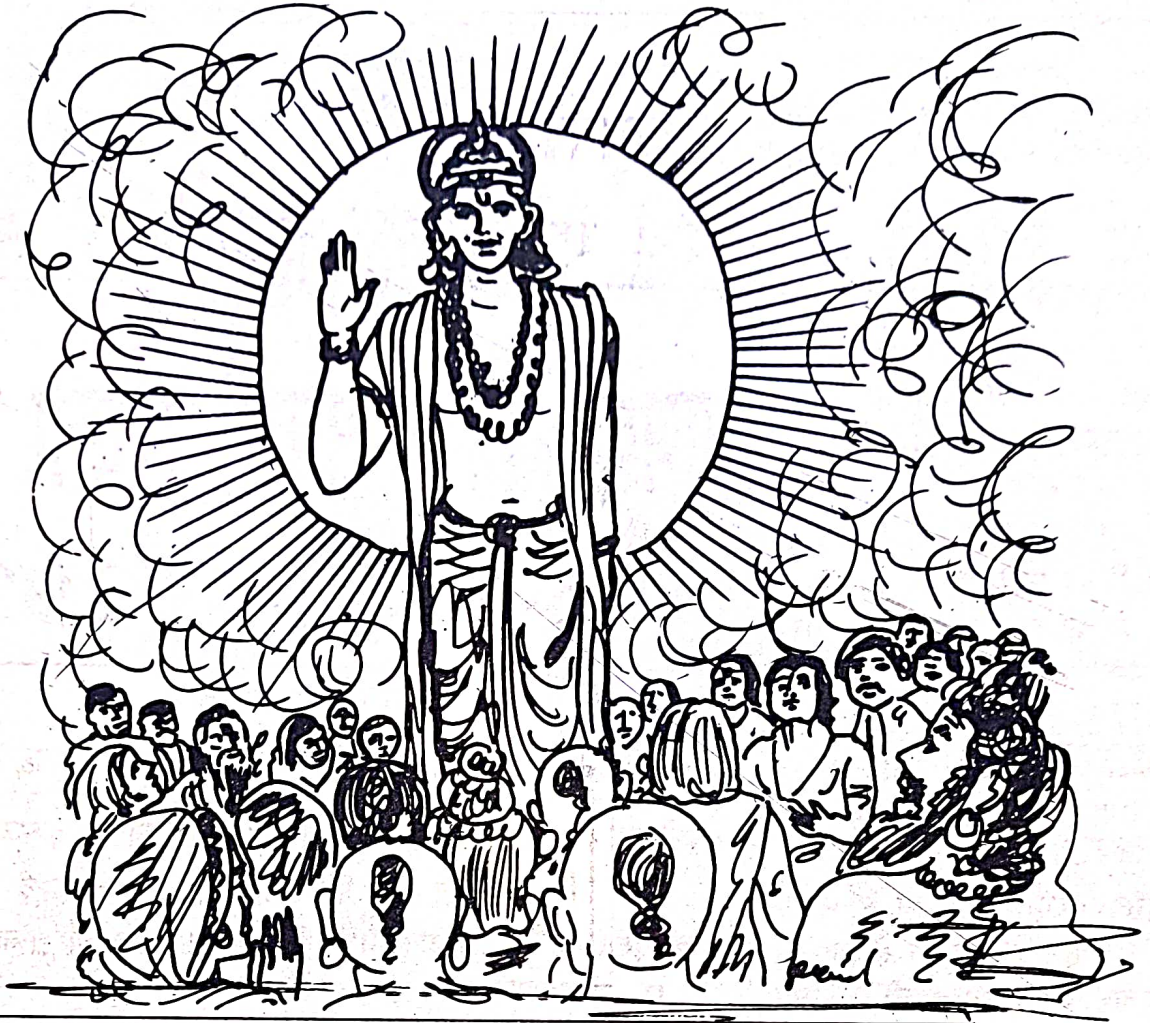
का प्राण है। **सौन्दर्य कुछ व्यक्तियों के अनुसार मनुष्य के भाव-जगत् की उपज है।** सौन्दर्य मन की वस्तु है, वास्तव में सुन्दर वस्तु से पृथक सौन्दर्य कोई चीज नहीं है, कोई रूप-रंग ऐसा होता है, जो हमारे हृदय को प्रभावित कर लेता है। प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-मुनि सौन्दर्य के प्रति बड़े सजग रहे हैं। सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने अनेकों सौन्दर्य साधनाएं व तप किये, जिससे कि वे एक तेजस्वी एवं प्रखर व्यक्तित्व प्राप्त कर सके और इन साधनाओं के कारण ही वे पूर्ण आनन्दयुक्त जीवनयापन कर सके।

सौन्दर्य एक ऐसी वस्तु है, जिसे देखकर व्यक्ति के चेहरे से तनाव की रेखाएं स्वतः ही समाप्त होने लगती हैं, और वह मानसिक तनावों से कुछ क्षणों के लिए अपने-आप को मुक्त पाता है, उसे एक अपूर्व शांति व मादकता प्राप्त होने लगती है। वैसे तो वास्तविक सौन्दर्य आंतरिक मन की आनन्दानुभूति को कहते हैं, किन्तु आन्तरिक सौन्दर्य को प्रदर्शित करने तथा सुपरिभाषित करने के लिए बाह्य सौन्दर्य की आवश्यकता भी होती है। आंतरिक से ज्यादा मनुष्य को बाह्य सौन्दर्य ही सर्वप्रथम अपनी ओर आकर्षित करता है।

यह एक ऐसा शब्द है, जो मन में प्रसन्नता, आह्लाद व आनन्द का उद्वेग भर देता है। ''सौन्दर्य'' शब्द से ही ''प्रेम'' शब्द बना है और प्रेम ही जीवन है, वस्तुतः सौन्दर्य सम्पूर्ण जीवन का आधार है। तभी तो कहा गया है— **''जिसे देखकर दिल धड़कना बंद कर दे, नाड़ी का स्पन्दन रुक जाय, वही ''सौन्दर्य'' है।''**

यूं तो पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंगे और मनुष्य सभी ईश्वर की बनाई हुई सुन्दर कृतियां हैं, किन्तु वह सौन्दर्य तब तक फीका है, जब तक वह सम्पूर्णता लिए हुए न हो. . .फूल बगिया में खिलकर, कोयल पेड़ पर स्वर गान करते हुए और नारी अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त कर ही सम्पूर्ण सौन्दर्य के प्रतिमान कहलाते हैं।

अनेक ग्रन्थों में सौन्दर्य की विस्तृत विवेचना तथा सौन्दर्य-वृद्धि किस प्रकार की जा सकती है, वर्णित है, किन्तु समय के साथ-साथ वह ज्ञान लुप्त होता चला गया, व्यक्ति भौतिकता में इतना लिप्त हो गया, कि वह वास्तविक सौन्दर्य को प्रदान करने वाली औषधियों, ऋषियों-मुनियों द्वारा प्राप्त किये गये उपायों व मंत्र-जप की

अपेक्षा नकली सौन्दर्य के भुलावे में पड़कर उसे ही वास्तविक सौन्दर्य जान ब्यूटी पार्लर व नकली सौन्दर्य प्रसाधनों के चक्कर में फंस गया, जिसके परिणामस्वरूप उसे सौन्दर्य तो प्राप्त हुआ, लेकिन कुछ ही क्षणों के लिए, जिसने धीरे-धीरे उसके मूल सौन्दर्य को भी समाप्त कर दिया और सिवाय पछताने के अब उसके पास और कोई उपाय नहीं रह गया, जो उसे पुनः सौन्दर्यवान बना सके।

किन्तु ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रदत्त इस **''चन्द्र सिद्धि प्रयोग''** के माध्यम से असुन्दरता के कारण व्याप्त हीन भावना को मन से हमेशा-हमेशा के लिए दूर किया जा सकता है; और वापिस अपने मूल सौन्दर्य को, जो नकली प्रसाधनों के उपयोग से समाप्त हो गया था, प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रयोग के माध्यम से कुरूप को भी सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है। **जिस प्रकार चन्द्रमा अपनी चांदनी के प्रताप से घोर अन्धकार को दूर हटा कर अपनी शुभ्र ज्योत्स्ना से विश्व को प्रकाशवान करता है, उसे रोशनी प्रदान करता है, उसी प्रकार इस प्रयोग के माध्यम से कैसी भी कुरूपता हो मंत्र-शक्ति के प्रभाव से चन्द्र किरणें उस साधक या साधिका की कुरूपता को समाप्त कर उसके शरीर का मानो पूर्ण कायाकल्प ही कर देती हैं।** वह स्वयं कुछ ही दिनों के भीतर अपने अन्दर आश्चर्यजनक व अद्‌भुत परिवर्तन को महसूस करने लग जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि चन्द्रमा मन का देवता है और केवल उसे ही आयुर्वेदिक औषधियों का सम्पूर्ण ज्ञान है, अतः उसकी उपासना करने पर वह अंतर् और बाह्य दोनों प्रकार का सौन्दर्य प्रदान कर साधक को पूर्ण सौन्दर्य युक्त बना देने में सक्षम है, क्योंकि वह स्वयं भी सौन्दर्य का एक जीवंत उदाहरण है।

''संस्कृत'' में सौन्दर्य की परिभाषा इस प्रकार है— **''जो क्षण-क्षण परिवर्तित हो, और वह भी नित-नये रूप में, वही सौन्दर्य है।''** चन्द्रमा भी कभी दूज के चांद, कभी द्वादश के चांद, तो कभी पूर्णमासी के चांद के रूप में समय-समय पर नित-नये रूप में अपने सौन्दर्य को परिवर्तित कर इस सम्पूर्ण जगत् को अपने सौन्दर्य की छटा व शीतलता प्रदान करने वाली शुभ्र किरणों के माध्यम से सम्मोहित करता रहता है, जिसे देखकर बड़े-बड़े शायरों ने शायरी लिखी, कवियों ने कविताओं की रचना की, सौन्दर्य प्रेमियों ने अपने हृदय की व्यथा को इसके सामने कह सुनाया, जितनी भी मिलन की गाथायें लिखी गईं, वे सारी चांदनी की ओट में छिपकर ही लिखी गईं।

यह बात मिथ्या नहीं है, कि ''चन्द्र सिद्धि प्रयोग'' के माध्यम से रूप, यौवन, सौन्दर्य एवं सम्मोहकता को प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि इसका प्रमाण हैं वे लोग, जिन्होंने इस प्रयोग को सम्पन्न किया है और अद्‌भुत एवं विलक्षण सफलता को प्राप्त किया है। यह एक-दो नहीं, अपितु हजारों लोगों द्वारा प्रमाणित एवं सुपरीक्षित सिद्धि प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करें और लाभ प्राप्त न हो, ऐसा तो सम्भव ही नहीं है।

प्रयोग विधिः

१. दिव्य मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठा किया हुआ **''चन्द्रेश यंत्र''**, **''चन्द्रकला गुटिका''** तथा **''दिव्य आह्लादिनी माला''** ये सामग्री साधक के पास प्रयोग करने से पूर्व एकत्रित होनी चाहिए।

२. **२७.९.९५ आश्विन शुक्ल पक्ष, बुधवार की रात्रि ८.३५ से १२ बजे के मध्य** यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। यदि किसी कारणवश उस दिन प्रयोग न कर पायें, तो किसी भी **सोमवार** के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

३. इस प्रयोग में **पश्चिम दिशा** की ओर मुंह करें तथा **श्वेत आसन** पर **श्वेत वस्त्र** धारण करके बैठ जायें।

४. इस प्रयोग को साधक किसी ऐसे स्थान पर बैठकर सम्पन्न करें, जहां चन्द्रमा की किरणें उस पर पड़ सकें।

५. चन्द्रमा की ओर मुंह करके खड़े होकर एक लोटे में जल लें, उसमें अक्षत और पुष्प डाल दें, चन्द्रमा को निम्न मंत्र बोलकर **७ बार अर्घ्य दें**–

''ॐ चन्द्रमसे नमः''

६. इसके बाद कुंकुम, अक्षत व पुष्प समर्पित कर चन्द्रमा का पूजन करें।

७. पूजन के बाद शांत भाव से खड़े होकर ही चन्द्रमा पर **१० मिनट त्राटक** करते हुए अपने इष्ट स्वरूप का चिन्तन करें।

८. इसके बाद आसन पर बैठकर अपने सामने एक बाजोट पर ''चन्द्रेश यंत्र'' को स्थापित कर दें, फिर उसे शुद्ध जल से धोकर, पोंछकर केसर का तिलक करें तथा अक्षत चढ़ाएं, फिर गुलाब की पंखुड़ियों की यंत्र पर वर्षा करें तथा धूप व दीप दिखायें।

९. इसके पश्चात् उस यंत्र पर **१०८ बार** निम्न मंत्र को बोलते हुए **दुर्वा** और **अक्षत** चढ़ायें–

''ॐ रसेश्वराय ॐ''

१०. ''चन्द्रकला गुटिका'' अपने दाहिने हाथ में ले लें तथा चावल के कुछ दाने भी साथ रखें, फिर चन्द्रमा की ओर दाहिना हाथ वढ़ाकर यह चिन्तन करें, कि चन्द्रमा की दिव्य कलायें इसमें समाहित हो रही हैं, तत्पश्चात् गुटिका को यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें। गुटिका का भी कुंकुम से तिलक कर अक्षत व पुष्प से पूजन करें।

११. इसके बाद शुद्ध दूध से बनी खीर को ऐसे स्थान पर रख दें, जहां चन्द्रमा की किरणें उस पर सीधे पड़ें, पूरे साधना काल तक, जब तक कि मंत्र-जप समाप्त न हो।

१२. फिर दोनों हाथों में श्वेत पुष्प लेकर निम्न मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर **पुष्पांजलि** समर्पित करें।

मंत्र

''ॐ राजाधिराजाय चन्द्रेशाय नमः''

१३. पूजन के बाद साधक दत्त चित्त होकर ''दिव्य आह्लादिनी माला'' से निम्न मंत्र का **११ माला जप** करें-

मंत्र

ॐ सौन्दर्यप्रदायै चन्द्रायै श्रीं ह्रीं श्रीं नमः

१४. मंत्र-जप करते समय साधक मन में यह भाव अवश्य रखें, कि चन्द्रमा की अमृतमय किरणें उस यंत्र से टकराकर सीधे हृदय में प्रवेश कर रही हैं।

१५. जप समाप्ति के बाद भगवान चन्द्रदेव को दोनों हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक नमन करें और प्रार्थना करें, कि हे चन्द्रेश! इस प्रयोग से मेरी इच्छित मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण हो, ऐसा कहकर, उस गुटिका को लाल धागे में बांधकर अपने गले में धारण कर लें।

१६. इसके बाद उस माला को भी इसी भावना के साथ तीन महीने तक धारण किये रहें, किन्तु यंत्र को प्रयोग समाप्ति के पश्चात् दूसरे दिन प्रातः किसी नदी, तालाब अथवा कुंए में प्रवाहित कर दें।

१७. तीन महीने के पश्चात् उस गुटिका एवं माला को भी इसी प्रकार जल में प्रवाहित कर देना चाहिए।

ऐसे गोपनीय एवं दुर्लभ प्रयोग को, जिसे योगीराज **''स्वामी श्रीधरानन्द जी''** ने अपने कुछ अत्यंत प्रिय शिष्यों को ही प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में किसी एकांत क्षण में बताया था, वही प्रयोग आज पुनः साधकों की हित कामना के लिए दिया गया है, जिससे प्रत्येक साधक इस प्रयोग को सम्पन्न कर लाभ प्राप्त कर सके।

इस प्रयोग से अवश्य ही साधक के सौन्दर्य में अभिवृद्धि होगी ही, और वह एक दिव्य, ओजस्वी एवं तेजयुक्त व्यक्तित्व को प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगा।

साधना-सामग्री न्योछावर :

चन्द्रेश यंत्र - २४०/-
चन्द्रकला गुटिका - ६०/-
दिव्य आह्लादिनी माला - १५०/-

सुखमय, आनन्दमय जीवन के क्षणों में जब विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते. . . यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाय

* बार - बार ट्रांसफर की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों
* निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
* शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
* कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
* पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
* विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाय
* घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
* ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
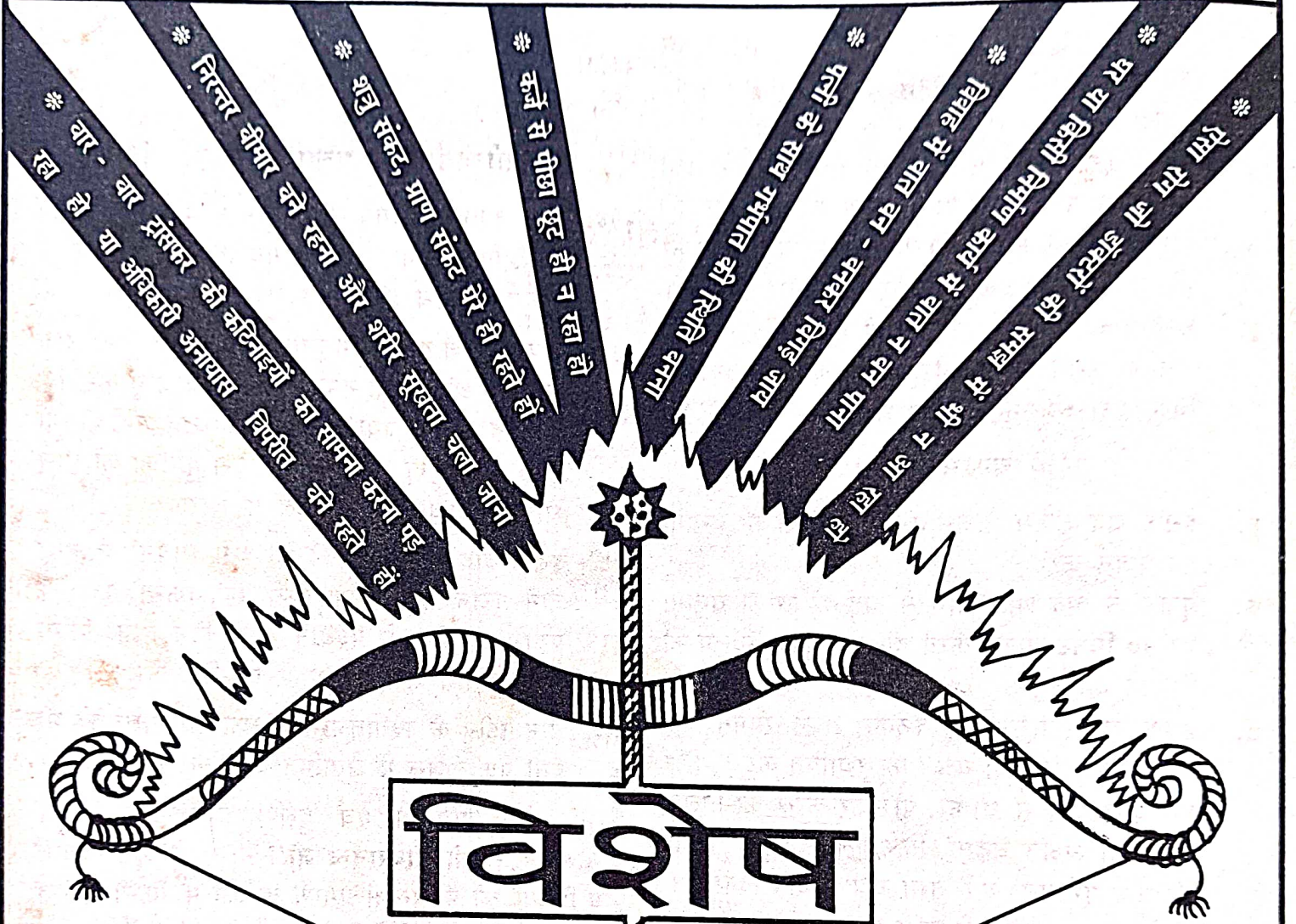
विशेष

तंत्र रक्षा कवच

या फिर झगड़े- झंझटों में बार-बार फंस जाना, मुकदमेबाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **मंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।** संस्थान के योग्य विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्रसिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - 11000/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209,फेक्सः 0291-32010
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

चाक्षुष्मती स्तोत्र

गत अंक (**अगस्त ९५**) में प्रकाशित लेख **"साधना-सफलता"** के अन्तर्गत "अब नेत्रहीन व्यक्ति भी देख सकते हैं" में जिस "चाक्षुष्मती स्तोत्र" की चर्चा की गई थी, वह उन नेत्रहीन व्यक्तियों के लाभार्थ हेतु यहां प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसका नित्य **११ बार पाठ** करने पर नेत्र-रोगों से तो मुक्ति मिलती ही है, साथ ही नेत्र-ज्योति में भी वृद्धि होने लगती है।

चाक्षुष्मती स्तोत्र

ॐ चक्षुश्चक्षुः तेजः स्थिरो भव, मां पाहि पाहि,
त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमय,
मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय,
यथाहं अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय,
कृपया कल्याणं कुरु कुरु,
मम यानि यानि पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षु प्रतिरोधकदुष्कृतानि,
तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।
ॐ नमश्चक्षु श्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय,
ॐ नमः करुणाकरायामृताय,
ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय अक्षितेजसे नमः,
ॐ खेचराय नमः, ॐ महासेनाय नमः,
ॐ तमसे नमः, ॐ रजसे नमः, ॐ सत्वाय नमः,
ॐ असतो मा सद्गमय, ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय,
ॐ मृत्यो र्माऽमृतं गमय,
उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् प्रतिरूपः।

ॐ विश्वरूपे घृणिंन जातवेदसे हिरण्मये ज्योतिरूपं तपन्तम्।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानाम् उदयत्येष सूर्यः।।

ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय आदित्याय अक्षितेजसेऽहो वाहिनि स्वाहा।

ॐ वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं, प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुः, मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्।।

ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः, ॐ पुष्करेक्षणाय नमः,
ॐ कमलेक्षणाय नमः, ॐ विश्वरूपाय नमः,
ॐ श्री महाविष्णवे नमः, ॐ सूर्यनारायणाय नमः।

ॐ शान्तिः। शान्तिः।। शान्तिः।।।

इस दुर्लभ स्तोत्र का नियमित एवं श्रद्धायुक्त पाठ करने से साधक उस नयनाभिराम सुखद एवं मनोहर प्रकृति के सौन्दर्य को परखने की, देखने की, जो उसका प्रभु प्रदत्त अधिकार है, जिसे वह दुर्भाग्यवश खो बैठा था, प्राप्त कर लेता है।

नवरात्रि में दी जाने वाली दीक्षाओं का विशेष महत्त्व

जीवन का प्रवाह जल जैसा है, जो नीचे की ओर ही प्रवाहमान होता है. . . जिस प्रकार जल नीचे की ओर ही बहता है, उसी प्रकार जीवन अधोगामी होता है. . . उसे जरूरत है अग्नि की भांति ऊर्ध्वगामी बनाने की, जिस प्रकार अग्नि को नीचे करके जलाने पर भी वह हमेशा ऊर्ध्वगामी रहती है . . . उसमें ऊपर उठने की क्रिया है . . . ठीक यही क्रिया सम्पन्न होती है दीक्षा के माध्यम से . . .

नवरात्रि अपने-आप में साधनात्मक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण पर्व है और देखा जाय तो, पूरा भारतवर्ष इन नौ दिनों में पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण से ओत-प्रोत होता है। नवरात्रि का प्रत्येक दिवस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि ये व्यक्ति के पूरे जीवन चक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए इन दिनों में किसी भी प्रकार का किया गया कार्य अपने-आप में पूरे वर्ष भर फलप्रद होता है।

''दीक्षा'' एक सामान्य घटना नहीं है, अपितु दीक्षा
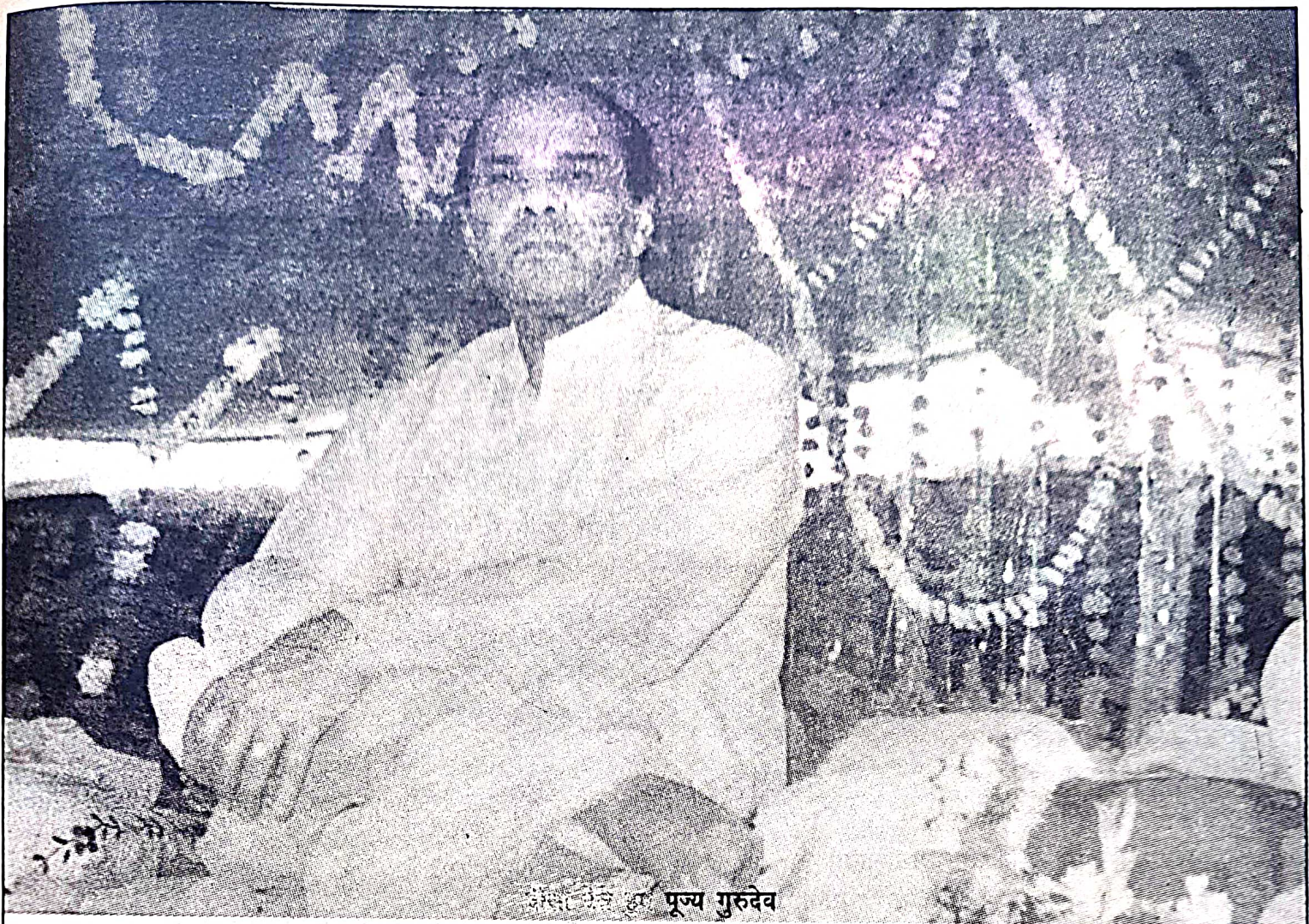
पूज्य गुरुदेव

तो जीवन का श्रेष्ठतम कार्य है, और बहुत प्रयत्न करने पर जब गुरु प्रसन्न होते हैं, तभी वे अपनी तपस्या का अंश शिष्य को देते हैं, जिससे वह उन दीक्षाओं को प्राप्त करके अपने जीवन की समस्याओं को सुलझा सके। अतः दीक्षा को रुपयों से नहीं तोला जा सकता, दीक्षा के बारे में आलोचना करना भी अपने-आप में पाप और दोष होता है, और उस दोष से जो दुर्भाग्य होता है, उसे हमें झेलना ही पड़ता है।

यूं तो दीक्षा सैकड़ों पण्डे-पुरोहित, साधु-संन्यासी दे सकते हैं, पर शास्त्रों में यह विधान है, कि दीक्षा देने का अधिकारी वही होता है, जो वास्तव में ही तपस्या से युक्त हो, जो वास्तव में ही देवत्व युक्त हो, जो वास्तव में ही गुरुत्व प्राप्त हो; और इसी प्रकार दीक्षा प्राप्त करने का अधिकारी भी केवल वही होता है, जिसके मन में दीक्षा के प्रति, अपने गुरु के प्रति पूर्ण आस्था, विश्वास और निष्ठा होती है। आप ऐसे ही श्रद्धावान शिष्य हैं और आप जैसे शिष्यों पर पूरी संस्था को अपने-आप में गर्व है।

शास्त्रों में कहा गया है कि नवरात्रि के दिन अपने-आप में वेदों की पावनता और दिव्यता समेटे हुए, पूरे वर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए उसका प्रत्येक क्षण अपने-आप में कीमती होता है और इन दिनों में जो भी साधना या दीक्षा प्राप्त की जाती है, वह तो पूर्ण सिद्धिप्रद होती ही है, यूं तो साल भर में कभी भी, कोई भी दीक्षा ली जाय, वह सिद्धिप्रद तो होती ही है, किन्तु इन विशिष्ट दिनों में प्राप्त की गई दीक्षा जीवन का अहोभाग्य कहलाती है।

मैं ये पंक्तियां इस वजह से नहीं लिख रहा हूं, कि आप दीक्षा प्राप्त करें ही, मैं तो केवल आपको यह बताना चाहता हूं, कि इन दिनों में दीक्षा लेने का क्या महत्त्व है?

ये दिन अपने-आप में तेजस्विता युक्त हैं, और इन दिनों सम्पूर्ण विश्व में भगवती जगदम्बा की चेतना व्याप्त होती है, इसलिए नवरात्रि का प्रत्येक दिन, प्रत्येक क्षण अपने-आप में मूल्यवान, चेतनावान और अद्वितीयता प्रदायक है।

मैं कई सालों से देखता आ रहा हूं कि नवरात्रि में पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों को इस पर्व का पूर्ण फल प्रदान करने के लिए प्रयासरत रहते हैं, अतः वे आप से मिलते हैं, साधना करवाते हैं और उसके बाद यदि कुछ

दीक्षा का तात्पर्य मंत्रों का प्रदान मात्र नहीं है. . . यह तो एक अद्वितीय क्रिया है, अविस्मरणीय क्रिया है, काल के भाल पर अंकित होने वाला अद्वितीय क्षण है. . . बूंद का सागर में या सागर का बूंद में मिलन है।

दीक्षा प्राप्त करने के बाद शिष्य का गुरु में मिलन होता है या गुरु का शिष्य में समाहितीकरण की क्रिया होती है. . . दोनों ही शब्द गुरु और शिष्य भाषा की दृष्टि से एक दूसरे के पर्याय बन जाते हैं. . . गुरु के सारे ज्ञान का शिष्य अधिकारी बन जाता है . . . गुरु, दीक्षा के माध्यम से शिष्य को अपने समकक्ष बनाने की क्रिया करता है और प्रयास करता है कि शिष्य इसी जन्म में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में पूर्णता प्राप्त करे।

समय बचता है, उसे अपनी साधनाओं में व्यय करते हैं। मैंने तो इन दिनों में उन्हें नींद लेते हुए कम ही देखा है, या यूं कहूं कि देखा ही नहीं है। इन दिनों वे अपने ऊपर से माया का आवरण आंशिक रूप से कम कर देते हैं, जिसके कारण उनकी तपः ऊर्जा अन्य दिनों की अपेक्षा तीव्रता से निस्सृत होती रहती है, ऐसे समय में यदि हम उनकी तपस्या का अंश प्राप्त करते हैं, तो वे क्षण हमारे जीवन का पुण्योदय होता है, और उन क्षणों में दीक्षाओं को प्राप्त करके हम जीवन की उन समस्याओं को निश्चय ही मिटा सकते हैं, जो भौतिक हैं, आध्यात्मिक हैं, दैविक हैं या दैहिक हैं, चाहे वह कैसी भी समस्या हो, बीमारी से सम्बन्धित हो, धन से सम्बन्धित हो, आर्थिक सम्पन्नता से सम्बन्धित हो या सिद्धाश्रम प्राप्ति से सम्बन्धित इच्छा हो।

अस्तु, हमें प्रयत्न करके भी गुरुदेव के पास पहुंचना ही चाहिए। इन दिनों में हम जो भी दीक्षा प्राप्त करेंगे या प्रयोग सम्पन्न करेंगे, वे अपने-आप में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे ही, इसमें कोई सन्देह नहीं, इसलिए हमें चाहिए कि हम इन चार दिनों में ज्यादा-से-ज्यादा दीक्षा प्राप्त करें, ज्यादा-से-ज्यादा प्रयोग सम्पन्न करें और अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को अपने-आप में तेजस्विता युक्त बना दें।

प्राचीन काल में मनुष्य बीस-बीस साल तक साधना कर लेते थे, मगर आज व्यक्ति इतना समय साधना आदि क्रियाओं में व्यतीत नहीं कर पाता, ऐसे समय में गुरु, शिष्य को अपनी तपस्या का अंश देकर, उसका ९० प्रतिशत कार्य दीक्षाओं के माध्यम से पूर्ण कर, उसकी समस्याओं का समाधान कर ही देते हैं, बाकि १० प्रतिशत ही कार्य शिष्य को स्वयं करना होता है। सफलता प्राप्त करना तो आप पर ही निर्भर करता है, गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा, अटूट आस्था, मंत्र के प्रति विश्वास होने पर ही आप सफलता के नजदीक पहुंच सकते हैं।

मैं गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना कर यह लेख लिख रहा हूं, वह इसलिए कि गुरु भाइयों को पूरी चेतना प्राप्त हो सके, वह ज्ञान प्राप्त हो सके, कि हमें नवरात्रि के नौ दिनों का किस प्रकार से उपयोग करना चाहिए।

शिविरों में गुरुदेव द्वारा प्रदान की जाने वाली दीक्षा से प्राप्त धनराशि के सम्बन्ध में कई लोगों के द्वारा आलोचना सुनने को मिलता है, कि ये तो धन-संग्रह का एक जरिया है। ऐसे लोगों के दिमाग के जाले को साफ करने के लिए हम यह स्पष्टतः बता रहे हैं कि दीक्षा से प्राप्त धनराशि, जहां पर भी शिविर लगता है, वहां की जो "सिद्धाश्रम साधक परिवार" की शाखा है, वह उससे टेन्ट, भोजन, लाइट आदि की व्यवस्था करती है, और इसके बाद भी यदि वह धनराशि बच जाती है, तो उसका उपयोग दान या साधनात्मक भवन निर्माण आदि कार्यों में किया जाता है, इसका एक भी पैसा गुरुदेव स्वयं के लिए व्यय नहीं करते।

जो लोग इसके बारे में आलोचना करते हैं या भ्रमित करते हैं, तो ये उनकी बुद्धिहीनता या अल्पबुद्धि का ही परिणाम है, कि वे इस विषय को किस ढंग से ले पाते हैं। मैंने पिछले अंकों में भी लिखा है, कि हिमालय की भी आलोचना की जा सकती है, क्योंकि आलोचना करने वाला तो आलोचना करता ही है; परन्तु हमें चाहिए कि हम अपनी बुद्धि को शांत और स्थिर रखें; और यदि सोचें, तो हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं, कि यह जीवन यदि हमें प्रभु ने दिया है, तो पूर्णता तक पहुंचे ही, और पूर्णता तक पहुंचने का एक ही सुगम मार्ग है, उसे शास्त्रों में "दीक्षा" कहा गया है।

यूं तो अनेकों दीक्षाएं होती हैं, किन्तु कुछ ऐसी विशेष दीक्षाएं हैं, जिनको प्राप्त करने पर जीवन के हर पाप-ताप, दारिद्र्य, कष्ट, अभाव, बुद्धिहीनता, अज्ञानता, अंधकार सभी कुछ समाप्त हो जाता है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि आप अन्य प्रकार की दीक्षाएं प्राप्त ही न करें, वे दीक्षाएं तो फिर भी प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु ये दीक्षाएं अपने-आप में विशेष महत्त्वपूर्ण हैं, जो कि हमारे पूरे जीवन को पूर्णता देने के लिए आवश्यक मानी गई हैं।

किसी भी कार्य की पूर्णता, सम्पन्नता, श्रेष्ठता के लिए दीक्षा प्राप्त की जा सकती है। यहां जिन अट्ठारह दीक्षाओं के नाम दिये जा रहे हैं, यदि आपने वे पहले से ले रखी हैं, तो भी दूसरी बार लें, तीसरी बार लें। कई बार ऐसा होता है, कि हमारे पूर्वजन्म के दोष या पाप इस जीवन में आड़े आते हैं, तो तीसरी, चौथी बार. . . तब तक प्रयत्न करना चाहिए, जब तक कि सफलता नहीं मिल जाती।

नवरात्रि में प्रमुखतः प्रदान की जाने वाली दीक्षाएं निम्न हैं—

१. **ज्ञान दीक्षा,**
२ **जीवन मार्ग दीक्षा,**
३. **पूर्ण सिद्धि दीक्षा,**
४. **गृहस्थ सुख-सौभाग्य दीक्षा,**
५. **अकाल मृत्यु निवारण दीक्षा,**
६. **गर्भस्थ बालक को चेतना दीक्षा,**
७. **महालक्ष्मी दीक्षा,**
८. **मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा,**
६. **भौतिक जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्ति दीक्षा,**
१०. **गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा,**
११. **सिद्धाश्रम प्राप्ति दीक्षा,**
१२. **परम गुरु स्वामी सच्चिदानन्द प्राप्ति दीक्षा,**
१३. **पूर्वजन्मकृत पाप-दोष निवारण दीक्षा,**
१४. **योग्य पुत्र प्राप्ति दीक्षा या पुत्रोन्नति दीक्षा,**
१५. **साधना, सिद्धि एवं सफलता दीक्षा,**
१६. **गुरुदेव एकाकार प्राप्ति दीक्षा,**
१७. **आने वाली बाधा, विपत्ति, दुःख और कष्ट निवारक दीक्षा,**
१८. **सम्पूर्ण ऐश्वर्य युक्त महालक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा।**

इन सभी दीक्षाओं को आप अपने लिए, अपने परिवार के किसी सदस्य के लिए भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आपके परिवार का सदस्य आने में असमर्थ है, तो आप उसके फोटो द्वारा उसे दीक्षा दिला सकते हैं।

इस शिविर के बाद आप इस बात को स्वतः अनुभव करेंगे, कि वास्तव में ही दीक्षा भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन की पूर्णता का एकमात्र आधार है, जो हमारे सुखी एवं आनन्ददायक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है, इस बात को तो वे ही समझ सकते हैं, जिनके जीवन में इन दीक्षाओं का समावेश हुआ हो या फिर वे जिनके जीवन में ऐसी अद्भुत, अनिवर्चनीय घटना घटेगी, जो उन्हें आश्चर्यचकित कर देगी।

मूल बात तो यह है, कि हम नवरात्रि के दिनों का सदुपयोग करें, जहां पर भी गुरुदेव हों, उनके पास पहुंचे ही, और उनसे दीक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को सौभाग्यप्रद बनायें।

३१.१०.६५

प्रेम, माधुर्य और एक-

राधा प्रयोग

''देवी भागवत्'' की दृष्टि से राधा पांच प्राणों की अधिदेवी होने के कारण पांचवीं प्रकृति बतलायी गई हैं, और परमानन्द स्वरूपा वे श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा की एकात्मिका शक्ति देवी हैं, जो सुन्दरियों में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मानी जाती हैं, श्रीकृष्ण के ही अंग से प्रकट होने के कारण कृष्णमयी हैं, वे परमाद्या, सनातनी, गोलोकवासिनी, विश्ववन्दनीया, परमाह्लादरूपा एवं शक्ति स्वरूपा हैं।

दुर्गा, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री ये

दूसरे में समा जाने का लघु प्रयोग है

पांच प्रकृति हैं, उनमें सर्व शक्तिमान स्वरूपा दुर्गा, सर्व सम्पत्स्वरूपा लक्ष्मी, सर्व विद्यारूपा सरस्वती, शुद्ध सत्वस्वरूपा सावित्री तथा परमानन्द स्वरूपा राधा पूर्णेश्वरी मानी गयी हैं।

श्रीकृष्ण और राधा दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं, दोनों एक ही हैं, केवल लीलावश दोनों भिन्न दिखाई देते हैं। श्रीकृष्ण की उपासना करने से जो-जो कार्य सफल होते हैं, जो-जो फल प्राप्त होते हैं, वे राधा की उपासना से अल्पकाल में ही सिद्ध हो जाते हैं, ऐसा **''नारदपांचरात्र''** में वर्णित है—

आराध्य सुचिरं कृष्णं यद्यत्कार्यं भवेन्नृणाम्।
राधोपासनया तं च भवेत् स्वल्पेन कालतः।।

श्री राधा प्रेम और भक्ति की प्रतीक हैं, जिस प्रकार अनन्य भक्ति और घोर तपस्या-आराधना कर श्री राधा ने भगवान श्रीकृष्ण को अपने वश में कर लिया था, ठीक उसी प्रकार श्री राधा जी की साधना-आराधना कर... जो कोई **''राधा प्रयोग''** को सम्पन्न करेगा, उसे भी अपने प्रेमी की प्राप्ति उसी प्रकार हो सकेगी।

ह्लादिन्या संविदाश्लिष्टः सच्चिदानन्द ईश्वरः।
स्वाविद्यासंवृतो जीवः संक्लेश निकराकरः।।

अर्थात् ''श्रीकृष्ण ह्लादिनी शक्ति से आलिंगित होकर विराजमान हैं। सदानन्द रूप श्रीकृष्ण में जो आनन्द तत्त्व है, वही ह्लादिनी शक्ति की वृत्ति है, जिसके बिना भगवान स्वयं सर्व समर्थ होने पर भी आनन्द का रसास्वादन नहीं कर सकते, जैसे— **सुन्दर खाद्य पदार्थ घी, खाण्ड से युक्त होकर आनन्दप्रद होता है, ठीक उसी प्रकार श्रीकृष्ण आह्लादिनी शक्ति से संसर्गित होकर अपने को आनन्दित करते हैं तथा**

राधा तू बड़िभागिनी कौन तपस्या कीन्ह।
तीन लोक के अधिपति सो तेरे आधीन।।

राधा प्रेम का साक्षात् स्वरूप हैं, यह प्रयोग साधक को प्रेम के उस अंतिम सोपान का स्पर्श कराकर के अलौकिकता का दिग्दर्शन कराने वाला है।

चकवी चकवे के बिना अधूरी है, चांदनी चांद के बिना महत्त्वहीन है, सूर्य के बिना कमल का सौन्दर्य हेय सा हो जाता है... राधा को कृष्ण से कभी भी भिन्न नहीं देखा जा सकता, क्योंकि दोनों ही एकात्म रूप से प्रेम का ज्वलंत स्वरूप हैं।

... यह प्रयोग सच्चे प्रेमियों के लिए स्वतः ही प्रेरणास्पद सिद्ध होगा ही!

दिया जाय, तो "धारा" बन जाता है। धारा अर्थात् जो सतत गतिशीलता का परिचय देकर मनुष्य को कर्म-पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है।

प्रेम की जैसी मिसाल राधा बनीं, वैसी तो कोई दूसरी बन ही नहीं सकी, इसीलिए तो श्रीकृष्ण से भी पहले राधा को स्मरण किया जाता है।

प्रेम करना कोई पाप नहीं है, प्रेम तो जीवन का सौभाग्य है, जो सौभाग्यशाली लोगों को ही प्राप्त होता है। प्रेम करने वाले को प्रेमी की आंखों में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दिखने लगता है, और उस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर समाहित कर लेना ही जीवन की सार्थकता होती है। विरले ही होते हैं, जो अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर पाते हैं, अन्य तो समाज के थपेड़े खाकर प्रेम की उच्चता तक नहीं पहुंच पाते और ऐसे व्यक्तियों का जीवन प्रायः मृतवत् हो जाता है।

आये दिन अखबारों आदि में खबरें पढ़ने को मिलती हैं, कि आज उन दोनों प्रेमियों ने नदी में कूद कर अपनी जान दे दी या जहर खाकर आत्महत्या कर ली, या वे घर छोड़कर भाग गये, ऐसा करके लोग समझते हैं, कि हमने सही अर्थों में प्रेम किया है, जबकि यह उनका भ्रम है। वे अज्ञानता वश अपने प्राण तो दे देते हैं, किन्तु प्रेमानन्द प्राप्त नहीं कर पाते, सही अर्थों में प्रेम क्या होता है, यह नहीं जान पाते।

"राधा प्रयोग" को सम्पन्न कर जीवन में प्रेम की उच्चता को प्राप्त किया जा सकता है, एक-दूसरे के प्रति प्रेम, माधुर्य, सम्मोहन पैदा किया जा सकता है, उस स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है, जहां दो आपस में मिलकर एक हो जाते हैं, फिर उनमें भिन्नता नहीं रहती है, फिर "प्रेम" शब्द उनके होठों से नहीं, रोम-रोम से प्रस्फुटित होने लगता है, फिर आंखों में एक ही प्रतिबिम्ब तैरता है . . . और राधा ने भी तो यही किया था कृष्ण को अपने अन्दर उतार कर, और अमर हो गईं सदा के लिए।

यह प्रयोग उन सच्चे हृदय के प्रेमियों के लिए है,

जगत् को भी आनन्दित करते हैं।

द्वैत होते हुए भी अद्वैत भाव, यही प्रेम है, एक-दूसरे में समा जाने की प्रक्रिया है, एकांगी भाव है . . . और यही जीवन का सारगर्भित तथ्य है, जिसे हम "प्रेम" शब्द से सम्बोधित करते हैं। ढाई अक्षर का यह अदना-सा शब्द जीवन की सम्पूर्णता को लिए हुए है, यही जीवन की सर्वोच्चता है, सम्पूर्णता है. . . अलौकिकता है . . . दिव्यता है . . . जीवंतता है. . . चैतन्यता है . . . सप्राणता है, अपने-आप में अद्वितीय भाव है, जो श्रीकृष्ण और राधा के रूप में प्रकट हो अपने महत्त्व को प्रतिपादित कर गया और आज तक जीवित-जाग्रत है। प्रेम का वास्तविक परिचय देने के लिए ही श्रीकृष्ण ने अपने स्वरूप को राधा के रूप में परिवर्तित किया और स्वयं आनन्दित हो सम्पूर्ण जगत् को भी उस आनन्द से अभिभूत किया।

प्रेम क्या होता है, सौन्दर्य क्या होता है, जीवन का वास्तविक आनन्द क्या होता है, यह तो श्री राधा को देखकर ही अनुभव किया जा सकता है, जिनके रोम-रोम से केवल कृष्ण की ही ध्वनि गुंजरित होती है। आह्लादिनी शक्ति राधा सफल सिद्धियों की दात्री हैं। "राधा" शब्द को यदि उल्टा कर

जो अपने प्रेमी को पूर्णता के साथ प्राप्त कर लेना चाहते हैं और वह भी निश्चित रूप से, क्योंकि यह प्रयोग अपने-आप में ही विलक्षण है, जिसका प्रभाव कभी खाली नहीं जा सकता।

इस प्रयोग को करने के बाद स्वतः ही ऐसी स्थितियां निर्मित होने लगती हैं, जो मार्ग में आई बाधाओं को दूर कर देती हैं, जिससे उन प्रेमियों का जीवन सुखद एवं आनन्द युक्त बन जाता है।

प्रयोग विधिः

१. **''आद्याशक्ति यंत्र''**, जो दिव्य मंत्रों से चैतन्य किया गया हो, **''प्रिया-प्रिय मुद्रिका''**, जो कि निश्चित रूप से प्रेमी और प्रेमिका के हृदय में प्रेम को स्पन्दित करने वाली होती है, प्रयोग से पूर्व ये दोनों सामग्री साधक के पास होनी आवश्यक हैं।

   यह प्रयोग **३१.१०.६५** को सम्पन्न करें या फिर किसी भी महीने की **अष्टमी** को यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं।

३. साधक **ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ४ बजे से ८ बजे के मध्य** स्नानादि क्रियाओं से निर्मुक्त होकर **पीले आसन** पर बैठ जायें।

४. इस प्रयोग को पुरुष व स्त्री दोनों कर सकते हैं।

५. इस प्रयोग में प्रेमी या प्रेमिका का भाव अपने अन्दर लाना आवश्यक है, क्योंकि इस भाव के बिना आप कृष्ण के प्रति राधा का जो प्रेममयी स्वरूप है, उसे समझ नहीं पायेंगे और यह प्रयोग, जिसे आप करने जा रहे हैं, आपके हृदय में उन्मुक्त भाव उत्पन्न नहीं हो पायेगा।

६. इसमें साधकों को चाहिए, कि वे अच्छे-से-अच्छे, सुसज्जित वस्त्र धारण करें तथा इत्र आदि से वातावरण को सुगन्धित बना लें।

७. इस प्रयोग में किसी दिशा विशेष का महत्त्व नहीं होता और यंत्र के लिए भी पूजन आदि से सम्बन्धित क्रिया या नियम की आवश्यकता नहीं होती और न ही मंत्र-जप करते समय किसी प्रकार की माला की आवश्यकता होती है।

८. धूप व दीप जलाकर गुलाब की पंखुड़ियों से यंत्र का पूजन करें।

६. इसके बाद मुद्रिका को साधक अपने दाहिने हाथ की किसी भी उंगली में तथा साधिकाएं बायें हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर लें।

१०. इसके पश्चात् **''शक्ति चक्र'' पर १५ मिनट तक त्राटक करें** और यही चिन्तन करें, कि मैं अपने इष्ट के स्वरूप में शनैः-शनैः प्रविष्ट हो रहा हूं और उनसे एकाकार होने की भावना अपने मन में लायें।

११. इसके बाद राधा-कृष्ण के प्रेममय विग्रह का आंख बंद करके १५ मिनट तक ध्यान व चिन्तन करें।

१२. साधक उस अवस्था में पहुंच जायेगा, जहां वह अपने हृदय में राधा और कृष्ण के दिव्य भाव को अनुभव करने लगेगा, यही इस प्रयोग का मुख्य प्रायोज्य विषय है, जो कि साधक के लिए एक दिव्यतम एवं उच्च अवस्था कही जाती है।

१३. इसके पश्चात् निम्न मंत्र का साधक दिन भर मानसिक जप करें और उस गहनतम भाव की अनुभूति प्राप्त करते रहें।

मंत्र

ॐ प्रेमायै प्रेमदायै नमः श्रीं ॐ

१४. इस मंत्र को जपने के लिए स्थान आदि का कोई बन्धन नहीं है, यह मंत्र सोते-बैठते, चलते-फिरते किसी भी अवस्था में जपा जा सकता है।

१५. प्रयोग के दूसरे दिन उस यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें तथा मुद्रिका को धारण किये रहें।

राधा प्रेम की पराकाष्ठा हैं और प्रेम स्वरूपा हैं, इस प्रयोग से साधक प्रेम की अजस्र धारा में आप्लावित हुए बिना नहीं रह सकेगा। जीवन में प्रेम के स्वरूप को समझ पाना ही उदात्तता है, जीवंतता है।

साधना-सामग्री न्यौछावर :

आद्याशक्ति यंत्र - २४०/-, प्रिया-प्रिय मुद्रिका - ६०/-, शक्ति चक्र - ५/-

इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

दिल्ली और इसके आस-पास रहने वाले साधकों एवं शिष्यों के लिए एक नई योजना प्रारम्भ कर रहे हैं, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली **''गुरुधाम''** में ही **पूज्य गुरुदेव** या **श्री राम चैतन्य जी शास्त्री** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जायेंगी, जो कि उस दिन **शाम ५ से ८ बजे** के बीच सम्पन्न होंगी।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)–

१० सितम्बर ६५ – छिन्नमस्ता जयन्ती – छिन्नमस्ता साधना

शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने, उन्हें परास्त करने, अकाल मृत्यु से मुक्ति, मुकदमों में सफलता तथा पूर्ण विजय के लिए अद्वितीय एवं अपूर्व साधना।

१२ सितम्बर ६५ – पितृ दोष निवारण एवं मनोवांछित कामना सिद्धि प्रयोग

जब तक किसी भी दोष से मनुष्य का भाग्य दूषित रहता है, तब तक वह विघ्न के रूप में मुंह फैलाये हुए खड़ा रहता है, और प्रत्येक कार्य में बाधा उत्पन्न करता ही है, ऐसी स्थिति में किसी मनोवांछित कार्य की सिद्धि हो ही नहीं सकती; इस प्रयोग के माध्यम से पितृ दोष जैसे दूषण को समाप्त करके इच्छित फल एवं पूर्णरूपेण गुरुत्व प्राप्ति की सम्भावना स्वतः बन जाती है।

१५ सितम्बर ६५ – सर्व बाधा निवारण प्रयोग

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इतनी बाधाएं हैं, कि इनका निवारण करते-करते ही जीवन का स्वर्णिम क्षण धूमिल पड़ जाते हैं। इस प्रयोग के द्वारा बाधाओं को पार करके समस्त दैहिक, दैविक एवं भौतिक रोगों से मुक्त हुआ जा सकता है।

१६ सितम्बर ६५ – प्रबल शत्रु स्तम्भन प्रयोग

जीवन में शत्रुओं का होना स्वाभाविक है, उससे मुकाबला करना पौरुषता है, इस प्रयोग के माध्यम से राज्य विजय, अकाल-मृत्यु निवारण एवं सम्पूर्ण पारिवारिक उन्नति निश्चित हो जाती है।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे–

१. आप-अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- रुपये वार्षिक शुल्क तथा 15/- रुपये डाक व्यय इस प्रकार कुल 195/- रुपये प्राप्त कर लें। आप इन दोनों मित्रों का शुल्क (195+195 = 390/-) जमा करा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क **''कायाकल्प यंत्र''** दिया जायेगा व उन दोनों सदस्यों को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं दो वर्ष की सदस्यता प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको **''कायाकल्प यंत्र''** उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।

३. आप यदि किन्हीं कारणों से दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

४. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 360/- रुपये या दो पत्रिका सदस्य है।

नोट : इस योजना में आप-अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

आत्म-चिन्तन और तत्व रहस्य

"अध्यात्म क्या है? कहां से हुआ होगा इसका जन्म? किसने इसे अपने जीवन में उतारा? अध्यात्म का मानव-जीवन पर क्या प्रभाव होता है?

हमारे पूर्वज प्रायः इतने अशांत और अतृप्त नहीं थे, उनके जीवन में शांति तथा प्रेम हुआ करता था। आज वही शांति और प्रेम क्यों दंगे और नफरत के रूप में परिवर्तित हो गए? इसका भी कारण है. . . "
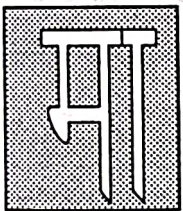
मानव में आदिकाल से ही एक खोजी प्रवृत्ति रही है, और वह आरम्भ से ही कुछ न कुछ नवीन तथ्यों की खोज में रहा है। प्राचीन काल में मानव प्रायः नग्न, मूक पशुओं की भांति ही रहा करता था, उसमें और पशुओं में कोई विशेष अन्तर नहीं था। पशुओं के समान ही उदर-पोषण करना, पशुओं के समान ही संतान उत्पन्न करना, दुर्गन्ध युक्त जीवन जीते-जीते समाप्त हो जाना।

इसके अलावा मानव में कुछ विशेषताएं भी थीं, जो उसे पशुओं से निरन्तर भिन्नता प्रदान करती गईं। मानव एक सामाजिक प्राणी है, वह आरम्भ से ही समाज में रहना अधिक रुचिकर समझता है, और समाज में वास करने के कारण ही उसके जीवन में कई प्रकार की समस्याओं का आवागमन लगा रहता है, जैसे— भरण-पोषण की समस्या, आवास की समस्या, मान-सम्मान की समस्या आदि अनेक समस्याओं के फलस्वरूप उसमें खोजी प्रवृत्ति का विकास हुआ। प्रारम्भ में उसने गुफाओं में रहना आरम्भ किया, और फिर धीरे-धीरे वे गुफायें ही भवन-निर्माण की कला के रूप में परिवर्तित हुईं।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए उसे अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, इसके समाधान के रूप में उसने एक पत्थर के पहिये का आविष्कार किया। इस प्रकार निरन्तर भौतिकता में वृद्धि होती गई, और वह निरन्तर अपने शरीर को सुख देने वाले साधनों के विकास में, उनके आविष्कार में जुट गया।

वहीं उससे होने वाली बीमारियों, मृत्यु जैसी दुःखद स्थितियों एवं आने वाले आकस्मिक संकटों ने मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचने के लिए विवश कर दिया, तब यहीं से अध्यात्म का जन्म हुआ, और जब मानव ने अध्यात्म को लेकर खोज की, तो प्रकृति ने उसे भरपूर सहयोग प्रदान किया। मनुष्य में छिपी एक अन्यतम शक्ति, जिसे श्रद्धा और विश्वास कहा जाता है, उसकी पहिचान हुई।

इसी श्रद्धा और विश्वास के बल पर उसने बड़ी-बड़ी समस्याओं को देखते-देखते ही हल करना सीख लिया, और इसे ही आत्मशक्ति अथवा मनःशक्ति के रूप में जाना गया। निरन्तर मिलती सफलताओं ने मानव को इस अध्यात्म के विषय में और गहराई में जाने के लिए मजबूर कर दिया, और उसने समाधि अवस्था को प्राप्त किया, वहीं

ईश्वर से साक्षात्कार हुआ, वहीं उसे ब्रह्म का दर्शन हुआ, ज्ञान-विज्ञान की खोज हुई और मानव ने प्रकृति से एकरस होना सीख लिया।

यहां उसके जीवन में दो पक्ष रहे, पहला भौतिकता का और दूसरा अध्यात्म का। मनुष्य ने अनुभव किया, कि भौतिकता में सुख तो है, मगर आनन्द नहीं है, और सुख कभी स्थाई नहीं होता, क्योंकि किसी व्यक्ति को यदि बलिष्ठ शरीर बनाने में सुख अनुभव होता है, तो वहीं उसे निरन्तर भय भी बना रहता है, कि कहीं कोई मुझसे भी अधिक बलशाली व्यक्ति आकर मेरा अपमान न कर दे। यदि किसी को धन एकत्र करने में सुख अनुभव होता है, तो उसे इस बात की भी चिंता रहती है, कि कोई उसके धन को नष्ट न कर दे और वह निरन्तर इसी चिंता में घुलता रहता है, अर्थात् प्रत्येक सुख के पीछे एक दुःख अवश्यम्भावी होता ही है, और प्रायः व्यक्ति इसी सुख-दुःख के पालने में झूलता हुआ, अपने जीवन की इतिश्री कर लेता है।

वहीं एक पक्ष ऐसे व्यक्तियों का भी बना, जो इन समस्याओं का समाधान ढूंढने में लगे रहे, और उन ऋषियों ने मंत्र का, तंत्र का तथा यंत्र का आविष्कार किया एवं अपनी ही आत्मशक्ति से समस्याओं का समाधान किया। वेदों की रचना हुई, उपनिषद बने, इस प्रकार अध्यात्म भी भौतिकता के साथ-साथ निरन्तर चलता ही रहा, और मानव के जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया।

''अध्यात्म'' का अर्थ यदि सरल शब्दों में लिया जाय, तो स्वयं (आत्मा) का या निज स्वरूप का अध्ययन है, अर्थात् उसे पहिचानने की क्रिया है, और जब व्यक्ति अपने-आप को पहिचानने के लिए अपने ही अन्दर उतरता है ध्यान, धारणा के द्वारा, तब उसे एक असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, जहां केवल आनन्द ही आनन्द है, दुःख का चिन्ह दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता, और यही विचार शून्य मस्तिष्क होने की सूचना है।

हमारे स्वय के सम्बन्ध, अपना-पराया, हमारा-तुम्हारा ये सब तो मात्र विचार हैं, सत्य स्वरूप तो अपना कुछ है ही नहीं। एक चोर का मनोभाव क्या होता है? जब उसके मस्तिष्क में विचार उठता है, कि यह घड़ी मेरी है, और वह उसे चुरा कर अपनी बना लेता है, यदि उसके मस्तिष्क में यह विचार ही न आये, तो वह घड़ी कभी भी उसकी नहीं हो सकती। यही हमारे सम्बन्धों की सत्यता है, ये विचार ही हमारे सुख-दुःख, राग-द्वेष, क्षोभ-पीड़ा, अतृप्ति का कारण बनते हैं।

यदि मानव अपने विचारों को अर्थात् अपने मस्तिष्क को ही नियंत्रण में ले ले, तो इन सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है, और यह नियंत्रण में लेने की अवस्था ही ''समाधि अवस्था'' कहलाती है।

जब एक व्यक्ति समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तब उसे एक असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, एक ऐसा आनन्द, जो अवर्णनीय है, जो कहने या लिखने का नहीं, वरन् अनुभव करने का पक्ष है। व्यक्ति उस बिन्दु पर आकर रुकता है, जहां न राग है, न द्वेष है, न छल है, न कपट है, न व्यभिचार है, यदि है तो एक शांति और हमारा पूर्ण हंसता-खेलता संसार, और यहां आकर एक सामान्य सा मानव ''महामानव'' बन जाता है, एक सामान्य सा पुरुष ''पुरुषोत्तम'' बन जाता है।

समाधि अवस्था प्राप्त करने का अर्थ है, दस कलाओं में पूर्णता प्राप्त करना। जिस प्रकार भगवान श्री राम बारह कला पूर्ण थे और भगवान श्रीकृष्ण सोलह कला पूर्ण थे, उसी प्रकार आप भी इन कलाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

अध्यात्म का विकास प्रायः यहीं पर आकर ही समाप्त नहीं हो जाता, इसके आगे तो अनन्त सम्भावनाओं के द्वार खुलते हैं।

एक सामान्य मानव के जीवन का प्रमुख लक्ष्य होता है, कुण्डलिनी जागरण कर पूर्ण ब्रह्म से साक्षात्कार करना। एक मनुष्य के शरीर में सात चक्र होते हैं, जिन्हें हम मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्र एवं सहस्रार के नाम से जानते हैं, इन सबको मिलाकर के पूर्ण कुण्डलिनी का स्वरूप निर्मित होता है। **जैसे-जैसे व्यक्ति अपने इन सुप्त चक्रों को किसी योग या साधना के माध्यम से जाग्रत करता है, उसमें एक विचित्र सी शक्ति का विस्फोट होता जाता है, और वह सामान्य सा दिखाई देने वाला व्यक्ति अपने-आप में एक चलता-फिरता पॉवर हाउस बन जाता है। वह व्यक्ति ऐसे-ऐसे कार्य करने लग जाता है, जिसकी उसने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी।**

एक विचित्र सा साहस; कार्य करने की अद्भुत क्षमता तथा परालौकिक शक्तियों का स्वामी बन जाता है। ब्रह्माण्ड को अपनी उंगली के इशारे पर चलाने की, उसे गतिशील करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, और वह प्रकृति से, ईश्वर से एकरस होकर स्वयं ईश्वर तुल्य हो जाता है।

प्रायः मानव के शरीर में जब इन्द्रियों की बात होती है, तो दस इन्द्रियों की गणना होती है, जिसमें पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा पांच कर्मेन्द्रियां बताई जाती हैं। यह बात पूर्णरूप से सत्य नहीं है, यह तो उनके विचार हैं, जिनको

पूर्ण जानकारी नहीं है। सत्य तो यह है, कि एक मानव अपने पूरे शरीर में दृश्य-अदृश्य कुल १०८ इन्द्रियों का स्वामी है, जिसमें से हम केवल दस इन्द्रियों का प्रयोग करना ही जानते हैं।

हमारे पूर्वज, जिनका सम्पूर्ण शरीर ही चैतन्य था, वे सभी इन्द्रियों का पूर्णता के साथ प्रयोग करते थे, उनके पास ऐसी क्षमताएं थीं, वे किसी का भी भूत, भविष्य बता देते थे और एक स्थान पर बैठे-बैठे कहीं भी घट रही घटनाओं की पूर्ण जानकारी रखते थे तथा अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही उस घटना में हस्तक्षेप कर दिया करते थे, वे त्रिकालदर्शी, सर्वव्यापी कहलाते थे।

लेकिन आज मानव ने उन इन्द्रियों का प्रयोग करना ही छोड़ दिया, जिससे वे इन्द्रियां धीरे-धीरे मृत प्रायः ही हो गईं। यदि आपने कभी देखा हो, जब एक गाय के शरीर पर कहीं मक्खी या कोई अन्य जीव बैठता है, तो वह अपने चमड़े को उसी स्थान पर हिलाकर उस जीव को हटा देती है, क्या आप ऐसा कर सकते हैं? नहीं, क्योंकि आपके वे तन्तु नष्ट हो चुके हैं। यदि किसी व्यक्ति का हाथ दस साल के लिए प्लास्टर के द्वारा स्थिर कर दिया जाय, तो उस हाथ की पेशियां इतनी बड़ी अवधि में मृत हो जायेंगीं, वह हाथ नकारा (यूज़लैस) हो जाएगा, उसमें कोई गति या स्पन्दन नहीं रहेगा।

साधक

- साधक . . . एक ऐसी नदी है जो. . .
- बेताब है सागर की गोद में समाने के लिए, पूर्ण सागर बनने के लिए
- कौन रोक सकता है उसे?
- राह में पड़ने वाली समाज रूपी चट्टानें . . .
- बांध! वन!! पहाड़!!!
- सम्भव है कुछ शिथिलता आ जाय, लेकिन
- कोई परवाह नहीं, मेघ रूपी गुरु जो साथ है
- जो हमेशा तत्पर है, बरस कर नदी का उत्साह, उमंग और वेग बढ़ाने के लिए
- नदी शिथिल होती है तो मेघ बरसता ही है और . . .
- नदी उफनती हुई तोड़ देती है बांध, लांघ जाती है सभी बन्धनों को और
- जा मिलती है सागर में
- यही तो है गुरु और शिष्य का मिलन
- एक साधक का अपने इष्ट से मिलन. . .

क्या इन्हें फिर से जाग्रत किया जा सकता है? तो जवाब निश्चितः रूप से 'हां' में ही होगा। कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से यही क्रिया प्रायः सम्पन्न होती है।

हमने अपने शरीर का प्रयोग करना धीरे-धीरे बन्द कर दिया है, कारण भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होना था। हम आराम पसन्द होते गए और अपने शरीर को नष्ट करते चले गए। इस शारीरिक क्षमता को पुनः प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? क्या कोई उपाय है, जिसके द्वारा हम फिर से पूर्ण प्रज्ञावान एवं पूर्ण चैतन्य बन सकें? इसका जवाब 'हां' ही होगा। इसके लिए हमें आवश्यकता है एक पूर्ण प्रज्ञावान, चैतन्य पूर्ण, सोलह कला युक्त जीवित-जाग्रत सद्गुरु की, जो अपने शरीर के स्पर्श से, शक्तिपात के माध्यम से, योग के माध्यम से तथा साधना के माध्यम से, जो भी तरीका अनुकूल हो, आपकी कुण्डलिनी जाग्रत कर सके तथा अपनी शक्ति से आपके पूरे शरीर को दिव्य व चैतन्य बना सके।

प्रश्न यह उत्पन्न होता है, कि क्या वर्तमान में ऐसा कोई पुरुष या महामानव हमारे बीच में उपस्थित है? **'परम पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'** पिछले वर्षों से एक सामान्य मानव की तरह रहते हुए, अपने शिष्यों को और देश-विदेश के नागरिकों को, जो भी उनके पास इस इच्छा से आता है, उसे सब कुछ सहर्ष प्रदान कर ही रहे हैं।

वे साधनाओं के माध्यम से, योग के माध्यम से, शक्तिपात के माध्यम से एक मानव को महामानव बनाने की क्रिया में निरन्तर कई वर्षों से संलग्न हैं।

साधना हमारे जीवन का एक अत्यन्त आवश्यक बिन्दु है, क्योंकि साधना का सीधा सम्बन्ध विश्वास से, श्रद्धा से और मनःशक्ति से होता है, और साधना के माध्यम से ही इन शक्तियों का विकास किया जाता है, जिससे हम अपने जीवन में पूर्ण प्रज्ञावान, चैतन्य तथा सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व बन सकते हैं।

इसके लिए न तो जंगलों में भटकने की आवश्यकता होती है और न भगवे कपड़े पहिनने की। इसे तो सामान्य से सामान्य गृहस्थ भी उसी प्रकार से प्राप्त कर सकता है, जिस प्रकार कोई योगी दूर किसी कन्दरा में बैठ कर प्राप्त करता है, आवश्यकता है, तो केवल लगन की और आगे बढ़कर, प्राप्त कर लेने की आकांक्षा की।

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्रश्न– नया व्यवसाय कौन-सा प्रारम्भ करूं?
उत्तर– होटल, सिनेमा (मनोरंजन से सम्बन्धित), सौन्दर्य प्रसाधन के बारे में विचार करें।

यशवंत सिंह छाबड़ा, रायपुर
प्रश्न– शादी का योग कैसा? जातीय या अन्तर्जातीय?
उत्तर– विवाह योग प्रबल, अन्तर्जातीय भी सम्भव।

राजकरण मसराम, परासिया
प्रश्न– मैं कौन-सा व्यवसाय करूं और कहां पर?
उत्तर– आयात-निर्यात, कच्चा माल, लोहा, मशीनरी आदि के कार्यों पर विचार करें।

रूसी वैष्णोदास, अहमदाबाद
प्रश्न– अभी मैं आरकीटेक्ट में डिप्लोमा कर रही हूं, क्या मैं डिग्री कोर्स कर पाऊंगी?
उत्तर– हां, परिश्रम करें।

कु० सोनल जुमडे, भोपाल
प्रश्न– क्या इस वर्ष परीक्षा में सफलता मिलेगी?
उत्तर– हां।

अलका महाजन, कांगड़ा
प्रश्न– क्या इस वर्ष बी. ए. की परीक्षा में सफलता मिलेगी?
उत्तर– प्रयास करें एवं **''चैतन्य सरस्वती दीक्षा''** प्राप्त करें, सफलता मिलेगी।

कु० पूजा , वस्ती
प्रश्न– बाधामुक्त शीघ्र आर्थिक विकास का उपाय व समय बताया जाय?
उत्तर–''विशिष्ट महालक्ष्मी अनुष्ठान,'' दो वर्ष।

श्यामनन्दन प्रसाद, पटना
प्रश्न– क्या मैं डॉक्टर बनूंगी?
उत्तर– एलोपैथिक की अपेक्षा, आयुर्वेदिक क्षेत्र में प्रयास करें।

सुनीता चौहान, बरेली
प्रश्न– साधनात्मक दृष्टि से कौन-सी यक्षिणी अथवा अप्सरा साधना अनुकूल?
उत्तर– ''पुष्पदेहा अप्सरा'' अथवा **''यौवन गर्विता साधना।''**

पंकज कुमार सिंह, भागलपुर
प्रश्न– व्यवसाय, जिसमें सफलता मिलेगी?
उत्तर– आप नौकरी के लिए प्रयास करें, अवसर प्रबल।

सुनील जेठी, चण्डीगढ़
प्रश्न– प्रत्यक्ष सिद्धि किस साधना में मिलेगी?
उत्तर– आप **''उर्वशी दीक्षा''** प्राप्त कर साधना सम्पन्न करें।

चन्द्रिका यादव, गाजीपुर
प्रश्न– सरकारी नौकरी कब तक मिलेगी?
उत्तर– नौकरी में विलम्ब सम्भावित, व्यवसाय में रुचि लें।

गोकरण प्रसाद, रायगढ़
प्रश्न– इस बार पढ़ाई में सफलता मिलेगी?
उत्तर– मेहनत करें, योग बनेंगे।

कु० विजय लक्ष्मी, पिपली बाजार
प्रश्न– शिष्य बनने का अवसर प्राप्त होगा या नहीं?
उत्तर– निकट भविष्य में भाग्योदय होगा।

नारायण प्रसाद, विलासपुर
प्रश्न– विवाह-योग कब है? दिशा एवं व्यवसाय कौन-सा रहेगा?
उत्तर– विवाह-योग ५ वर्ष के अन्दर है तथा पूर्व में नौकरीपेशे वाला व्यक्ति होगा।

कु० विद्या माधव, जलगांव
प्रश्न– किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी?
उत्तर– रेडीमेड होजरी, होटल, कैमिकल इन्ड० आदि में।

नरेश कुमार शर्मा, झुंझनू
प्रश्न– मेरे किसी भी जन्म के गुरु से मिलने की विधि बतायें?
उत्तर– **''ॐ गुरुवै नमः''** मंत्र का नित्य आधा घण्टा जप करें, दर्शन होंगे।

धर्मेन्द्र मिश्रा, गाजियाबाद
प्रश्न– विदेश यात्रा कब तक?
उत्तर– वर्तमान में विदेश यात्रा के योग क्षीण एवं कष्टप्रद।

राजकुमार, रक्कड़ कालोनी
प्रश्न– क्या मेरी पत्नी मेरे परिवार में पूरी तरह मिल कर कभी रह पायेगी?
उत्तर– हां! **''पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्ति दीक्षा''** प्राप्त करें।

अवनिन्दर दत्त शर्मा, अमृतसर
प्रश्न– सरकारी नौकरी मुझे मिलेगी, कि नहीं?
उत्तर– सम्भावनाएं कम हैं, स्व व्यवसाय करें।

मेलाराम साहू, दुर्ग
प्रश्न– मेरी शादी कब होगी?
उत्तर– ''शीघ्र विवाह दीक्षा'' प्राप्त करें, योग नहीं।

वीरेन्द्र सिंह चौहान, चण्डीगढ़
प्रश्न– अत्यधिक कर्जे से मुक्ति कब और कैसे?
उत्तर– ''ऋणहर्ता गणपति प्रयोग'' सम्पन्न करें।

बाबूलाल शर्मा, देवास
प्रश्न– धन, ऐश्वर्य, वैभव किस साधना से शीघ्र प्राप्त होगा?
उत्तर– ''महालक्ष्मी साधना'' से।

ब्रजेश कुमार सोनी, सागर
प्रश्न– क्या मेरी वर्तमान नौकरी पक्की होगी? यदि हां, तो कब तक?
उत्तर– नौकरी पक्की होने के योग हैं, **''मनोकामना सिद्धि दीक्षा''** प्राप्त करें।

सुशीला अग्रवाल, नई दिल्ली
प्रश्न– मेरे लिए कौन-सा व्यवसाय लाभदायक रहेगा?
उत्तर– मैनूफैक्चरर वर्क्स, सेनेटरी एवं हार्डवेयर शॉप आदि।

भैरूलाल माली, भीलवाड़ा
प्रश्न– सरकारी नौकरी का योग कब तक, समय बतायें।
उत्तर– या तो डेढ़ वर्ष के अन्दर, नहीं तो स्व व्यवसाय योग।

कुलदीप भारद्वाज, मढ़ोड़धार,

(कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)

नाम :-...

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्...............

जन्म स्थान :- .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-...

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय
306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034

राशिफल

मेष -
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

यह माह आपके लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा, परन्तु वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें। किसी अपरिहार्य घटना के योग से सावधान रहें। भूमि के क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। जीवनसाथी से सामान्य तकरार के बावजूद स्थिति अनुकूल रहेगी। संतान की ओर से तनाव रहेगा। राजकार्य में अड़चन आने से खिन्नता होगी, भैरव साधना सम्पन्न कर अनुकूलता प्राप्त करें। दृश्य-अदृश्य शत्रु आपको परेशान करने की फिराक में रहेंगे। रुचिकर स्थानों की यात्रा अनुकूल रहेगी। साधक वर्ग उत्साहित रहेंगे। कला-जगत के व्यक्ति संयम से रहें। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें।

अनुकूल तारीखें— ६,६,१५,१८,२२,२७

अनुकूल साधना— भुवनेश्वरी महाविद्या।

मिथुन -
का, की, कु, घ, ङ., छ, के, को, ह

यह माह आपके लिए अनुकूल ही रहेगा। शत्रु बाधा का भय बराबर बना रहेगा। शत्रु हानि भी पहुंचा सकते हैं, सावधानी बरतें। व्यापारिक मामलों में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी एवं धन व्यय भी बढ़ेगा। साधनाओं में रुचि बढ़ेगी। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी। कला-जगत के व्यक्ति मानसिक तनाव अनुभव करेंगे। चिकित्सा व्यय भार में वृद्धि होगी, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। परिवार के किसी सदस्य को लेकर तनाव रहेगा। जीवनसाथी से अनुकूलता प्राप्त होगी। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें, उलझे हुए मामलों में सुधार होगा।

अनुकूल तारीखें— ५,१४,१८,२३,३०

अनुकूल साधना— बगलामुखी साधना।

सिंह -
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

मामूली सी बाधाएं और अड़चनें रहेंगी, लेकिन कारोबारी मामलों में लाभ की स्थिति बनेगी। नये व्यवसाय आरम्भ कर बेरोजगार व्यक्ति लाभ प्राप्त कर सकते हैं। साधक वर्ग में विशेष उत्साह रहेगा। कला-जगत के व्यक्ति संयमित होकर रहें। जो कार्य आप कर रहे हैं, उसी में लाभ होगा। धार्मिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी एवं आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी। यात्रा में सावधानी बरतें। दाम्पत्य जीवन अनुकूल रहेगा। संतान की ओर से स्थिति में प्रतिकूलता आयेगी। राज्य पक्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। रुके हुए धन की प्राप्ति के योग क्षीण रहेंगे, अतः व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें।

अनुकूल तारीखें— १,५,१०,२६,२८

अनुकूल साधना— शिव साधना।

वृषभ -
इ, उ, ऐ, ओ, बा, बी, बु, बे, बो

स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, धन व्यय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति कारोबारी मामलों में रुचि लें, अनुकूल रहेगा। जिन कार्यों को हाथ में ले रखा है, पहले उन्हें पूरा करें। वाद-विवाद के मामलों को लेकर संयम बरतें। उलझे हुए अदालती मामले सामान्यतः सुधार की स्थिति में आयेंगे। भूमि के मामलों में लापरवाही न बरतें। रुका धन प्राप्त होने के योग। आकस्मिक धन प्राप्ति के योग क्षीण, व्यर्थ धन व्यय न करें।

अनुकूल तारीखें— ६,१२,१५,२३,२४,२८

अनुकूल साधना— महालक्ष्मी साधना।

कर्क -
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

यह महीना आपके लिए सामान्य चल रहा है। किसी भी मामले में उतावली एवं हड़बड़ाहट न करें। जीवनसाथी से तनाव की स्थिति में संयम बरतें। जो कार्य आप करना चाहते हैं, अपनी मौलिक सूझ-बूझ के आधार पर करें। अतिथियों के आगमन से व्यय भार में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। मित्रों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी। शत्रुओं से सावधान रहें, विश्वासघात की सम्भावना प्रबल। नवीन क्रय-विक्रय के योग प्रबल।

अनुकूल तारीखें— २,८,११,१७,२०,२६

अनुकूल साधना— महाकाली साधना।

कन्या -
टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

प्रारम्भ के दिन सामान्य रहेंगे, लेकिन सप्ताह भर बाद समय विशेष सफलतादायक सिद्ध होगा। कार्य परिवर्तन का विचार त्याग दें, जो चल रहा है, उसी में लाभ होगा। घरेलू मामलों की उपेक्षा न करें एवं तकरार की स्थिति में संयम बरतें। संतान की ओर से चिन्ता रहेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शत्रु आपके पक्ष में होंगे एवं स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। मित्रों पर सीधा विश्वास न करें। स्वजन की सहायता करनी होगी, आर्थिक व्यय में वृद्धि होगी।

अनुकूल तारीखें— ५,१२,१४,२०,२३

अनुकूल साधना— अष्टलक्ष्मी साधना।

तुला -

रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

जीवनसाथी एवं संतान की उपेक्षा न करें, वैचारिकता बनाये रखें। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति एवं लाभ सामान्य रहेंगे। रुके हुए धन प्राप्त होने के योग बनेंगे। कला-जगत के व्यक्ति नवीन कार्यों की ओर अग्रसर होंगे। उतावली एवं हड़बड़ाहट न करें। प्रेम-प्रसंग एवं प्रेम विवाह सामान्य ही रहेंगे। साधनात्मक दृष्टि से समय आपके लिए अनुकूल रहेगा। धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न होगी।

अनुकूल तारीखें— ९,१२,१५,२१,२४,२८

अनुकूल साधना— गणपति साधना।

धनु -

ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

प्रेम-प्रसंगों को लेकर सावधानी बरतें। प्रेम-विवाह के मामलों में अड़चनें आयेंगी। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। धार्मिक प्रसंगों को लेकर खिन्नता रहेगी। समाज सेवा में योगदान रहेगा। महिलायें पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। जीवनसाथी से सहयोग बनाकर चलें। संतान पक्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त होगी। कारोबारी मामलों में उदासीनता न बरतें, यात्रा-योग प्रबल। मांगलिक कार्यों के योग निर्मित होंगे।

अनुकूल तारीखें— ३,१२,१६,२१,२४,३०

अनुकूल साधना— धूमावती साधना।

कुंभ -

गू, गे, गो, सी, सु, से, सो, दा

स्वयं के प्रयासों से ही कारोबार में विकास होगा, साझेदारी में अनबन होने से स्थिति में बिगड़ाव आयेगा। नौकरीपेशा वर्ग प्रसन्नता अनुभव करेंगे। अधिकारियों से सम्बन्धों में मधुरता आयेगी। राजकार्य आसानी से पूर्ण होंगे। इन्टरव्यू देने वाले निराश ही होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं। जीवनसाथी के सहयोग से घरेलू समस्याओं में सुधार होगा। लापरवाही के साथ कोई कार्य न करें। पूंजी को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करें, तो लाभ होगा।

अनुकूल तारीखें— २,८,१७,२२,२६,२९

अनुकूल साधना— षोडशी महाविद्या।

वृश्चिक -

तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

इंटरव्यू में कठिन परिश्रम ही लाभप्रद होगा। रचनात्मक कार्यों में विकास होगा। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। घर के किसी सदस्य को लेकर चिन्ता रहेगी। मित्रों का साथ छूटेगा, नये सम्पर्क भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। भूमि विवादों को लेकर लापरवाही न बरतें। अदालती मामलों में उलझाव आयेगा। अपने-आप पर नियंत्रण रखें, जल्दबाजी में हानि की संभावना।

अनुकूल तारीखें— ३,९,१३,१८,२६,२७

अनुकूल साधना— भैरव साधना।

मकर -

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मित्रों एवं सम्बन्धियों से मेल-जोल बनाकर चलें। जीवनसाथी की उपेक्षा न करें। महिलाएं अपने पारिवारिक प्रसंगों की उपेक्षा न करें। खान-पान पर विशेष ध्यान दें, स्वास्थ्य को लेकर अड़चनें रहेंगी। कला-जगत के व्यक्ति प्रसन्नता अनुभव करेंगे। प्रेम-प्रसंगों में प्रतिकूलता प्राप्त होगी। नवीन कारोबार का प्रारम्भ मौलिक सूझ-बूझ के साथ ही करें।

अनुकूल तारीखें— ३,५,१२,२१,२४,३०

अनुकूल साधना— महालक्ष्मी साधना।

मीन -

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

यह माह आपके लिए आर्थिक दृष्टि से फलप्रद रहेगा। वाहन प्रयोग में अत्यन्त सावधानी बरतें। जमीन-जायदाद के मामले अत्यन्त सुधरेंगे। नवीन मुकदमों से बचने का प्रयास करें। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। आपकी मदद से किसी का रुका हुआ कार्य बनेगा। सोचा हुआ कार्य पूरा होने से प्रसन्नता होगी। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे।

अनुकूल तारीखें— ३,७,१२,१४,१९,२१,२४

अनुकूल साधना— हनुमान साधना।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	तिथि	पर्व
०९/०९/९५	**भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५**	**पितृ पक्षारम्भ**
१२/०९/९५	आश्विन कृष्ण पक्ष ३	गणेश चतुर्थी
१४/०९/९५	आश्विन कृष्ण पक्ष ५	सिद्ध योग
१६/०९/९५	आश्विन कृष्ण पक्ष ७	अमृत सिद्ध योग
२२/०९/९५	आश्विन कृष्ण पक्ष १३	प्रदोष व्रत
२४/०९/९५	आश्विन कृष्ण पक्ष ३०	अमावस्या
२५/०९/९५	**आश्विन शुक्ल पक्ष १**	**नवरात्रि आरम्भ**
२९/०९/९५	आश्विन शुक्ल पक्ष ५	सर्वार्थ सिद्धि योग
०१.१०.९५	आश्विन शुक्ल पक्ष ७	दुर्गाष्टमी
०३.१०.९५	**आश्विन शुक्ल पक्ष १०**	**विजया दशमी**
०४.१०.९५	आश्विन शुक्ल पक्ष ११	पापांकुशा एकादशी
०८.१०.९५	आश्विन शुक्ल पक्ष १५	शरद पूर्णिमा
१०.१०.९५	कार्तिक कृष्ण पक्ष २	सर्वार्थ सिद्ध योग
१२.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष ४**	**करवा चौथ, गणेश चतुर्थी**
१६.१०.९५	कार्तिक कृष्ण पक्ष ७	अहोई अष्टमी
२०.१०.९५	कार्तिक कृष्ण पक्ष ११	रमा एकादशी
२१.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष १२**	**धन त्रयोदशी**
२३.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष १४**	**दीपावली, लक्ष्मी पूजन**
२४.१०.९५	**कार्तिक कृष्ण पक्ष ३०**	**सूर्य ग्रहण**
२५.१०.९५	**कार्तिक शुक्ल पक्ष १**	**गोवर्धन पूजा**
३१.१०.९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष ८	गोपाष्टमी

संसार के समस्त मानसिक तनावों से मुक्ति पाने का एकमात्र साधन

ध्यान

मनुष्य-मन सदा एक विषय से दूसरे विषय की ओर भागता रहता है, विचारों का यह प्रयास अनवरत चलता ही रहता है, अतः यह बात स्पष्ट है, कि किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करने के लिए मन का अनुशासित होना आवश्यक है।

दिनभर के क्रिया-कलापों तथा बाह्य जगत् से प्राप्त नित्य-निरन्तर उत्तेजनाओं से घिरे हुए, विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त मनुष्य जब नींद की अवस्था में पहुंच कर एक विशेष आनन्द का अनुभव करता है, तब उसका अशान्त मन अपेक्षाकृत शांत हो जाता है।

ध्यान क्यों आवश्यक है?

यह प्रश्न मनुष्य के मन में उठता ही है। प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों आदि ने "ध्यान" करने की प्रक्रिया पर ही अधिक जोर दिया है, इसके पीछे जरूर कोई महत्त्वपूर्ण अर्थ छिपा होगा, युगों का पुराना चिन्तन-अनुभव छिपा होगा, जिसके आधार पर उन्होंने मनुष्य को ध्यान करने का उपदेश दिया, आवश्यकता है उस चिन्तन को समझने की।

वर्तमान जीवन क्रम में तनाव व्यक्ति का अंगसंग बन गया है, इसके बिना स्वच्छ जीवन का चिन्तन विचित्र सा लगता है, इस स्थिति में जीवन का मूल उद्देश्य समझा ही नहीं जा सकता, व्यक्ति जीवन की अपेक्षा मृत्यु को अधिक चाहने लगा है, इस विषमता से इजात पाने के लिए ध्यान ही एकमात्र श्रेष्ठतम उपाय है, जहां न तनाव है, न चिंता है।

मनुष्य की विभिन्न प्रकृतियां उसके चरित्र पर इतना अधिक दबाव डालती हैं, कि वह बहुधा खिन्न और अप्रसन्न दिखने लगता है। मनुष्य-मन में व्याप्त द्वन्द्व व विचार उसका एक कदम आगे बढ़ाते हैं, तो दूसरा पीछे, तीसरा कदम दायें, तो चौथा बायें, इस तरह वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता, और न ही प्रगति कर सकता है, भले ही उसके ये परस्पर निरस्तकारी प्रयास अनन्त काल तक चलते रहें, विरोधी इच्छाएं उसे निराशा और असफलता प्रदान कर धराशायी बना देती हैं, ऐसे मनुष्य के लिए यह आवश्यक है, कि अपने भग्नकारी द्वन्द्व को शान्त करे तथा एक निश्चित दिशा में प्रगति करने के लिए एकाग्रचित्त मन से प्रयास प्रारम्भ कर दे, तभी वह अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंच सकेगा। जब तक वह ऐसा नहीं करेगा, तब तक वह अपनी शक्ति का अपव्यय ही करेगा और उसके हाथ कुछ भी नहीं लगेगा।

इसलिए मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को समन्वित करने की आवश्यकता है, इसके लिए सर्वप्रथम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्षों में सामञ्जस्य बिठाना अत्यन्त आवश्यक है, और इस सामञ्जस्य को प्राप्त करने का सरल उपाय है— **"ध्यान"**।

ध्यान के माध्यम से मनुष्य अपने अन्तर्-बाह्य मन में शांति अनुभव करने लगता है, और तब इच्छाओं का परस्पराघाती युद्ध समाप्त हो जाता है, वह अपने पथ से विचलित नहीं होता, क्योंकि वह ज्ञान की दृष्टि से जीवन को समग्र रूप से देखने लग जाता है, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहता, जहां उसे सफलता प्राप्त न हो, क्योंकि वह एक ऐसी स्थिति को प्राप्त कर लेता है, जहां उसका प्रयास निरर्थक नहीं जाता और न ही उसकी शक्ति का अपव्यय होता है, तब वह अपनी शक्ति को एकत्रित कर पूर्णता से किसी भी कार्य को सम्पन्न कर लेता है।

अधूरे मन से या अशांत मन से किया गया कोई भी कार्य विपथगामी परिणाम ही देता है। शास्त्रानुसार मनुष्य अनन्त और असाधारण शक्तियों का स्वामी होता है, किन्तु अन्तर्द्वन्द्वों व तनावों से घिरे रहने के कारण मनुष्य अपने शक्ति-भण्डार का केवल एक कण मात्र ही प्रयोग कर पाता है, अतः निराशा अवश्यम्भावी है। जब तक मनुष्य मन की मूल धारणा को नहीं समझ सकेगा, तब तक वह तनाव युक्त ही रहेगा।

"मत्वा सीव्यति स मनुष्यः"

अर्थात् 'मन' धातु से 'मनुष्य' शब्द बना है, मनुष्य का अर्थ है, जो चिन्तन करे, विचार करे या विवेक पूर्वक कार्य करे; और मनुष्य तब सही अर्थों में मनुष्य कहलाता है, जब वह मन पर अपना नियंत्रण कर पाने में सक्षम हो पाता है।

"धीयते इति ध्यानं"

अर्थात् **"जिससे मन का स्थिरीकरण हो जाय, वह ध्यान है।"** ध्यान के निरन्तर अभ्यास से मन को समस्त इन्द्रिय विषयों से हटाया जा सकता है, तब मन पर अंकुश रखने वाली बुद्धि ही यह आदेश देती है, कि वह मस्तिष्क से समस्त विचारों को समाप्त कर केवल एक ही

चिन्तन-मनन करे, केवल एक ही बिन्दु पर अपने मन को एकाग्र करे, केवल एक ही सर्वव्यापी सत्ता पर अपना ध्यान केन्द्रित करे।

यह एक सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक साधना है, और इस साधना के निरन्तर करते रहने पर एक समय ऐसा आता है, जब मन एक ही विषय का चिन्तन करने योग्य बन जाता है, और ऐसा मन शक्ति पुञ्ज बन जाता है।

इस स्थिति को प्राप्त कर लेने के उपरान्त व अपने वास्तविक रूप को पहिचान लेने के बाद फिर बाहरी क्रियाकलापों से, संसार के क्षणिक सुखों व अस्थिर दुःखों से वह विक्षुब्ध नहीं होता, फिर न सम्पन्नता उसे बिगाड़ सकती है, और न ही विपत्ति उसे गिरा सकती है। मन, बुद्धि के द्वारा ध्यानावस्था में प्राप्त सत्- चित्-आनन्द का साक्षात्कार जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है। नित्य ध्यानाभ्यास से शुद्ध चेतना में प्रतिष्ठित मन की अन्तर्भेदी दृष्टि के सामने से सारे आवरण हट जाते हैं, फिर सभी जटिलताओं से मुक्त होकर मन कभी भी संशय और भय से ग्रस्त नहीं होता।

बिना ध्यान के जीवन दुःखों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से घिरे होने के कारण तनाव युक्त हो जाता है, इसलिए ध्यान जीवन का उल्लास है, और सही अर्थों में कहा जाय, तो जीवन की पूर्णता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि ध्यान कैसे किया जाय?

१. ध्यान के लिए **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुंह करके बैठना चाहिए।

२. इसके लिए **कुश, मृग चर्म** या **व्याघ्र चर्म का आसन** अनुकूल माना जाता है।

३. सबसे पहले साधक को **पूरक, कुम्भक** और **रेचक** विधि से प्राणायाम करना चाहिए, जिससे मन को एकाग्र किया जा सके।

४. इसके बाद तीन बार "ॐ" की ध्वनि का उच्चारण उदात्त-अनुदात्त और स्वर क्रम विधि से करना चाहिए।

५. अब ध्यान के लिए एक ऐसी अनुकूल शारीरिक मुद्रा अर्थात् आसन, जिसमें **रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी हो,** अतः सुखासन, पद्मासन तथा सिद्धासन में से अपनी इच्छानुसार जिस आसन में आप सहजता से बैठ सकें, उसका चयन कर लें।

६. झुकी हुई रीढ़ की हड्डी स्नायु रचना में बाधक बनती है, जिससे भावों एवं विचारों की तारतम्यता छूट जाती है। यदि मेरुदण्ड सीधा रहता है, तो स्वतः मानसिक समत्व बना रहता है।

७. आसन पर बैठने के उपरान्त दृष्टि किसी भी एक बिन्दु पर केन्द्रित होनी चाहिए।

८. इस प्रकार सुखपूर्वक शरीर का तनाव त्याग दें और विचारों के द्वारा स्थूल शरीर में प्रवेश होने की क्रिया करें।

९. यदि मन बहुत चंचल है, तो इसको स्थिर करने के लिए प्रारम्भिक अवस्था में मनोवैज्ञानिक विधि अपनाइये, जिससे मन की बाह्य वृत्तियों के रुकने से आभ्यन्तर प्रवेश की स्थिति उत्पन्न हो सके।

आप आंख बन्द करके यह चिन्तन करें, जैसे— आप किसी नदी में, नाव में बैठकर धीरे-धीरे बह रहे हैं, नाव लहरों में हवा के झोंके से तैरती हुई कभी नीचे, कभी ऊपर चली जा रही है, उसमें आप बैठे हुए अनन्त जलराशि को, जो शांत भाव से अपने गन्तव्य की ओर बह रही है, दूर तक दृष्टि जमाये हुए देख रहे हैं। आपकी नाव लहरों के थपेड़ों से कभी इस किनारे, तो कभी उस किनारे, और कभी बीच में आपको ले जा रही है, आप दृष्टा भाव से उसमें बैठकर गहरे चिन्तन में खोये जा रहे हैं, किसी अज्ञात आह्लाद से भरकर रोमांचित और प्रफुल्लित हो रहे हैं।

१०. इसी तरह अपने मन को बाह्य विषयों से अलग करने के लिए अनन्य प्रकृतियां भी अपना सकते हैं, जैसे— जंगल में घूमना, पर्वतों की चोटियों पर स्वच्छन्द विचरण या आकाश में वायु मार्ग से उड़ना आदि इन विधियों द्वारा धीरे-धीरे आपका मन एकाग्र हो जायेगा और उस ध्यान को जिसे हम "सम्प्रज्ञात" और "असम्प्रज्ञात" के नाम से जानते हैं, आपका मन उसमें प्रवेश करने लगेगा।

मनुष्य के लिए ध्यान में उतरना या मन को एकाग्र करना उतना ही आवश्यक है, जितना स्थूल शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सन्तुलित आहार की आवश्यकता होती है। मन को सबल और स्वस्थ चिन्तन युक्त बनाने के लिए ध्यान अत्यन्त आवश्यक प्रक्रिया है।

कुछ ही दिनों में कुबेरवत् बनिये

महालक्ष्मी प्रयोग से

पर हो श्रद्धा, एकाग्रता, विश्वास और लक्ष्मी के प्रति अटूट निष्ठा. . .!

आज का युग अर्थ प्रधान हो गया है, पहले मानव धन को इतना महत्त्व नहीं देता था, धन केवल जीवन और विनिमय का ही साधन मात्र होता था, किन्तु सब कुछ नहीं। पहले का मानव अपनी आवश्यकताओं को आपस में मिलजुल कर ही पूरा कर लिया करता था, जैसे जो मोची है, वह जूते बनाकर के दर्जी को दे देता और दर्जी उसे धन के स्थान पर कपड़े सिलकर के दे देता, परन्तु धीरे-धीरे मानव प्रगति करने लगा और इस लेन-देन में मुद्रा का विनिमय होने लगा और इसी प्रकार धीरे-धीरे समय के अनुसार मान्यताएं और आवश्यकताएं बढ़ती गईं, मनुष्य सन्देहशील होता गया, तब वह हर वस्तु को माप-तोल कर लेने में ही विश्वास करने लगा, इस प्रकार प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य, द्वेष और एक-दूसरे को पछाड़ने की प्रवृत्ति बढ़ गई, और व्यक्ति के जीवन में दरिद्रता एक अभिशाप बन गई।

दरिद्री व्यक्ति संसार का सबसे अधम व्यक्ति माना जाता है, जिसके पास धन नहीं होता, वह सबसे ज्यादा दुःखी और परेशान बना रहता है, जिसके सिर पर परिवार का बोझ हो, बच्चों को पढ़ाने के

लिए स्कूल में फीस भरने को धन न हो, पत्नी या बच्चों की इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर सकता हो, कर्जे से मुक्त न हो पा रहा हो, ऐसे व्यक्ति का जीवन तो क्षण-प्रतिक्षण मृत्यु के समान ही है।

आज पूरे संसार का ढांचा आर्थिक धरातल पर ही स्थित है, जीवन के सारे कार्य अर्थ के चारों ओर ही सिमटे हैं, हम चाहें किसी भी मत के अनुयायी हों, किसी भी धर्म को मानने वाले हों, किसी भी विचारधारा से सम्बन्धित हों, परन्तु हमें धन की आवश्यकता पड़ती ही है, और इसीलिए लक्ष्मी के महत्त्व को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

जो इस तथ्य को स्वीकार करते हैं, कि धन जीवन का शत्रु है, धन के कारण व्यक्ति लोभी, हिंसक प्रवृत्ति का हो जाता है, धन धर्म के मार्ग में बाधक है, वे कायर हैं, नपुंसक हैं, जो कि धन तो कमा नहीं सकते और लम्बी-चौड़ी बातें करके अपने-आप को सांत्वना देने का प्रयास करते रहते हैं।

बिना धन के किसी धर्म का अस्तित्व आज के युग में असम्भव है, कोई धार्मिक कार्य सम्पन्न करना हो, साधु-संन्यासी आदि को कुछ सुविधाएं प्रदान करनी हों, समाज को सहयोग देना

ऐश्वर्यवान बनने के लिए साधना महत्त्वपूर्ण साधन है, साधना का अर्थ है– एकाग्रता।

. . .आत्मोत्सर्ग से मां की अनुकम्पा स्वतः ही साधक को प्राप्त होती है, क्योंकि जहां लक्ष्मी है, वहीं श्री, वैभव एवं समृद्धि है।

लक्ष्मी-लाभ के लिए प्रयत्न मुख्य धुरी है, किन्तु इसके साथ यदि साधना को अंगसंग कर लिया जाय, तो सफलता स्वतः ही चलकर साधक के द्वार को खटखटाने लगती है।

हो, इसके लिए धन की आवश्यकता होती ही है। प्रारम्भिक काल से लेकर आज तक मानव के चरम विकास के लिए धन की महत्ता को स्वीकार किया गया है।

धनवान होना कोई गुनाह नहीं है, कोई भी लखपति या करोड़पति बनने के सपने देख सकता है, किन्तु सपनों को साकार रूप कैसे दिया जा सकता है, इस तथ्य से मनुष्य अज्ञात है, और इसीलिए वह दुःखी है। धनपति बनना कोई अधार्मिक कार्य नहीं है, अपितु मानव-जीवन की श्रेष्ठता है। जीवन में आर्थिक दृष्टि से उन्नति प्राप्त करना या सुख-सौभाग्य, प्रतिष्ठा, समृद्धि प्राप्त करना एक तरह से जीवन को पूर्णता देना है।

अर्थ को प्राप्त करने के लिए भी धर्म की आवश्यकता पड़ती है। कई बार मनुष्य अत्यधिक परिश्रम करके, भाग-दौड़ और दिन-रात एक करके भी उतना धन नहीं कमा पाता, जिससे वह अपना और अपने परिवार का लालन-पालन भली प्रकार से कर सके, चौबीसों घण्टे व्यापार में जुटा रहने के बावजूद भी वह आर्थिक दृष्टि से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता, उसे अनेकों बाधाओं का सामना करना पड़ता है, किन्तु फिर भी आर्थिक दृष्टि से जो सम्पन्नता उसे मिलनी चाहिए, वह नहीं मिल पाती और ऐसी स्थिति में वह अपने-आप को भाग्य के ऊपर छोड़ देता है। ऐसी मान्यता है, कि मनुष्य यदि परिश्रम करे, तो वह अपने भाग्य को भी परिवर्तित कर सकता है, किन्तु आमतौर पर यह देखा जाता है, कि हमसे ज्यादा परिश्रम तो मजदूर करते हैं, किन्तु क्या वे धनवान बन सके, किस प्रकार वे कठिन मेहनत और परिश्रम करते हैं, धूप और सर्दी में भी अपने शरीर की परवाह किये बगैर कठिन-से-कठिन कार्य कर अपने खून को जलाते हैं, परन्तु फिर भी वे अपने जीवन की आवश्यक सुख-सुविधाओं को नहीं प्राप्त कर पाते, इसीलिए परिश्रम से भाग्य का निर्माण होता है, केवल शब्द प्रवंचना है, वास्तविकता से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

शास्त्रों में देवताओं में श्रेष्ठ विष्णु की पत्नी के रूप में लक्ष्मी को स्थान देकर उसकी श्रेष्ठता और उसके महत्त्व को सिद्ध कर दिखाया है। मानव अपने प्रयत्न और परिश्रम के आधार पर भाग्य नहीं बदल सकता, किन्तु शास्त्रादि के आधार पर केवल एक ही तत्त्व ऐसा है, जिससे भाग्य में परिवर्तन किया जा सकता है, दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है, यदि भाग्य में दरिद्रता लिखी है, तब भी उसे सौभाग्य में परिवर्तित कर श्री, सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है और वह तत्त्व है— **''साधना''**, जिसके आधार पर असम्भव कार्य को भी सम्भव किया जा सकता है।

वैदिक युग से ही श्री सम्पन्न होना सौभाग्य और श्रेष्ठता का प्रतीक माना गया है; इसीलिए किसी व्यक्ति को आदर देने के लिए हम ''श्रीमान'' या ''श्रीमती'' शब्द का प्रयोग करते हैं। ''श्री'' का अर्थ है— **लक्ष्मी** और ''श्रीमान'' का अर्थ है— **लक्ष्मी युक्त** होना।

परन्तु केवल परिश्रम करने से धन संचय नहीं हो पाता, केवल शिक्षा-प्राप्ति से ही लक्ष्मीयुक्त नहीं हुआ जा सकता, सैकड़ों ऐसे युवक हैं, जो बी०ए० की डिग्री प्राप्त करके भी बेरोजगार रहते हैं, और ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो धनवान बनने के चक्कर में बड़े-बड़े व्यापार आदि करते हैं, फिर भी वे धन संचय नहीं कर पाते, किन्तु यदि सही ढंग से साधना-अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय, तो जीवन के इस दरिद्रता के पंक से बाहर निकला जा सकता है।

यूं तो शास्त्रों में अनेकों लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाएं बताई गई हैं, किन्तु **''महालक्ष्मी प्रयोग''** के माध्यम से व्यक्ति कुछ ही दिनों में कुबेरवत् बन सकता है। शुद्ध और सात्विक मन से की गई साधना व मंत्र-जप विशेष लाभदायक सिद्ध होती ही है, इससे उसे निम्नलिखित लाभ स्वतः ही प्राप्त होने लग जाते हैं—

१. **आर्थिक रूप से वह समाज में एक प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति माना जाने लगता है।**
२. **उसके जीवन से दरिद्रता समाप्त हो जाती है, उसे दिन-प्रतिदिन नये-नये अनुभव होने लगते हैं।**
३. **यदि नौकरी नहीं लग रही हो या व्यवसाय में बार-बार नुकसान हो रहा हो, तो वह समस्या स्वतः ही दूर होने लगती है।**

४. **जिस व्यापार को करने की इच्छा हो, उसके पूर्व आसार व स्रोत स्वतः ही खुलने लगते हैं।**
५. **व्यापार के साथ-साथ समाज में भी प्रतिष्ठा, सम्मान, यश और श्रेष्ठता प्राप्त होने लगती है।**
६. **यदि दिवालिया होने की स्थिति आ रही हो, तो यह दूर होने लगती है।**
७. **ऋण भार से दबा हुआ व्यक्ति इस प्रयोग से शीघ्र राहत अनुभव करने लगता है।**
८. **घर में सुख-शांति का वातावरण बनने लग जाता है।**

इत्यादि लाभ साधक को स्वतः ही इस प्रयोग के माध्यम से प्राप्त होने लग जाते हैं।

यह निर्धनता को सम्पन्नता में, रंक को राजा में परिवर्तित करने का अचूक एवं आवश्यक प्रयोग है, जो शीघ्र ही मनुष्य को धनवान, लक्ष्मीवान, सम्पन्नवान बनाने का उत्तम उपाय है।

प्रयोग विधिः

१. प्राण-प्रतिष्ठित **महालक्ष्मी यंत्र, धनाक्ष गुटिका एवं कमलगट्टे की माला** इस प्रयोग में प्रयुक्त की जाने वाली विशेष सामग्री हैं।
२. इस प्रयोग का विशिष्ट मुहूर्त है **५ नवम्बर १९९५ वैकुण्ठ चतुर्दशी, रविवार को रात्रि ९ बजे से ११ बजे के मध्य** या फिर अन्य किसी भी **गुरुवार** के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।
३. इस प्रयोग में **पीला आसन, पीली धोती** तथा **गुरु चादर** का प्रयोग करें।
४. इस प्रयोग को **उत्तर दिशा** की ओर मुंह करके करें।
५. **सरसों** या **तिल के तेल का दीपक** जलायें।
६. प्रयोग करने से पूर्व साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें तथा अपने साधना कक्ष को सुगन्धित धूप से सुवासित करें।
७. प्रयोग से पूर्व **गुरु-पूजन** एवं **४ माला गुरु मंत्र-जप** अवश्य करें।
८. आसन पर बैठकर **पवित्रीकरण करें** अर्थात् बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र को पढ़ें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

९. इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें, आचमन के साथ निम्न मंत्रों का उच्चारण करें-

ॐ केशवाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ नारायणाय नमः

१०. अपने सामने चौकी पर पीला कपड़ा बिछाकर उस पर एक प्लेट रखें, उसमें कुंकुम से **"श्रीं"** बीज अंकित कर उस पर "महालक्ष्मी यंत्र" को स्थापित करें, इससे पूर्व यंत्र को स्नान कराकर पोंछ लें।
११. यंत्र पर कुंकुम से तिलक करें, उसके बाद बायें हाथ में चावल लेकर निम्न मंत्रों को बोलते हुए उसे यंत्र पर छोड़ें–

ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः
ॐ सिद्धिप्रदायै नमः
ॐ सौभाग्यदायै नमः

इसके बाद हाथ में बचे हुए सभी चावलों को यंत्र पर चढ़ा दें।

१२. फिर यंत्र पर पुष्प चढ़ायें तथा धूप व दीप दिखाकर पूजन सम्पन्न करें।
१३. "धनाक्ष गुटिका", जो आपके दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का प्रतीक है, उसे दाहिने हाथ में लेकर मुट्ठी बंद कर लें तथा आसन पर खड़े होकर **१५ मिनट** तक निम्न मंत्र का भावपूर्ण हृदय से जप करें–

"ॐ धनाक्षै सिद्धिरूपायै नमः"

१४. मंत्र-जप के बाद इस गुटिका को यंत्र के बायीं ओर स्थापित कर, कुंकुम का तिलक कर अक्षत व पुष्प चढ़ायें तथा शीघ्र लक्ष्मी लाभ की कामना करते हुए हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें।
१५. इसके पश्चात् निम्न मूल मंत्र का उपरोक्त माला से **११ माला** जप करें–

मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

१६. मंत्र-जप के पश्चात् सभी सामग्री को पीले कपड़े में बांधकर पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा एक महीने के पश्चात् उसे नदी में प्रवाहित कर दें।

निश्चित ही यह प्रयोग आपको धनपति बनायेगा ही, यदि आप पूर्ण श्रद्धा, विश्वास के साथ महालक्ष्मी प्रयोग के प्रति अटूट निष्ठा रखते हुए इसे सम्पन्न करें तो; इस प्रयोग को अनेक साधकों ने सम्पन्न किया है तथा उन्हें यथेच्छ लाभ मिला है।

साधना-सामग्री न्यौछावर : महालक्ष्मी यंत्र - २४०/-, धनाक्ष गुटिका - ६०/-, कमलगट्टे की माला - १५०/-

कई वर्षों बाद घटित . . .

अद्भुत तेजस्वी सिद्धिदायक

स्वस्तिक शुभ लाभ

नवरात्रि का अर्थ है— **''चैतन्य शक्ति पर्व''**, एक ऐसा पर्व, जो शक्ति का संचरण कर जीवन को समर्थवान बना देता है, और यदि साथ में मंत्रों का बल एवं पूज्य गुरुदेव का वरदहस्त प्रत्यक्ष प्राप्त हो, तो उसके लिए कुछ भी अप्राप्य रह ही नहीं सकता, क्योंकि इस दुर्धर्ष जीवन में धन, धान्य, धरा, भवन, कीर्ति, आयु, वाहन, पुत्र और पौत्र सब कुछ मंत्रसिद्धि या शक्ति द्वारा ही सहजता से प्राप्त हो सकता है।

मानव का उद्देश्य अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करना है और उसमें पूर्ण हो जाना है। मनुष्य अपने प्रयत्नों से सब कुछ प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है, क्योंकि क्रियाशील व्यक्ति का जीवन ही वास्तविक जीवन है।

नवरात्रि साधना शिविर

दिनांक : 25-26-27-28 सितम्बर 1995

शिविर स्थल : राजा गार्डन चौक, (विशाल सिनेमा के पीछे) बस टर्मिनल, नई दिल्ली-27

एक तरह से देखा जाय, तो मंत्र मानव जीवन की उपलब्धियों के प्रदाता हैं और साधना इसका सर्वश्रेष्ठ मार्ग है; जब साधना और कर्म का समन्वय होता है और वह भी विशेष मुहूर्त में, विशेष व्यक्तित्व के सान्निध्य में, तो साधक के उदात्त जीवन का निर्माण स्वतः ही सम्भव हो जाता है। निश्चय ही यह नवरात्रि का पर्व व्यक्ति में नवीन प्राणश्चेतना जाग्रत करता ही है और एक दिशा निर्देश करके **''असतो मा सद्गमय''** की ओर उसको सुप्रेरित करता है।

नवरात्रि का तात्पर्य है– नव+रात्रि, यानि जीवन में व्याप्त गहन अंधकार को समाप्त कर प्रकाश की ओर अग्रसर होना और जीवन में कुछ नया घटित हो जाना, जो दूसरों से अलग हो, ऊर्जा और शक्ति से सम्वलित हो।

जगज्जननी मां दुर्गा अपने आराधकों को अपनी प्राणस्विता, तेजस्विता, ऊर्जस्विता प्रदान कर उनके जीवन को धन्य कर देती हैं, क्योंकि मां अपने पुत्र को कभी भी असहाय या अशक्त नहीं देख सकती, यदि साधक शक्ति की आराधना करता है, तो मां को सर्व शक्तिदायिनी स्वरूप में उसके हृदय, उसके प्राणों व तन-मन में समाहित होना ही पड़ता है। यदि उस शक्ति को अपने भीतर समाहित करने

श – ऐश्वर्य, सुख-सुविधा, सौभाग्य
क्ति – पराक्रम, बुद्धि, बल, युक्ति

ऐश्वर्य व पराक्रम दोनों अपने भक्त को प्रदान कर देने वाली ही शक्तिशाली मां दुर्गा हैं।

की प्रक्रिया ज्ञात हो तो, क्योंकि एक शिशु जानता है, कि मां की आराधना या आवाहन कैसे किया जाता है, जिससे उसे सब कुछ छोड़कर आने के लिए विवश होना ही पड़ता है, क्योंकि मां करुणा, ममत्व और स्नेह की प्रतिमूर्ति होती है।

शक्ति तो वह शस्त्र है, जिसके माध्यम से किसी भी महासंग्राम को आसानी से जीता जा सकता है, अगर ऐसा न होता, तो नवरात्रि रची ही नहीं जाती, शक्ति साधनाओं का कोई विशेष महत्त्व ही नहीं होता।

इस बार नवरात्रि कुछ ऐसी ही साधनात्मक शक्ति को अपने साथ लेकर आ रही है, जिस शक्ति के अजस्र स्रोत में साधकों के हृदय को आप्लावित करके पावनतम कर देने की प्रक्रिया सम्पन्न होगी, क्योंकि पहली बार नवरात्रि की इस पावन बेला में पूज्य गुरुदेव की अनुकम्पावश, जो साधनाएं नवीन और उत्कृष्ट हैं, वे साधक जो सफलता की आकांक्षा लिए हुए अत्यन्त उत्सुक और श्रद्धानत हैं, उन्हें पूर्णता देने के लिए ये सहायक सिद्ध होंगी। इस साधना शिविर में इन विशिष्ट साधनाओं और दीक्षाओं को प्राप्त कर, प्रत्येक साधक अपने जीवन को उज्ज्वल कर उसे पूर्णरूप से सार्थक कर सकता है।

प्रतिपदा सोम वारेन हस्त नक्षत्र योर्विता।
कन्या चन्द्रे शुभारम्भ नवरात्रि पूर्ण सिद्धिः।।

प्रखर ज्योतिषी एवं **स्वामी एकात्मानन्द** के अनुसार– ''यदि किसी भी वर्ष में आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को सोमवार हो, हस्त नक्षत्र हो, कन्या का चन्द्रमा हो और नवरात्रि प्रारम्भ होती हो, तो वह अपने-आप में पूर्ण सिद्धिप्रद नवरात्रि कहलाती है।''

इस बार कई वर्षों के बाद ऐसा मुहूर्त उदित होने जा रहा है, जो एक संयोग ही कहा जा सकता है।

जब मातृशक्ति की बात आती है, तो स्वतः ही किसी भी शक्ति उपासक के नेत्रों व हृदय में अत्यन्त आह्लाद के साथ मां दुर्गा का मनोहारी बिम्ब प्रस्तुत होने लगता है।

जब सभी ग्रह एक ही बिन्दु पर एकत्र हों, तब अद्वितीय क्षण का निर्माण होता है, और उस विशेष क्षण में की गई साधनाएं और ली गई दीक्षाएं साधक के जीवन को प्रफुल्लित और विकसित करके सौभाग्य प्रदान करती ही हैं। यदि उन क्षणों का लाभ उठा लिया जाय, तो मां दुर्गा अपने त्रिगुणात्मक स्वरूप में पूर्ण श्रृंगार युक्त हो सर्व सौभाग्यदायिनी होती ही हैं।

प्रत्येक पुरुष के अन्दर त्रिगुणात्मिका प्रकृति, जो सत्व, रज, तम तीनों गुणों की सूचक है, सुप्त अवस्था में होती है, यह नवरात्रि शिविर इस सुसुप्तावस्था को चैतन्यावस्था तथा अधोगामी जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने का उचित अवसर है, जो पूज्य गुरुदेव की कृपा व उनकी विशेष अनुकम्पा ही कही जा सकती है।

नवरात्रि का यह साधना शिविर मानव में निहित शक्तियों के प्रस्फुटन की क्रिया से युक्त है, और इस क्रिया का ज्ञान तो गुरु की उपस्थिति से ही प्राप्त हो सकता है। प्रायः सभी मनुष्यों को स्वयं अपनी अन्तःचेतना का ज्ञान नहीं होता, उन्हें तो सिर्फ अपने बाह्य अंगों का ही ज्ञान होता है, परन्तु जो शक्ति उन बाह्य अंगों को संचालित करती है, उसका प्रत्यक्ष दर्शन गुरु के बिना नहीं किया जा सकता।

साधना शिविरों के पीछे गुरुदेव की मात्र यही भावना रहती है, कि कोई भी व्यक्ति या साधक अपने जीवन में अधूरा या पीड़ित न रह जाय, कदाचित् इसी भावना का स्मरण कराने के लिए गुरुदेव वर्ष में दो बार नवरात्रि की पावन बेला में शिष्यों को वह चैतन्यता प्रदान करते हैं, जो उनके जीवन के समस्त अभावों को दूर कर सके, क्योंकि प्राचीन काल से ही इस भावना को पूर्ण करने के उद्देश्य से ही इस शक्ति पर्व का विधान रचा गया है, जो शास्त्र सम्मत है।

सही साधक वही होता है, जो परिस्थितियों से जूझकर भी इस अवसर का लाभ उठा ले, जो अपने परिवार व समाज की परवाह किये बिना, कंटीले रास्तों को लांघता हुआ इन विशिष्ट क्षणों को चूके नहीं और अपने जीवन को संवारने के लिए निरन्तर गतिशील बना रहे, वस्तुतः ''शक्ति'' की प्राप्ति गतिशील साधक को ही होती है, भाग्य का रोना रोने वाले या असहाय बनकर गिडगिड़ाने वाले को नहीं।

यह नवरात्रि शिविर साधक के भीतर उस चैतन्य शक्ति को जाग्रत करने का पर्व है, जो उसे समर्थ व क्षमतावान बनाकर उसके जीवन को निर्द्वन्द्व कर देती है, जब साधक स्वयं यह कह उठता है– ''मुझमें वह क्षमता, वह सामर्थ्य, वह शक्ति है, जिसके बल पर मैं असम्भव को भी सम्भव करके दिखा सकता हूं।'' साधक में इस भावना का जाग्रत होना उसके जीवन की पूर्णता का प्रतीक है और यह साधना शिविर पूर्णता प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण अवसर है, जिसे चूकना जीवन की न्यूनता ही कही जा सकती है।

इस बार नवरात्रि २५ सितम्बर से आरम्भ हो रही है और हमने प्रथम विशेष चार दिनों का ही नवरात्रि शिविर

रखा है, यद्यपि यह शिविर नौ दिन का भी हो सकता था, परन्तु साधकों की मांग पर नौ दिनों की साधनाओं को प्रथम चार दिनों में ही पूर्णता के साथ समेटा गया है, इसलिए इस बार २५, २६, २७, २८ इन चार दिनों की ही नवरात्रि सम्पन्न की जा रही है, जिस प्रकार कोई भी वृक्ष अपने-आप में चाहे वह कितना भी फैला हुआ हो, मूल रूप से तो उसकी जड़ें ही हैं, जो पतली-पतली हजारों तरफ फैली होती हैं, इन चार दिनों में सम्पन्न होने वाली साधनाएं भी अपने-आप में पूरे नौ दिनों की साधनात्मक जड़ें हैं, जो पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैली हुई हैं, जिसके ऊपर नवरात्रि के दिन टिके हैं,अतः इसी कारणवश इस नवरात्रि शिविर के चार दिनों का अत्यधिक महत्त्व है।

नवरात्रि के ये चार दिन अपने-आप में चार युगों के प्रतीक हैं, क्योंकि पहली बार कई वर्षों बाद ऐसे योग निर्मित हो रहे हैं, जिसके प्रभाव से ये चार दिन अपने-आप में पूर्ण कहे जा सकते हैं, वह दिव्य अलौकिक शक्ति साधकों को प्रदान करने के लिए, यह कोई आवश्यक नहीं कि नवरात्रि के नौ दिनों तक साधना की जाय, यह तो उस सक्षम पुरुष, जो मार्ग दर्शक के रूप में हमारे सामने अडिग होकर के निश्चित ही साधकों को पूर्णता देने के लिए खड़े हैं, उनकी चैतन्यता और तपस्यांश के माध्यम से ऐसी क्रिया सम्पन्न होती है; पीछे भी इस तरह की कई घटनाएं घटित हुई हैं, जो अपने-आप में उस समय आश्चर्यजनक थीं, किन्तु जो हमारे सामने आज़ सामान्य रूप में उपस्थित है, इसीलिए चार दिन का यह महत्त्वपूर्ण शिविर साधकों के दुर्भाग्य के द्वार को खोलकर सौभाग्य प्रदान करने वाला स्वर्णिम अवसर है, और यही पूज्य गुरुदेव का साधकों के अनुरोध पर निश्चित और आखिरी मन्तव्य है, क्योंकि वे उस ग्रह योग के क्षण विशेष को पकड़ने में सक्षम हैं, जो ऋषि युग के वर्तमान में अन्यतम शक्तिपात आदि अनन्त साधनात्मक प्रक्रियाओं के अद्वितीय वेत्ता हैं, प्रणेता हैं और कर्ता हैं।

कभी-कभी दुर्भाग्यवश यह सब जानते हुए भी साधक अपनी बुद्धिवादिता के कारण ऐसे क्षणों को चूक जाते हैं, और बाद में पछताने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाते। महाभारत के बहुत से योद्धाओं को पता था, कि कृष्ण साधारण व्यक्तित्व नहीं हैं, उनके साथ युद्ध करना श्रेयकारक नहीं है, फिर भी उन्होंने कौरव पक्ष में ही रहना स्वीकार किया। यहां यह बात इसलिए उद्धृत की गयी है, जिससे आप पूज्य गुरुदेव की तेजस्विता को जान कर भी अनजान न बन जायें और उनके द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण करने से वञ्चित न हो जाये।

क्योंकि गुरुदेव का प्रत्येक कार्य महत्त्वपूर्ण होता है, निश्चित ही उनकी यह प्रक्रिया उस समय साधक को ज्ञात नहीं हो सकती, वह तो कालांतर में ही फलित होने पर उपादेय और श्रेय रूप में उसको विदित होता है।

सोम हस्ते नक्षत्र वेध युक्त सर्वेग्रहा एकत्व पूर्ण युक्ताः।
नवरात्रि प्रारम्भ पूर्ण मेवत्व अद्भुतयोग समान्विता।।

यदि आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को सोमवार हो, हस्त नक्षत्र हो और शेष नक्षत्र भी वेदयुक्त हों और सभी ग्रह ज्योतिषीय दृष्टि से एकयुक्त हों तो ऐसे समय में नवरात्रि का आना, उसमें भाग लेना और साधना सम्पन्न करना, इस दृष्टि से यह अपने-आप में अद्भुत योग ही कहा जा सकता है, और इस बार कई सालों के बाद ही ऐसा योग वापिस आया है, इसलिए यह नवरात्रि हमारे जीवन में सौभाग्य प्रदायक है, क्योंकि ऐसा योग अगली बार आये या न आये और यदि आये तो उस समय का हम उपयोग कर पायें या नहीं, यह निश्चित नहीं कहा जा सकता, इसलिए इस योग का हम जितना लाभ उठा पायें, उतना ही कल्याणकारी सिद्ध होगा।

जब ऐसा दिव्य सौभाग्य हमारे सामने नवरात्रि शिविर के रूप में उपस्थित है, तो ऐसी स्थिति में सभी तर्कों को छोड़कर अनुकूल निर्णय लेना ही साधक के लिए हितकारक है।

चार दिवसीय इस साधना शिविर में पूज्य गुरुदेव द्वारा साधकों की न्यूनताओं और अभावों को देखते हुए ये दिव्यतम प्रयोग उनके कष्टों के उन्मूलन के लिए तथा भौतिक एवं आध्यात्मिक कामना पूर्ति हेतु सम्पन्न करवाये जायेंगे, जो इस प्रकार हैं—

१. भगवती जगदम्बा बिम्बात्मक प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग।
२. शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने वाला बगलामुखी प्रयोग।
३. इन्द्राणी महालक्ष्मी सिद्धि प्रयोग।
४. सम्पूर्ण मनोवांछित कामना सिद्धि प्रयोग।
५. ब्रह्म तत्त्व प्राप्ति ब्रह्मर्षि प्रयोग।
६. समस्त साधना सिद्धियों में सफलता प्राप्ति प्रयोग।
७. गुरु हृदयस्थ धारण प्रयोग।
८. जीवित जाग्रत चैतन्य सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग।

निश्चित ही ये साधनाएं असाधारण हैं, देव दुर्लभ हैं, जो हमें पूज्य गुरुदेव की करुणावशाद प्राप्त होंगी, इनके महत्त्व को समझते हुए, शिविर में भाग लेना जीवन के अद्वितीय एवं स्वर्णिम क्षण ही कहे जा सकते हैं।

पाठकों के पत्र

★ हिन्दुस्तान के गौरवशाली मानव-जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** का **जुलाई अंक १९९५** पढ़कर अपार प्रसन्नता हुई। सारी रचनाएं सुरुचिपूर्ण, उपयोगी, प्रेरणादायक, प्रभावात्मक, चिन्तनीय, संग्रहणीय हैं, मैं इसके आन्तरिक वैभव से अभिभूत हूं। यह पत्रिका उत्कर्ष के मार्ग पर गमन कर रही है। इस पत्रिका का नियमित अध्ययन अत्यन्त उपयोगी होगा, क्योंकि यह हमारा मार्गदर्शन कर हमें श्रेय की ओर प्रेरित करती है।

रमेश कुमार मिश्र ''प्रेमी'', मीरगंज, बिहार

★ महोदय, आपकी पत्रिका पढ़कर अजीब सी अनुभूति हुई, आस्था की ज्योति जला दी आपकी पत्रिका ने। इस पत्रिका को पढ़कर हर विषय पर गूढ़ता से मंथन करता हूं, तो लगता है कि हमारे पूर्व ऋषि-मुनि द्वारा प्रणीत मार्ग की खोज आपने कर, अपने शिष्यों को उस मार्ग पर ले जाने का निश्चय कर लिया है, यह भूगर्भीय सच्चाई आप इस संसार को दे रहे हैं। मैंने कुछ प्रयोग किये हैं, उनमें गुरुदेव के आशीर्वाद से प्रत्यक्ष सफलता प्राप्त हुई।

महेश कुमार शर्मा, चित्तौड़गढ़

★ महोदय, **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका''** का नियमित अध्ययन कर मनुष्य आने वाले भयावह समय को सुधार कर जीवन को सफल, सुखी बना सकता है। **''राशिफल''** १०० प्रतिशत सही निकलता है, इसके लिए बधाई।

प्रह्लाद जसवानी, मण्डला

★ मैंने गुरुदेव रचित पुस्तक **''ध्यान, धारणा और समाधि''** तथा **''गुरु गीता''** का अध्ययन किया है। मैं गद्‌गद हृदय से कह रहा हूं, कि समस्त ब्रह्माण्ड का, समस्त संसार का निचोड़ इन पुस्तकों के पन्नों में समेट दिया है। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं, कि ये ग्रंथ आने वाले युग के लिए उपनिषद सिद्ध होंगे।

इन्द्रपाल सिंह, रोहिणी, दिल्ली

★ महोदय, पत्रिका का **जून-९५** के अंक में **''संस्कृति के पुरोधा डॉ० श्रीमाली''** लेख पढ़कर, जिसमें कि उनके जीवन की घटनाओं को दर्शाया गया है, मैं अपने आंसुओं को रोक नहीं पाया। बार-बार अपने भाग्य को धन्य समझते हुए सोचा, कि हमें ऐसे दिव्य पुरुष की सान्निध्यता प्राप्त हुई है। आपसे प्रार्थना है, कि अगले अंकों में भी इस प्रकार के लेख प्रकाशित करें।

सुरेन्द्र कुमार बेले, आमला

★ महोदय, मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूं, मैं इसे डेढ़ साल से लगातार पढ़ता आ रहा हूं, मैं इस पुस्तक में अनेकों साधनाओं और लेखों को पढ़ चुका हूं, परन्तु खासतौर पर **''साधक साक्षी हैं,''** तो जैसे मेरे मन तथा आत्मा के तारों में कोई झंझावात उत्पन्न कर गया हो। धन्य हैं वे लोग, जिन्होंने आप जैसी महान हस्ती का इतने नजदीक से अवलोकन किया तथा साधनाओं में अनुभूतियां प्राप्त कीं।

अतुल तनेजा, नई दिल्ली

★ यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि गुरुदेव जी वापस सिद्धाश्रम जा रहे हैं। हम सभी गुरु भाई-बहनों का आपसे सविनय आग्रह है कि हमें बीच राह में छोड़कर अभी न जायें।

निर्मला जैन, कलकत्ता

★ **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका आज की सर्वाधिक ज्ञान वर्धक पत्रिका है, इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है। आपकी पत्रिका मुझे समय से नहीं मिल पाती, कृपया इसे हर माह जल्दी भेजने की कृपा करें।

अनिल कुमार पारीक, कन्नौज

★ मैं आपकी पत्रिका का नवीन पाठक हूं। **अप्रैल ९४** का **हीरक जयन्ती महोत्सव** के अंक में **''वह काजल''** बहुत ही भयानक और रोमांचक साधना है, पढ़कर बहुत खुश हुआ। कृपया ऐसी ही रोमांचक साधनाएं देते रहें।

देवराज, पाली

★ मैंने आपकी पत्रिका **''शक्ति विशेषांक''** पढ़ी और उसमें दिये प्रयोग किये, काफी कुछ सफलता मिली, लेकिन पूर्ण सफलता के लिए मेरी सामग्री भी अधूरी थी, इसलिए आपसे निवेदन है कि मुझे हनुमान जी की सिद्धि के लिए ''प्राण प्रतिष्ठा युक्त बजरंग बली यंत्र'' भेजने की कृपा करें।

गोविन्द सिंह, अलमोड़ा

★ पूज्यवर आपके पावन चरणों में जो अनन्त वात्सल्य की अनुभूति मुझे प्राप्त होती है, मैं प्रकट नहीं कर पाता। जब आप इस अपराधी जड़-जीवन पर कभी सरलता से दो शब्द भी कह देते हैं, तो उस दिन खुशी का नशा छा जाता है। मैंने जब से बोकारो में आपसे दीक्षा ली है, तब से मेरा जीवन ही बदल गया है। पहले तो हमारे परिवार में कोई न कोई बीमार ही रहता था, लेकिन जब से आपका आशीर्वाद मिला है, तब से तो सबका जीवन ही बदल गया है।

गणेश भारद्वाज, वाराणसी

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर केवल जोधपुर टेलीफोन नं०-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आपके द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में 24 घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं० - 0291-32209
: फेक्स नं० - 0291-32010

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि ''गुरुधाम'' दिल्ली कार्यालय में लगा फेक्स नं० बदल गया है। अब आप नये नं० में फेक्स करें–

पहले फेक्स नं० : 011 - 7186700
वर्तमान फेक्स नं० : 011 - 7196700

२१.१०.९५

आकस्मिक धन वर्षा

आप धन त्रयोदशी के दिन मंत्र-जप करें और धन की वर्षा न हो, ऐसा तो सम्भव ही नहीं है। यूं तो किसी भी लक्ष्मी साधना को सिद्ध कर धन प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु धन त्रयोदशी जैसे दिवस विशेष पर, **''स्वर्ण लक्ष्मी प्रयोग''** सम्पन्न करने पर आकस्मिक रूप से धन वर्षा होती ही है।

धन त्रयोदशी अपने-आप में एक श्रेष्ठतम दिवस है; तांत्रिकों और गृहस्थों दोनों के लिए ही अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। जीवन का प्रत्येक क्षण अपनी एक विशिष्टता लिए हुए होता है। जब तक हम किसी क्षण को समझ नहीं लेते, तब तक हम उस क्षण की महत्ता का भी एहसास नहीं कर सकते।

''वाल्मीकि रामायण'' में एक स्थान पर एक सन्दर्भ में लिखा है– एक बार जब विश्वामित्र

शुभ मुहूर्त में की गई प्रत्येक साधना सफल होती ही है, क्योंकि समय का प्रभाव सर्वोपरि है, एक क्षण का चूक जाना कार्य में विघ्न है। समय की सदुपयोगिता साधक का सौन्दर्य है, साधक की दक्षता है।

धन त्रयोदशी आपको लक्ष्मीवान बनने के लिए सौभाग्य प्रदान करने वाला ऐसा ही काम-कल्पतः सिद्ध हो, इसके लिए आवश्यक है यह प्रयोग. . .!

के लिए ही है

धन त्रयोदशी और इन्द्रकृत स्वर्ण लक्ष्मी प्रयोग

भगवान राम व लक्ष्मण को धनुर्विद्या का ज्ञान दे रहे थे, तब उन्होंने उन दोनों राजपुत्रों को सर्वप्रथम काल का ज्ञान कराया, क्योंकि किसी भी कार्य की पूर्णता काल-ज्ञान के विना असम्भव है।

उन्होंने वताया कि– **''जीवन में विजय-प्राप्ति तव तक सम्भव नहीं है, जब तक तुम्हें समय का ज्ञान नहीं होगा, क्षण का ज्ञान नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक क्षण अपने-आप में एक अलग महत्त्व लिए हुए होता है।''**

लक्ष्मण ने विश्वामित्र से एक प्रश्न करते हुए कहा– ''क्या केवल निर्धारित क्षणों पर ही युद्ध किया जा सकता है, यदि क्षण विशेष नहीं हो, तो युद्ध में विजय प्राप्त नहीं की जा सकती?''

उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा– **''हो तो सकती है, किन्तु वह अपने-आप में अत्यंत कठिन एवं कठोर होती है, इसकी अपेक्षा यदि क्षण विशेष का ज्ञान हो, तो वह विजय अपने-आप में पूर्ण साफल्यतादायक हो जाती है।''**

फिर विश्वामित्र ने लक्ष्मण से कहा– ''तुम अपने धनुष पर बाण चढ़ा दो, और ये जो सामने ताड़ के सात वृक्ष तुम्हें दिखाई दे रहे हैं, जिस क्षण मैं कहूं, तुम इन पर अपना बाण छोड़ देना और एक साथ सातों पेड़ों को बींध देना।

लक्ष्मण शर-संधान के लिए खड़े हो गये और रात्रि के उस विशेष क्षण में, जो एक स्वर्णिम क्षण कहलाता है, विश्वामित्र के कहने पर उन्होंने तीर से ताड़ के वृक्षों को बेध दिया।

फिर विश्वामित्र ने लक्ष्मण से कहा– ''अब तुम स्वयं जाकर देख लो, उन ताड़ के वृक्षों को और निर्णय
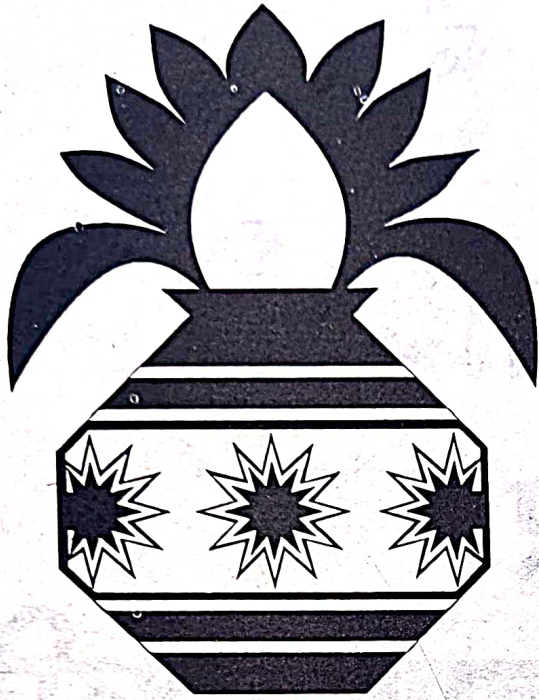
जीवन में सतत धनागम का होना सौभाग्य परता है, इन्द्र की महत्ता ऐश्वर्य से ही है, क्योंकि उसने इस प्रयोग को अपने जीवन में स्थान देकर अपने राज्य को सर्व सम्पन्नतायुक्त बनाया।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर कोई भी इन्द्रवत ऐश्वर्यवान बन सकता है, आप भी. . .

कर लो, तुम्हें तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा।

लक्ष्मण ने पास जाकर देखा, कि पहला पेड़ स्वर्ण के समान अत्यंत कांतिवान बन गया है, दूसरा पेड़ हल्के स्वर्णिम रंग का हो गया, तीसरा चांदी की तरह बन गया, चौथा पेड़ ताम्र वर्ण का बना. . .और सातवां पेड़ बिलकुल वैसा ही था, जैसा पहले था।

तब विश्वामित्र ने लक्ष्मण से पूछा– ''लक्ष्मण तुम्हें बाण को छोड़ने में और बाण को सातों पेड़ों को बेधने में कितना समय लगा?''

उसने कहा– ''मुश्किल से क्षणार्द्ध अर्थात् एक क्षण का भी आधा।''

फिर विश्वामित्र ने लक्ष्मण को समझाते हुए कहा– **''क्षण विशेष की इतनी अधिक महत्ता है, कि पहला पेड़ स्वर्ण का बन गया और सातवां पेड़ वही ताड़ का पेड़ ही रहा; या तो सातों पेड़ स्वर्ण के ही बन जाते या फिर सातों पेड़ ताड़ के ही बने रहते, मगर वह पहला क्षण अधिक मूल्यवान था और दूसरा क्षण उससे न्यून. . .इसीलिए प्रत्येक क्षण का अपने-आप में मूल्य और महत्त्व है, यदि उस क्षण को समझ सकें, यदि उसका उपयोग कर सकें, यदि उस क्षण में किसी देवी या देवता को आबद्ध कर सकें।**

लेकिन वह क्षण तब मूल्यवान होता है, जब उस क्षण का किसी विशेष मंत्र के साथ सम्बन्ध स्थापित हो।''

जीवन की सार्थकता छुपी है इस **''स्वर्ण लक्ष्मी प्रयोग''** में, क्योंकि इसके माध्यम से हम कम-से-कम समय में ही अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को पूर्णता प्रदान कर सकते हैं। यह बात सही है, कि इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है, लेकिन इन्हें इच्छाएं न कहकर यदि हम आवश्यकताएं कहें, तो ज्यादा उचित होगा, और समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह प्रयोग सौ टंच खरा है, जिसे देवराज इन्द्र ने भी सिद्ध कर अपने राज्य में धन वर्षा की थी।

धन के बिना यह जीवन अपूर्ण है। आज के युग में जो अर्थहीन है, वह शक्तिहीन कहलाता है, बिना अर्थ के धर्म की अभ्यर्थना करना व्यर्थ है। आज के इस परिवर्तनशील युग में किसी ऐसे सक्षम उपाय की आवश्यकता प्रत्येक गृहस्थ व संन्यासी को पड़ेगी, जिससे वे अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर जीवन की प्रत्येक समस्या से मुक्ति पा सकें, इसीलिए देवराज इन्द्र ने इस महत्त्वपूर्ण प्रयोग को **धन त्रयोदशी** के दिन सम्पन्न कर अपने

राज्य में धन की वर्षा की, जिससे कि इस नवीन पद्धति का सहारा लेकर, प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में स्वर्ण वर्षा कर आकस्मिक रूप से धन प्राप्त कर सके।

देवराज इन्द्रकृत यह प्रयोग अचूक फलदायी है, जिसका प्रमाण हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि, साधक व योगीगण हैं, जिन्होंने इस प्रयोग को सम्पन्न कर इसकी प्रामाणिकता को अनुभव किया।

प्रयोग विधि :

१. इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए प्राण-प्रतिष्ठित **''आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र''** और **''पारद लक्ष्मी''** की आवश्यकता पड़ती है।

२. **२१.१०.९५ धन त्रयोदशी, शनिवार,कार्तिक कृष्ण पक्ष की रात्रि ८.३५ से ११.०० बजे के मध्य** इस प्रयोग को सम्पन्न करना ज्यादा श्रेष्ठकर सिद्ध होगा, यदि इस दिन न कर सकें, तो किसी भी **मंगलवार** को कर सकते हैं।

३. साधक को **उत्तर दिशा** की ओर मुंह करके बैठना चाहिए।

४. इस प्रयोग के लिए गुरु-पूजन की आवश्यकता होती है, क्योंकि इस प्रयोग के प्रणेता देवराज इन्द्र ने इस प्रयोग से पूर्व गुरु आराधना की थी, जिनके आशीर्वाद से ही वे इस प्रयोग को करने में सफल हो सके थे।

५. साधकों को चाहिए, कि **''दैनिक साधना विधि पुस्तक''** के अनुसार **गुरु-पूजन** करें तथा **४ माला गुरु मंत्र-जप** करें।

६. साधक स्नान करके शुद्ध हो लें तथा आसन पर बैठकर अपने सामने ''यंत्र'' को पूजा स्थान में रख दें, यंत्र की दायीं ओर तांबे की प्लेट में निम्नांकित **''कमला यंत्र''** कुंकुम से अंकित कर, ''पारद लक्ष्मी'' को उस पर स्थापित कर दें।

श्रीं
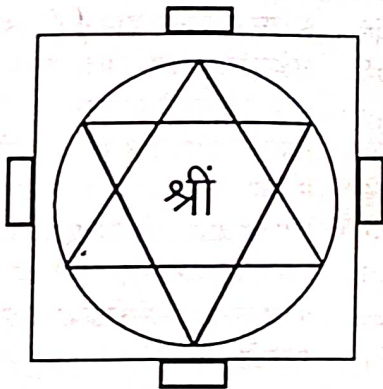
७. इसके बाद यंत्र तथा लक्ष्मी को किसी दूसरे बर्तन में स्नान कराकर उनका कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से पूजन करें।

८. **''ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ''** मंत्र का जप करते हुए **१०८ बार** पारद लक्ष्मी पर अक्षत चढ़ायें।

९. इसके बाद इन्द्रकृत निम्न **लक्ष्मी-पूजन** सम्पन्न करें।

विनियोग :

ॐ अस्य श्री महालक्ष्मी कवच मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मीः देवता, श्री महालक्ष्मी प्रीतये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :

ॐ श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, श्री महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदये, श्री महालक्ष्मी प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कवच

शिरो मे विष्णु-पत्नी च, ललाटममृतोद्भवा।
चक्षुषी सु-विशालाक्षी, श्रवणे सागराम्बुजा।।
घ्राणं पातु वरारोहा, जिह्वामाम्नाय-रूपिणी।
मुखं पातु महालक्ष्मीः, कण्ठं वैकुण्ठ-वासिनी।।
स्कन्धौ मे जानकी पातु, भुजौ भार्गव-नन्दिनी।
बाहू द्वौ द्रविणी पातु, करौ हरि-वरांगना।।
वक्षः पातु च श्रीदेवी, हृदयं हरि सुन्दरी।
कुक्षिं च वैष्णवी पातु, नाभिं भुवन-मातृका।।
कटिं च पातु वाराही, सक्थिनी देव-देवता।
ऊरू नारायणी पातु, जानुनी चन्द्र सोदरी।।
इन्दिरा पातु जंघे मे, पादौ भक्त नमस्कृता।
नखान् तेजस्विनी पातु, सर्वांगं करुणामयी।।

इस कवच का मात्र **५ बार पाठ करें।**

१०. अन्त में **लक्ष्मी आरती** एवं **गुरु आरती** सम्पन्न करें।

११. प्रयोग-समाप्ति के बाद यंत्र को दूसरे दिन नदी या कुंए में विसर्जित कर दें तथा पारद लक्ष्मी को पूजागृह में ही स्थापित कर दें।

इस प्रयोग के बाद शीघ्र धन-लाभ की सम्भावना बनती ही है, जीवन की समस्त दरिद्रता, अभाव और विषाद के सभी क्षण समाप्त होने लगते हैं तथा धनागम के नये स्रोत बनते ही हैं।

साधना सामग्री न्यौछावर :
आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र : २४०/-
पारद लक्ष्मी : ३००/-

जाग उठा श्मशान

जब से मैंने होश संभाला, तब से ही मेरे अन्दर साधनात्मक ज्ञान प्राप्त करने की ललक और सिद्धियों को हस्तगत कर लेने की तीव्र इच्छा थी, इसी कारण मैं अपने-आप को समाज में, अपने परिवार में तथा अपने मित्रों और सम्बन्धियों के बीच अलग ही पाता था। उनके विचारों में तथा मेरे विचारों में हमेशा टकराव की स्थिति रहती, इसी वजह से हमारी आपस में तीव्र झड़पें भी हो जाया करती थीं।

मेरी इच्छाओं और मेरी प्रकृति को देखकर मेरे परिवार वाले मुझे विवाह के बंधन में बांध देना चाहते थे। वे चाहते थे, कि मैं कोई अच्छा व्यवसाय अथवा नौकरी करूं, समाज में धन, मान-सम्मान प्राप्त करूं, परन्तु मेरे मन को इस प्रकार की बातें एक आंख भी नहीं सुहातीं और मैं तिलमिला कर रह जाता। जिन दिनों मैं अपने भविष्य के प्रति संघर्ष कर रहा था, उन्हीं दिनों में मुझे एक पुस्तक प्राप्त हुई और आनन-फानन में मैंने वह पुस्तक पूरी पढ़ डाली, क्योंकि उसमें जो कुछ भी लिखा था, वह मेरी रुचियों के अनुकूल एवं गूढ़ रहस्यों से ओत-प्रोत था। उसमें से कुछ विशिष्ट बातें जानकर मैं विवाह के प्रति उत्साहित हो उठा। उस पुस्तक में जो लिखा था, वह इस प्रकार है—

"युवावस्था में हम लोगों की आसक्ति नारी की ओर सहज और स्वाभाविक रूप से होती है। उस आकर्षण से अपने मन को ज़बरदस्ती हटाने की सलाह तंत्र शास्त्र नहीं देता। यदि तंत्र का साधक विवाहित हो, तो उसके अध्यात्म-मार्ग की उन्नति अनायास ही होती है। सच्चे साधकों में लम्पटता का दोष नहीं होता। जिन लोगों ने शरीर की आसक्ति को नहीं छोड़ा है, उन्हें संयम का उपदेश देना निरर्थक है।" और इस प्रकार से जीवन में तंत्र के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने हेतु मैंने विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। मगर विवाह से पूर्व ही मैंने अपनी होने वाली धर्म पत्नी को अपनी सभी रुचियों एवं साधनात्मक ज्ञान प्राप्त करने की इच्छाओं के बारे में विस्तार पूर्वक वता दिया, जिससे कि मेरे आने वाले जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा मेरे लक्ष्य में न आये, तथा पांच वर्ष के लिए गृहस्थ त्याग का निर्णय मैंने उसी समय सुना दिया, जिससे कि शादी के वाद वातावरण में गम्भीरता उत्पन्न न हो, तव मेरी धर्म पत्नी ने मेरी सभी रुचियों को स्वीकार करते हुए स्वयं साधनात्मक ज्ञान प्राप्त करने के प्रति रुचि दिखाई, तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई, और मैं विवाह के लिए तैयार हो गया। विवाह के पश्चात् तीन वर्ष तक मैं गृहस्थ में रहा और उसके बाद अपनी पत्नी और परिवार वालों से इजाज़त लेकर मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु निकल गया।

सर्वप्रथम मैंने विचार किया, कि मैं उच्चकोटि के ब्राह्मणों तथा साधकों को खोजूं और उनसे साधनात्मक ज्ञान प्राप्त करूं, और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैंने ऐसा किया भी, किन्तु मुझे कहीं पर भी सफलता नहीं मिली, क्योंकि मैं जहां भी किसी मन्दिर में जाता, किसी ब्राह्मण अथवा पुजारी से मिलता, तो उसका चिन्तन, उसका लक्ष्य मात्र उदर पोषण तक ही सीमित दिखाई देता, मंत्रों के नाम अथवा ज्ञान के नाम पर कुछ श्लोक और कुछ वहुचर्चित मंत्र ही उनकी पूंजी थी, उन मंत्रों की सफलता का लेशमात्र भी अंश उनके जीवन में दिखाई नहीं देता था, साधनात्मक प्रक्रिया से वे कोसों दूर दिखाई दे रहे थे और वे सब मुझे मीठे-मीठे पर-वचन कर्ता तो लगे, पर वास्तविक जीवन के धरातल पर वे रीते ही थे।

यहां मैंने 'प्रवचन' शब्द के स्थान पर 'पर-वचन' शब्द का प्रयोग किया है, उसका अर्थ स्पष्ट कर देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। जब एक व्यक्ति अध्यात्म के पथ पर गतिशील होता है, तव वह अपने जीवन का मंथन करता है, अपनी आत्मा को इस संसार में श्रद्धा, त्याग और समर्पण की मथानी से मथ कर जो ज्ञान प्राप्त करता है, वही ज्ञान सही अर्थों में उच्चकोटि का और वास्तविक ज्ञान है, और इसी प्रकार के व्यक्ति जब कोई बात कहते हैं, तो वह 'प्रवचन' कहलाता है, उनकी बातों में एक दृढ़ता होती है, सच्चाई होती है।

दूसरे स्थान पर जो पर-वचन करने वाले व्यक्ति होते हैं, वे कहीं से कोई ज्ञान, तथ्य, चिन्तन ले लेते हैं और उसी को वे सुन्दर भाषा शैली से सजाकर भोले-भाले लोगों के सामने परोस देते हैं। दूसरे के खेत से काटी गई फसल को वे अपना कहकर किसी अन्य को देते हैं, ऐसे ज्ञान, ऐसे चिन्तन का उनके जीवन में कितना महत्त्व है, यह तो उनके साथ रहकर ही जाना जा सकता है।

मैं स्वयं भी कई पंडितों और विद्वानों के साथ रहा हूं, और उनकी कथनी-करनी में अन्तर भी देखा है, इसी कारण मेरा मन खिन्नता से भर उठा। किस प्रकार से वे सैकड़ों लोगों की भीड़ अपने पीछे लगा लेते हैं, सुन्दर-सुन्दर गीता-रामायण की बातें सुना देते हैं, और वही व्यक्ति जव मंच से वाहर आते हैं, एकान्त में होते हैं, तव उनकी हरकतों को देखकर मेरा मन शर्म से झुक जाता है। मैं उनसे किस प्रकार ज्ञान और चिन्तन की आशा करूं, ये मुझे क्या साधनात्मक प्रक्रिया का ज्ञान दे पायेंगे? मेरा उद्देश्य उदर पोषण नहीं, वरन् मेरा उद्देश्य तो वास्तविक ज्ञान की खोज कर अपने जीवन में उसे आत्मसात् करना था। मैं चारों ओर से निराशा से घिर गया, तभी मुझे पुस्तक के लेखक का ख्याल आया। मुझे वे, उनकी लिखी पुस्तकों के अनुसार अनुभवी व विद्वान् व्यक्तित्व लगे। अब मेरी अंतिम आशा के विन्दु ही थे, अतः मैं उनसे मिलने उनके निवास स्थान की ओर चल पड़ा।

मुझे उनके निवास पर पहुंचते ही एक असीम शांति और प्रसन्नता का एहसास हुआ। हालांकि मेरी आशा के विपरीत मैंने उनका पक्का और काफी बड़ा मकान देखा, मकान के साथ ही बना उनका आश्रम भी देखा। मुझे वह भूमि देखने में तो साधारण सी लगी, किन्तु वास्तव में ही वह दिव्य और अलौकिक ऊर्जा से चैतन्य भूमि थी।

जब मैंने पहली बार उन्हें देखा, तो देखते ही मेरी आत्मा ने अन्तर्क्रन्दन शुरू कर दिया। उनको देखते ही ऐसा लगा, जैसे मैं तो इनसे जन्मों-जन्मों से बिछड़ा हुआ इन्हीं का आत्म-अंश हूं, और मैं उनके चरणों में सिर रखकर फफक-फफक कर रो पड़ा।

कुछ समय मौन रखने के बाद वे स्वतः ही बोले- तुम साधना के क्षेत्र में ऊंचाइयों को स्पर्श करना चाहते हो, तुम्हारा यह विचार अत्यन्त ही श्रेष्ठ है, तुम्हारा त्याग वास्तव में ही अद्वितीय है, तुम्हें अवश्य ही सफलता मिलेगी, यह मेरा आशीर्वाद है।

उनके इस प्रकार के वचनों को सुनकर मेरा हृदय प्रसन्नता से पुलकित हो उठा, मेरे हृदय में श्रद्धा का, प्रेम का, आदर का सागर सीमाओं को लांघ कर बाहर आने के लिए मचल उठा, और उसी दिन मुझे उन्होंने "गुरु दीक्षा" तथा "अघोर दीक्षा" प्रदान की, और मुझे आशीर्वाद देकर साधना के पथ पर गतिशील कर दिया।

गुरुदेव से आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् मैं सीधा श्मशान स्थल में जाकर "**भैरव साधना**" सिद्ध करने लगा, और कुछ ही दिनों के पश्चात् मैंने

भैरव साधना पूर्णरूप से सिद्ध कर ली। इसके पश्चात् मैंने **काली साधना, तारा साधना, वीर साधना, भूत सिद्धि, शून्य साधना, अघोर काली साधना** जैसी अनेक महत्त्वपूर्ण साधनाओं को भी सिद्ध कर लिया।

मैंने अब तक कई साधनाओं में सफलता प्राप्त कर ली थी, परन्तु फिर भी मेरे मन में रह-रहकर यह बात बार-बार आती थी, कि किसी भी प्रकार से श्मशान जागरण की क्रिया सम्पन्न की जाय, क्योंकि मैं वास्तव में **"श्मशान जागरण"** की क्रिया के अनुभव और सत्य से साक्षात्कार करना चाहता था। मैंने सुन रखा था, कि यह क्रिया अत्यन्त ही कठिन और पेचीदा है, इसमें जरा सी भी चूक हुई, कि प्राण गये। श्मशान के जाग्रत होने में लगभग एक घण्टे से तीन घण्टे का समय लगता है, फिर भी इस समय के बारे में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, और फिर लगभग बीस से साठ मिनट का समय श्मशान के शांत होने में लगता है।

मैंने अपनी योजना अपने साथी अघोरी बैजनाथ (बैजू) को बताई। बैजू उम्र में मुझ से बड़ा और अनुभवी साधक था। पहले तो उसने मेरी बात सुनकर श्मशान जागरण करने के विचार से ही साफ इंकार कर दिया, कहने लगा— "मैं इतना बड़ा खतरा मोल नहीं लूंगा", परन्तु जब मैंने उसे अपने प्राणों पर भी खेलकर सम्पूर्ण साधनात्मक प्रक्रिया को हस्तगत कर लेने का दृढ़ निश्चय सुनाया, तो उसे मेरी बात माननी पड़ी।

आज की रात में ही मैंने और बैजू ने श्मशान जाग्रत करने की योजना बना ली, सौभाग्यवश आज रात्रि को "चन्द्र ग्रहण" भी था, इसीलिए मेरे अनेक साथी तो ग्रहण के अवसर पर सिद्ध होने वाली साबर साधनाओं को करने का निश्चय कर वहां से दूर चले गये थे।

सुनसान, निःशब्द वातावरण श्मशान का. . .और उसमें मैं और बैजू. . .भयानक आवाज के साथ चलती ठंडी हवाएं रूह को अन्दर तक कम्पित कर देने वाली थीं, सभी सामग्री एकत्र कर हमने अपना आसन श्मशान में बिछा दिया। हमारे नजदीक ही एक चिता थी, जो लगभग एक-डेढ़ घण्टे पूर्व ही बुझी थी। सर्वप्रथम आसन-पूजन एवं भूमि- पूजन किया, उसके पश्चात् पूर्ण विधि-विधान से गुरु-पूजन सम्पन्न कर उनसे श्मशान जागरण के विषय में सफलता की और रक्षा की कामना करते हुए संकल्प किया और जल से अपने चारों ओर सुरक्षा रेखा का निर्माण कर मैं उस में बैठ गया। मुझसे लगभग आठ-दस फीट की दूरी पर बैजू भी उक्त सभी क्रियाएं सम्पन्न कर अपने आसन पर बैठ चुका था।

इसके पश्चात् श्मशान के अधिष्ठाता देव तथा देवी क्रमशः "भैरव" और "काली" का पूजन-आवाहन कर, दसों दिशाओं को मंत्र द्वारा बांध कर सुरक्षित किया। अब हमारा अगला चरण श्मशान जागरण का ही था। मैंने पांच मिनट गुरु-ध्यान कर मानसिक आज्ञा प्राप्त की, और गुरु प्रदत्त श्मशान जागरण मंत्र का उच्चारण प्रारम्भ कर दिया।

और अभी डेढ़ या पौने दो घंटे ही बीते होंगे, कि अचानक वातावरण में तीव्र हलचल आरम्भ हो गई. . .हवा के साथ बदबूदार झोंके आने लगे, वातावरण में चारों ओर चीत्कारें. . . अट्टहास. . . अजीब-अजीब प्रकार का शोर व्याप्त हो गया. . .

मैंने कभी सोचा भी न था, कि मेरे मंत्रोच्चारण करने से इस प्रकार श्मशान जाग्रत हो उठेगा. . .लेकिन जब श्मशान जाग्रत हो ही गया, तो मैंने भी दृढ़ता पूर्वक स्थिति का मुकाबला करना ही अधिक श्रेयस्कर समझा और आने वाले हर संकट का, हर बाधा का मुकाबला करने की मानसिक तैयारी कर बैठ गया. . . मैं स्पष्ट रूप से देख रहा था, कि हमारे कीलित किये हुए स्थान को छोड़कर जमीन के चप्पे-चप्पे से आकृतियां प्रकट हो रही थीं, और कहीं दूर से भी ऐसी ही आकृतियों की एक टोली, जिसमें औरतें, बच्चे और सभी प्रकार के जीव मेरी ओर आक्रमण के इरादे से दौड़े चले आ रहे थे, मेरा कण्ठ भय से अवरुद्ध सा हो गया था, अब मुझसे मंत्रोच्चारण भी नहीं हो पा रहा था, कि-अचानक जोरों का धमाका हुआ, मैंने किसी प्रकार से अपना मंत्र-जप पूरा किया तथा जप माला को एक ओर रख दिया। अब मैंने सरसों के दाने भी उछालने बंद कर दिये थे, परन्तु अब तो श्मशान जागरण होने की क्रिया आरम्भ हो चुकी थी।

बहुत विचित्र आकार-प्रकार के भूत, भूतनी, अत्यन्त वीभत्स . . . पिशाचनियां और पिशाच एक-दूसरे को रौंदते-काटते, चबाते हुए मेरी ओर ही आ रहे थे, गले में लटकते हुए मानव-मुण्ड, जिनसे टपकता हुआ ताजा रक्त . . . मैंने तो भय के कारण मंत्र-जप बन्द कर ही दिया था, मगर श्मशान तो शनैः-शनैः विकराल रूप धारण करता ही जा रहा था, मैं इसका कारण नहीं समझ पाया।

तभी अचानक मुझे बैजू का ध्यान आया, जब मैंने उसकी ओर देखा, तो लगातार मंत्रोच्चारण के साथ वह सरसों के दाने दसों दिशाओं में उछाल रहा था। उसके चारों ओर जिस प्रकार भूत, प्रेत, पिशाचों का ताण्डव चल रहा था, वह एक सामान्य साधक के लिए मृत्यु से साक्षात्कार ही जैसा था। भूत, भूतनियां और पिशाचनियां झपट्टा मारकर बैजू को सुरक्षा चक्र से बाहर निकालने का प्रयास करते, मगर गजब का आत्मबल था बैजू में, वह अपने स्थान से टस से मस नहीं हो रहा था. . .मगर तभी **उन भूत-प्रेतों में हड़कम्प सा मच गया, वे घबरा कर इधर-उधर भागने लगे, और कुछ ही क्षणों के बाद जिस संकट की मुझे आशंका थी, वह आ ही गया.** . .विशालकाय हाथियों के समान दिखाई देने वाले राक्षसों का झुंड अब हमारी ओर चला आ रहा था, वे जिस प्रकार से पैरों को पटकते हुए चल रहे थे, उससे भूमि में कम्पन स्पष्ट महसूस हो रहा था।

इन सब दृश्यों को देखकर मुझे ऐसा लगने लगा, जैसे मेरा सारा शरीर ही कुछ समय के बाद शिथिल हो जायेगा, मगर मैंने अपने-आप को उसी क्षण चैतन्य किया और स्वयं की रक्षा हेतु रक्षात्मक मंत्रोच्चारण प्रारम्भ कर दिया। श्मशान की सारी भूमि उड़ती धूल, बिखरे हुए रक्त तथा अजीब प्रकार की चीख-पुकारों से भर गया। यदि ऐसी अवस्था में कोई थोड़ा भी कमजोर दिल का साधक होता, तो निश्चय ही वह अपने प्राण खो देता। मैं जिस प्रकार से इन त्रिवर्गात्मक योनियों का ताण्डव देख रहा था, वह अपने-आप में ही अवर्णनीय है।

इससे पहले कि वे राक्षस मेरे करीब आ पाते, अचानक मुड़कर विपरीत दिशा में बड़े-बड़े चट्टानों के समान पत्थर उठाकर फेंकने लगे, और कारण शीघ्र ही समझ में आ गया — सामने से विशालकाय पर्वत के समान आकार वाले "ब्रह्म राक्षस" का आगमन हो रहा था, जो राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच इनके हाथ में आता, ये उसे बिना चबाये ही अपना आहार बना लेते. . .यह सब देखकर मेरी तो इच्छा उठकर भागने की होने लगी, मगर अपने आसन को छोड़ देने का अर्थ था मौत. . .

श्मशान जागरण अपने अन्तिम बिन्दु पर था, मेरे सामने जो युद्ध-प्रलय हो रहा था, वह भयानकता की चरम सीमा पर था। तभी मुझे लगा, जैसे कोई मुझे श्मशान को शांत करने वाले मंत्र के उच्चारण के लिए कह रहा है, और मैंने बिना विलम्ब किये श्मशान शांति हेतु मंत्रोच्चारण प्रारम्भ कर दिया। बैजू अब शांतचित्त बैठा था। जिस प्रकार से ये इतर योनियां मेरे सामने उपस्थित हुईं, उसी प्रकार से वे वापिस लौटने लगीं।

ब्रह्म राक्षसों और राक्षसों के मुड़ते ही अन्य इतर योनियों ने जैसे राहत की सांस ली, वातावरण शांत हो चला था, और लगभग ३०-४० मिनट में ही सारा श्मशान एकदम शांत हो गया।

यह मेरे जीवन का प्रथम और अविस्मरणीय अनुभव था, आज भी मैं उन क्षणों को याद कर रोमांचित हो उठता हूं, वास्तव में ही श्मशान जागरण जीवन की विशिष्ट क्रिया है।

— हरीराम

दुर्लभ ग्रंथ

जिनकी कुछ प्रतियां ही बची हैं

जिसे प्राप्त कर लेना ही जीवन का सौभाग्य है

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग

"मंजिल एक है . . . पर रास्ते अनेक हैं. . . जरूरी नहीं कि मैं जिस रास्ते पर चलकर अपने मुकाम तक पहुंचूं उसी रास्ते पर चलकर तुम भी अपने गन्तव्य तक पहुंचो और वह तुम्हारे लिये सुविधाजनक हो. . . सम्भव ही नहीं . . . सबकी प्रकृति अगल-अगल है". . . ये शब्द किसी दार्शनिक के हैं— इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर लक्ष्मी साधना की कई रहस्यमय विधियां जो सर्वथा अब तक अप्रकाशित थीं . . . पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन में तैयार की गई दुर्लभ कृति है . . . जिन विधियों को आजमा कर हजारों-हजारों साधकों ने सफलता प्राप्त की है।

मूल्य प्रति – 30/-

विश्व की अलौकिक साधनाएं

साधना का जगत् तो अनन्त है , . . इसकी जितनी गहराई में प्रवेश करेंगे उतना ही रहस्यमय है. . . जिसकी थाह नहीं है . . . इन साधनाओं को सम्पन्न कर अपने मनोवांछित इच्छा की पूर्ति की जा सकती है . . . अपने आप में एक सम्पूर्ण कृति, जो आने वाली पीढ़ियों की धरोहर है।

मूल्य प्रति – 30/-

भौतिक सफलताएं : साधना एवं सिद्धियां

आज का युग भौतिकता का युग है. . . बिना भौतिक पूर्णता के आध्यात्मिकता का अस्तित्व अधूरा है. . . दोनों का संतुलन ही जीवन की पूर्णता का आधार है, क्योंकि दोनों जीवन रूपी तराजू के पलड़े हैं... . आवश्यकता है दोनों के सामंजस्य की . . . एक पक्ष झुक गया तो जीवन अधूरा हो जायेगा . . . अतः भौतिक पूर्णता के लिए जरूरी है उन उपायों को प्राप्त करें जो सफल जीवन का आधार हैं . . . कैसे? . . . इस दुर्लभ ग्रंथ में . . .

मूल्य प्रति – 30/-

महालक्ष्मी सिद्धि और साधना

लक्ष्मी की साधना सम्पूर्ण विधि-विधान से पूजा-अर्चना . . . शास्त्रोक्त विधि-विधान से पूजन की दुर्लभतम क्रिया, जिसका प्रत्येक मंत्र अपने आप में तेज पुञ्ज है, प्रामाणिकता लिये हुए है. . . ऋषि युग की परम्परा लिये हुए है. . . एक दुर्लभ कृति. . .

मूल्य प्रति – 30/-

मुहूर्त ज्योतिष

जिसे काल गणना का ज्ञान होता है वह विश्व विजयी होता है, उसे अच्छे और बुरे क्षणों का ज्ञान होता है . . . और वह उचित समय का सही उपयोग कर विजयी कहलाता है. . . लंकापति रावण को काल का ज्ञान था, वह काल गणना का अधिपति था . . . और उसने इसी ज्ञान के द्वारा शिव की कृपा को प्राप्त किया . . . आप भी काल निर्णय में सिद्धहस्त हो सकते हैं. . . अत्यन्त सरल भाषा शैली में . . . अद्वितीय ग्रंथ . . . जिसे प्राप्त कर लेना ही जीवन का सौभाग्य है।

मूल्य प्रति – 30/-

(अग्रिम धनराशि भेजने की आवश्यकता नहीं, आप सिर्फ लिख भेजें, जिन ग्रंथों की आपको आवश्यकता है)

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट
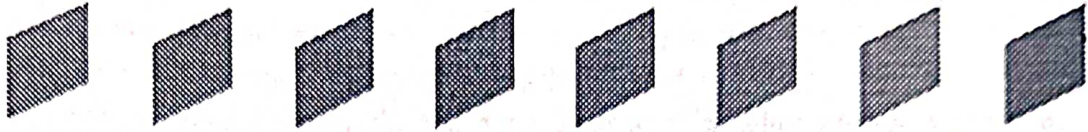
वर्तमान में भारत में जो राजनीतिक उथल-पुथल चल रही है, ऐसी किसी भी देश में नहीं है, कारण— निकट भविष्य में चुनाव का होना। आज समस्त विश्व विभिन्न दृष्टिकोणों को लेकर भारत की ओर निहार रहा है, इसमें मुख्य है, बाहरी देशों में बढ़ती अशांति का समाधान भारत के पास होना।

आज भारत का कोना-कोना जिस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान से फल-फूल रहा है, वह आश्चर्य का विषय बना हुआ है, बाहरी देशों के लिए भी और स्वयं भारतवर्ष के लिए भी। जिस प्रकार से भारतीय लोगों के मन में परिवर्तन आ रहा है, वह आने वाले शुभ समय का सूचक है। 'ज्योतिष' अध्यात्म का ही एक प्रमुख अंग है और ज्योतिष का प्रभाव जिस प्रकार से भारतीय कार्यप्रणाली पर पड़ रहा है, वह आने वाले उदार समय का संकेत मात्र है। ज्योतिषीय आधार पर इस माह राजनीतिक क्षेत्र में जो गतिविधियां रहेंगी, वे इस प्रकार हैं—

पाकिस्तान में निरन्तर बढ़ रही उग्रवाद की घटनाओं से वहां के जन-नागरिकों में रोष व्याप्त होता जा रहा है, इसके अलावा भी वहां की सरकार एक ही स्वर में बार-बार कश्मीर मामले को उठा रही है, इससे भी वहां के नागरिकों में खिन्नता व्याप्त होती जा रही है, इसका नतीजा पाकिस्तान को शीघ्र ही गृह युद्ध के रूप में झेलना पड़ सकता है। जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही निरन्तर अपहरण, हत्या अर्थात् उग्रवाद की घटनाएं भारत सरकार के लिए सिर दर्द बनी हुई हैं, इनमें किसी भी प्रकार से कमी आती दिखाई नहीं देती।

हरियाणा सरकार के चिड़चिड़े रुख से बड़ी-बड़ी राजनीतिक हस्तियां मुंह फेरती दिखाई देंगी, और ऐसा होने से हरियाणा सरकार निश्चय ही पतन की ओर बढ़ेगी।

इधर शंकर राव चह्वाण की श्री एन. डी. तिवारी जी के प्रति चली आ रही कटुता समाप्त होगी एवं उनका झुकाव श्री तिवारी जी की ओर होगा, इससे तिवारी जी के खेमे में प्रसन्नता का माहौल बनेगा। श्री तिवारी जी का अपनी पार्टी के प्रति संतुष्टि का भाव रहेगा तथा अपनी पार्टी को निरन्तर उज्ज्वल बनाने के प्रयास में उनकी गतिविधियां निरन्तर तेजी की ओर अग्रसर होंगी।

सोनिया गांधी तथा मेनका गांधी का शनैः-शनैः कांग्रेस में प्रवेश श्री राव के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न करेगा, इसके अलावा भी कांग्रेसी नेताओं के नाम अपमानज़नक कारनामों में आने से कांग्रेस की छवि धूमिल होगी। जनता का विश्वास कांग्रेस के प्रति टूटेगा। इन सभी तत्त्वों के बाद भी श्री राव की स्थिति राजनीतिक क्षेत्र में श्रेष्ठ रहेगी।

भारत तेजी से आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होगा, तथा अंतरिक्ष में होने वाले शोध कार्यों में भारत की भूमिका श्रेष्ठ रहेगी। भारत के नामी-गिरामी खिलाड़ियों का राजनीति में हस्तक्षेप बढ़ेगा तथा इसके साथ ही राजनीतिक क्षेत्रों में उनके आने के प्रयास सफल होंगे, वहीं पंजाब सरकार निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होगी। पंजाब में श्री बेअन्त सिंह जी की स्थिति अच्छी रहेगी, लेकिन इसके बावजूद भी पंजाब की जनता राजनीतिक गतिविधियों को लेकर सन्देह की स्थिति में रहेगी।

शेयर मार्केट

इस माह में शेयरों का जनमानस में अच्छा दबदबा रहेगा, खरीददारों में एक विशेष उत्साह रहेगा, वहीं कुछ शेयर, जिनके दामों में वृद्धि होने की सम्भावना थी, वे एकदम से नीचे गिर गये, इससे खरीददारों का काफी मनोबल टूटा, फिर भी शेयर मार्केट में किसी भी प्रकार की शिथिलता दिखाई नहीं देगी।

माह सितम्बर में जो उत्साह शेयर धारकों में होगा, वैसा उत्साह शेयर बेचने वालों में नहीं रहेगा, अनजानी ऊहापोह में ऐसे लोग आर्थिक हानि के दौर से गुजरेंगे। मार्केट में आवक बढ़ेगी, वहीं देनदारों का प्रभाव रहेगा।

इस माह जिन शेयरों के दाम बढ़ने की सम्भावना है, वे निम्नलिखित हैं—

आकार लेमिनेट्स, बजाज स्टील, बामर लारी, गुजरात प्रोपेक, वेनलोन पॉलिएस्टर, ब्रुक बांड, सीएट लिमि., एस्कोर्ट्स, एस्सार शिप, ग्लेक्सो, प्रीमियर ऑटो, रेमण्ड्स लिमि., टाटा पॉवर, टेल्को, ए.सी.सी., अपोलो टायर्स, विन्दल एग्रो, लार्सन एण्ड टर्बो, ओसवाल एग्रो, जे.सी.टी. इलैक्ट्रॉनिक्स आदि।

इसके अलावा जिन शेयरों के भाव सामान्य वृद्धि को प्राप्त करेंगे, वे निम्नलिखित रहेंगे— **एशियन कन्सोलिडेटिड, एवन इंड., आई.टी.डबल्यू. साइनोड, मैटल बॉक्स, ओरिएण्ट कंटेनर्स, जी.शिप, हिन्दुस्तान लीवर, हिन्दुस्तान मोटर्स, वीडियोकॉन, विम्को, अनमोल ड्रग्स, भाखड़ा एग्रो, कैल्विनेटर ऑफ इंडिया** आदि।

इसके अलावा अधिकतर शेयर अपनी सामान्य अवस्था में रहेंगे, वहीं कुछ प्रमुख शेयर अपने लाभांश की रेखा से नीचे आयेंगे। ऐसी स्थिति में अच्छा होगा, कि शेयर धारक मौलिक सूझ-बूझ से कार्य करें। सोच-समझ कर लिए गये निर्णयों में यदि साधनात्मक प्रक्रिया को अथवा दैविक बल को साथ में ले लिया जाय, तो धारक जीवन में सामान्य से अधिक लाभ प्राप्त कर सकने में सक्षम हो सकेंगे।

पत्रिका कार्यालय में "शेयर मार्केट" के विषय को लेकर अनेकों पत्र प्राप्त होते हैं उनकी मांग होती है कि इस विषय को बढ़ाकर, स्पष्ट करके लिखें, परन्तु पत्रिका में स्थानाभाव के कारण इस विषय को बढ़ाने के लिए भविष्य में ही निर्णय लिया जा सकेगा।

अपनों से अपनी बात

- इस बार **गुरु पूर्णिमा का महोत्सव,** पर स्टॉल, पुस्तक-विक्रय, दीक्षा-संस्कार एवं अन्य कार्यक्रम **''लुधियाना सिद्धाश्रम साधक परिवार''** की ओर से ही सम्पन्न हुए और शिविर शुल्क आदि से प्राप्त आय द्वारा टेन्ट, शामियाना, बिजली, माइक, भोजन आदि की उचित व्यवस्था कर सराहनीय कार्य किया, इसके लिये उन्हें केन्द्र की तरफ से शतशः बधाई।
- जैसी कि पिछले पांच-छः वर्षों से परम्परा चली आ रही है, कि कोई भी भेंट गुरुदेव के चरणों में समर्पित नहीं करते, *वे उसे स्वीकार भी नहीं करते;* आप उसी परम्परा के अनुसार धन आदि, सम्बन्धित ट्रस्ट या सोसाइटी में जमा करवा कर रसीद प्राप्त कर लिया करें, **और भेंट आदि बाहिर जो गुरु चित्र स्थापित है, उसके सामने चढ़ा दें, और इसी परम्परा को बनाये रखें,** पर यह कार्य बिना दबाव के, आपकी अपनी आकांक्षा, इच्छा के द्वारा ही हो; गुरुदेव के चरणों में न आज तक आपने चढ़ाया है, न चढ़ावें. . . इस परम्परा के लिए भी आपको बधाई। यह जो भेंट ट्रस्ट अथवा सोसाइटी में आपके द्वारा प्राप्त होती है, उसे सार्वजनिक कार्यों, दान एवं परोपकारी कार्यों में व्यय कर दिया जाता है।
- दिल्ली गुरुधाम या जोधपुर में किसी प्रकार के गण्डे, ताबीज या तंत्र प्रयोग नहीं होते, पिछले पन्द्रह वर्षों में भी पत्रिका में कोई ऐसा लेख या टिप्पणी प्रकाशित नहीं हुई है, जो वाममार्गी साधना से सम्बन्धित हो, कुछ अधकचरे स्वार्थी एवं भ्रष्ट व्यक्ति ही तंत्र का दुरुपयोग करते हैं, हम इस प्रकार के लोगों की भर्त्सना करते हैं, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी दृष्टि से गलत उपायों का सहारा लेते हैं, सिद्धाश्रम साधक परिवार भी ऐसे भ्रष्ट लोगों की निन्दा करता है।
- दिल्ली गुरुधाम या जोधपुर से किसी भी प्रकार की औषधि या दवा का विक्रय नहीं होता, कई लोग **''सिद्धाश्रम साधक परिवार''** से सम्बन्धित होने का दावा करते हैं या कहते हैं, कि उनकी तरफ से दवा विक्रय की जाती है, यह गलत है; ऐसे लोगों से बचें, और अपनी जिम्मेवारी पर ही उनसे औषधि स्वीकार करें, कई व्यक्तियों ने ऐसे लोगों से दवाइयां लीं, और उन्होंने हमें लाभ न होने की शिकायतें भी कीं, इसलिए इन पंक्तियों के माध्यम से उन्हें सावधान कर रहे हैं।
- पत्रिका के दूसरे पृष्ठ पर **''नियम''** स्पष्टता के साथ प्रकाशित है, साधना-सामग्री खरीदते समय, उपयोग करते समय एवं सफलता-असफलता हेतु नियमों के अन्तर्गत ही कार्य करें।
- साधना-सामग्री उपयोग के लिए है, खाने के लिए नहीं, अतः पत्रिका में जिस प्रकार से प्रकाशित है, उसी प्रकार से कार्य करें, अपनी इच्छा से किये गये कार्य के लिए आप स्वयं जिम्मेदार होंगे।
- **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** भारत की एक ऐसी आध्यात्मिक पत्रिका है, जिसने हमेशा नैतिकता को सर्वोपरि रखा है, और इसमें शास्त्रों में या उच्चकोटि के योगियों, संन्यासियों से जो साधनाएं प्राप्त होती हैं, उन्हें प्रकाशित किया जाता है, पर कुछ लोग ईर्ष्याग्रस्त होकर गुरुदेव की या पत्रिका की व्यर्थ ही आलोचना करते रहते हैं, उन्हें ईश्वर सद्बुद्धि दे, और उनको चाहिए कि वे भारतीय विद्याओं को पुनर्जागृत करने में सहयोग दें।
- कई स्थानों पर नकली गुरु, या **''गुरुदेव ने हमें दीक्षा देने हेतु अधिकृत कर रखा है,''** या यज्ञ अथवा शिविर के लिए चन्दे की पुस्तिकाएं छपवा कर धनराशि एकत्र कर रहे हैं, यह गलत है, **''गुरुदेव''** या **''सिद्धाश्रम साधक परिवार''** ने किसी को किसी भी प्रकार से अधिकृत नहीं किया है, कई शिष्यों ने इस प्रकार के ढोंग का डटकर सामना भी किया है, इसके लिए उन्हें साधुवाद एवं धन्यवाद. . . हम स्वच्छ आध्यात्मिक वातावरण निर्माण की ओर अग्रसर हो रहे हैं, और ऐसा ही सहयोग शिष्यों से चाहते हैं, कि वे ढोंगियों के सामने खड़े होकर उन्हें जवाब दें।
- जो दिल्ली, जोधपुर या अन्य शिविरों में दीक्षा दी जाती है, उससे सम्बन्धित धनराशि दिल्ली सिद्धाश्रम साधक परिवार दान या संस्था निर्माण में व्यय करती है. . . दीक्षा लेने का तात्पर्य यह नहीं है, कि आप जिस कार्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, वह कार्य तुरन्त हो ही जाय, अपितु यदि आप इसके बाद श्रद्धा एवं अटूट विश्वास रखते हुए मंत्र-जप करते हैं, तो सफलता के अत्यन्त निकट पहुंच जाते हैं, दीक्षा तो शास्त्रीय आधार है, शाश्वत सत्य है।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के नाम संस्कृत के या जहां से प्राप्त होती है और वे जो नाम बताते हैं, उसे ही पत्रिका में प्रकाशित करते हैं, इस सम्बन्ध में शिकायत या शंका करना व्यर्थ है।
- त्यौहार या पर्व से काफी समय पहले उसके बारे में या सामग्री के बारे में लेख इसलिए प्रकाशित करते हैं, कि समय पर आपको सामग्री प्राप्त हो सके, और ठीक समय पर आप उसका उपयोग कर सकें। इसके लिए आप दिन-रात में कभी भी ०२९१-३२२०९ से सम्पर्क कर सामग्री प्राप्त करने हेतु कह सकते हैं।
- यह पत्रिका आपकी है, आप समय-समय पर इससे सम्बन्धित सुझाव दें, जिससे यह पत्रिका हजारों-लाखों लोगों के कल्याण में सहयोगी हो सके। पूज्य गुरुदेव का आप आशीर्वाद स्वीकार करें। इस पत्रिका में जो परिवर्तन हुआ है वह आपको कैसा लगा, जोधपुर पते पर हमें सूचना दें।
- कृपया जिन लेखकों से लेख मंगावें, वे ही हमें भेजें, बिना मंगाये लेख न भेजें, ऐसे लेखों को न तो हम वापिस भेज सकेंगे, न इस सम्बन्ध में पत्रोत्तर दे सकेंगे। पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर नियमानुसार ही पारिश्रमिक दे सकेंगे। इस सम्बन्ध में व्यर्थ में पत्र व्यवहार न करें।

गुरुदेव का आमंत्रण
आना है तो फिर आना ही है

दीपावली महोत्सव

23-10-1995
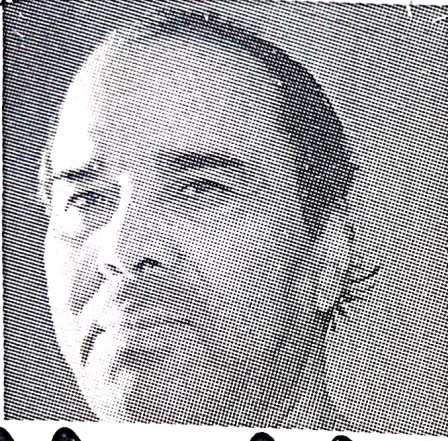
कुबेरकृत
अद्वितीय, गोपनीय, दुर्लभ
एक दिवसीय

निश्चित सिद्धिदात्री महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)

साधना जगत में काल गणना का अपना ही महत्त्व होता है,
जिस प्रकार सही लग्न में किया गया कार्य निश्चित सफलता प्रदान करता है,
उसी प्रकार दीपावली की रात्रि को भी सिंह लग्न में की गई लक्ष्मी की साधना से
सफलता प्राप्त होती ही है. . . और फिर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में किया हुआ
प्रयोग कभी असफल होता ही नहीं, इसीलिए आपको भौतिकता और आध्यात्मिकता की
पूर्णता के लिए सपरिवार इस साधना में भाग लेना ही है–

पूज्य गुरुदेव द्वारा सम्पन्न कराये जाने वाले प्रयोग–

* रात्रि को सिंह लग्न में चारों वेदों से युक्त महालक्ष्मी पूजन
* ऋषियों द्वारा प्रमाणित, श्री सूक्त युक्त लक्ष्मी पूजन
* कनकधारा स्तोत्र से महालक्ष्मी अभिषेक
* इन्द्राणी-लक्ष्मी सिद्धि चेतना

नियम –

- प्रत्येक साधक को २३ अक्टूबर १९९५ की प्रातः शुभ वेला में जोधपुर पहुंच जाना चाहिए, आप वापिस २४ अक्टूबर को प्रातः प्रस्थान कर सकते हैं।
- **शिविर शुल्क मात्र ३३०/-**
- शिविर में बताये गये नियमों का पालन अनिवार्य है।

रजिस्ट्रेशन नं० 55791/93 A.W.H. पोस्टल-डी.एल.नं० 19052/93

दीक्षा विधानं ननु भागधेयम्

दीक्षा से निश्चित ही सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

इस माह में होने वाले विशेष दिवस जिनका महत्व अपने-आप में सर्वोपरि है, इन विशेष दिनों में पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

दिनांक : 12 से 15 अक्टूबर 1995

12.10.95 गणपति सिद्धि दिवस
13.10.95 सर्वदोष निवारण दिवस
14.10.95 ग्रह शांति दिवस
15.10.95 साफल्य दिवस

दिनांक : 28 से 31 अक्टूबर 1995

28.10.95 सर्वार्थ सिद्धि दिवस
29.10.95 सौभाग्यदायक सुकर्मा दिवस
30.10.95 सर्वबाधा शमन दिवस
31.10.95 लक्ष्मी सिद्धि दिवस

दुर्लभ दीक्षाएं

भैरव दीक्षा
यक्षिणी दीक्षा
सम्मोहन दीक्षा
राजयोग दीक्षा
धन्वन्तरी दीक्षा
लक्ष्य भेद दीक्षा
महालक्ष्मी दीक्षा
आत्म-ज्ञान दीक्षा
तंत्र सिद्धि दीक्षा
काल ज्ञान दीक्षा
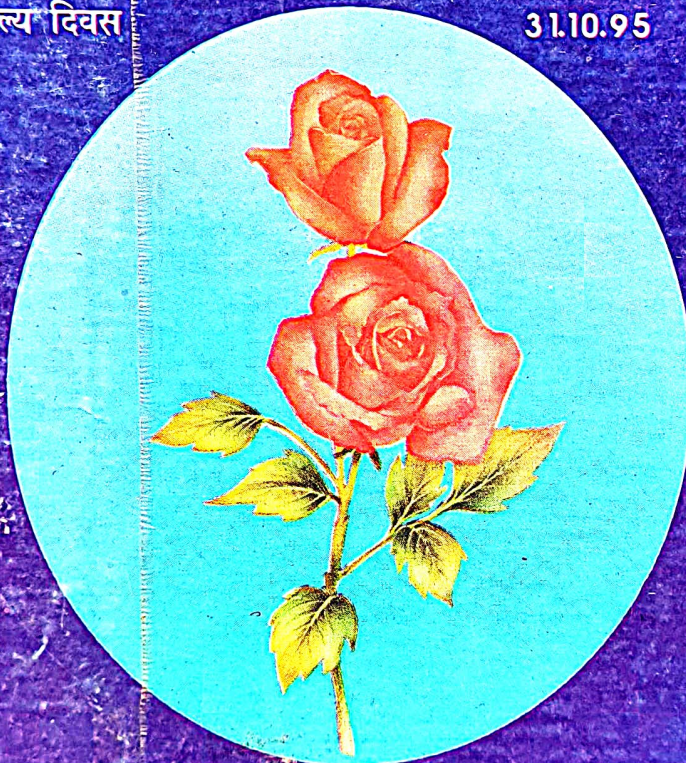
दुर्लभ दीक्षाएं

ध्यान सिद्धि दीक्षा
वैवाहिक योग दीक्षा
अभीष्ट सिद्धि दीक्षा
पूर्ण वीर वैताल दीक्षा
ब्रह्मदर्शन सिद्धि दीक्षा
भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा
मंगली दोष निवारण दीक्षा
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा
आत्म-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा
वशीकरण दीक्षा, सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

अंक 9
वर्ष 15

सम्पर्क :
306, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - 110034
फोन : 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

नोट :
ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।